www.newsparivahan.com

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 224, नई दिल्ली, बुधवार 22 अक्टूबर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

03 धरती के माथे का तिलक गोवर्धन, जहाँ ईश्वर ने विनम्रता सिखाई

06 बेस्ट माइंड्स अपने युवाओं को याद करने के बजाय नवाचार करते हैं

08 गोवर्धन पूजा से श्रद्धा बढ़े, दिखावा नहीं।

भारत में सड़क पर तेज रफ्तार से गाड़ी चलाना नहीं, बल्कि लेन अनुशासनहीनता सबसे बड़ी समस्या है'

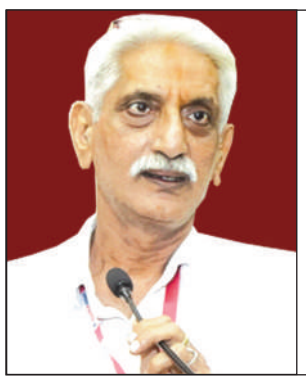

संजय बाटला

नई दिल्ली। ट्रांसपोर्ट ऑपरेटर्स एंड लेबर वेलफेयर एसोसिएशन के अध्यक्ष संजय कुमार बाटला के बाद केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने भी यह बताया की लेन अनुशासनहीनता के कारण भारत में सबसे अधिक सड़क दुर्घटनाएं होती हैं।

केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने लेन अनुशासनहीनता के चिंताजनक मुद्दे की ओर ध्यान आकर्षित किया और इसे भारत में सड़क दुर्घटनाओं का प्रमुख कारण बताया है। लोकसभा में प्रश्नकाल के दौरान बोलते हुए गडकरी ने एक व्यक्तिगत उदाहरण साझा करते हुए बताया कि मुंबई में ट्रैफिक उल्लंघन के लिए उनकी खुद की कार पर भी दो बार जुर्माना लगाया गया था। उन्होंने जोर देकर कहा कि ओवरस्पीडिंग अक्सर सुर्खियां बटोरती है। लेकिन लेन अनुशासन का पालन ना करना भारतीय सड़कों पर एक बहुत गंभीर मुद्दा है। अगर अनुशासित तरीके से ड्राइविंग की जाए तो तेज रफ्तार से गाड़ी चलाना भी खतरनाक नहीं है। जैसा कि कई विकसित देशों में देखा गया है तेज कारें सुरक्षित तरीके से चलती हैं पर लेन के इस्तेमाल जैसे बुनियादी ट्रैफिक मानदंडों की अनदेखी दुर्घटनाओं के जोखिम को बढ़ाती है। गडकरी ने बताया, ₹यह रफ्तार नहीं बल्कि अनुशासनहीन ड्राइविंग के कारण होने वाली अराजकता है जो हमारी सड़कों को खतरनाक बनाती है।₹ भारतीय नागरिकों, खासकर युवा पीढ़ी को ट्रैफिक नियमों का पालन करने के महत्व के बारे में शिक्षित करने की आवश्यकता पर जोर देना सबसे अधिक आवश्यक है। उन्होंने सुझाव दिया कि कम उम्र से ही सड़क अनुशासन को बढ़ावा देने से देश की ड्राइविंग संस्कृति में काफी सुधार हो सकता है। उन्होंने कहा, ₹लंबे समय तक व्यवहार में बदलाव लाने के लिए बच्चों को भी ट्रैफिक नियमों के बारे में जागरूक किया जाना चाहिए। इस समस्या से निपटने के लिए सरकार ने उल्लंघनों की निगरानी और दंड लगाने के लिए सड़कों पर सीसीटीवी कैमरे लगाए हैं। गडकरी ने सांसदों से भी अपने निर्वाचन क्षेत्रों में सुरक्षित ड्राइविंग प्रथाओं की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए उदाहरण पेश करने और जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करने का आह्वान किया। गडकरी की टिप्पणियों में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने सड़क दुर्घटनाओं को कम करने में सांसदों की सामूहिक जिम्मेदारी पर रोशनी डाली। उन्होंने सदन के सदस्यों से लोगों को ट्रैफिक नियमों और लेन अनुशासन के जीवन-रक्षक महत्व के बारे में शिक्षित करने के लिए अपने समुदायों के साथ सक्रिय रूप से जुड़ने का आग्रह किया।

लेन अनुशासनहीनता: भारत में दुर्घटनाओं का प्रमुख कारण लेन अनुशासनहीनता ही है। भारत के खतरनाक सड़क दुर्घटना आंकड़ों में प्राथमिक योगदानकर्ताओं में से एक है। रॉन्ग साइड ड्राइविंग और बिना इंडिकेटर के लेन बदलने जैसी प्रथाएं न सिर्फ नियम तोड़ने वालों को खतरे में डालती हैं बल्कि अन्य सड़क यूजर्स की सुरक्षा को भी खतरे में डालती हैं। यह व्यवहार अनावश्यक अराजकता, देरी और, दुखद रूप से, रोके जा सकने वाली मौतों का कारण बनते हैं।

ट्रांसपोर्ट ऑपरेटर्स एंड लेबर वेलफेयर एसोसिएशन (panjikrit) और टेम्पल्स आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत) मिलकर दिल्ली में लेन ड्राइविंग के अनुशासन के प्रति जागरूकता अभियान शुरू करेगा।

गोवर्धन पूजा, भक्ति की शक्ति और अहंकार की हार

संजय बाटला

सनातन धर्म का हर त्योहार अपने आप में एक अलग महत्व रखता है। हर पर्व के पीछे केवल परंपरा नहीं, बल्कि गहरा आध्यात्मिक संदेश छिपा होता है। ऐसा ही एक पर्व है गोवर्धन पूजा, जो दीपावली के अगले दिन कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को मनाई जाती है। ईश्वर की सच्ची आराधना वही है, जिसमें प्रकृति, जीव और जीवन—तीनों का आदर हो।

कहते हैं, जब वृंदावन में लोग वर्षा के देवता इंद्र की पूजा करने की तैयारी कर रहे थे, तब बाल श्रीकृष्ण ने उन्हें समझाया कि असली पालन तो गोवर्धन पर्वत, गौमाता और खेत-खलिहान करते हैं। गोवर्धन पर्वत के द्वारा ही हमारा जीवन यापन होता है, वही बृजवासियों के असली देवता हैं, इसलिए हमें उन्हीं की पूजा करनी चाहिए। लोगों ने उनकी बात मान ली। ढेर सारे भोग-प्रसाद बनाए गए और स्वयं भगवान श्रीकृष्ण ने गोवर्धन के रूप में सारे भोग प्रसाद को ग्रहण किया। इससे इंद्र क्रोधित हो गए और उन्होंने मूसलाधार वर्षा बरसाई। तब श्रीकृष्ण ने अपनी छोटी उंगली पर गोवर्धन पर्वत उठा लिया और सात दिन तक वृंदावन के लोगों व गौओं की रक्षा की। अंत में इंद्र ने अपनी गलती स्वीकार की और भगवान श्रीकृष्ण के चरणों में नतमस्तक हुए। उसके उपरांत सारे बृजवासियों ने भगवान श्रीकृष्ण के लिए तरह-तरह के पकवान और मिष्ठान बनाकर उनका सत्कार किया, और माता यशोदा ने अपने हाथों से भगवान श्रीकृष्ण को 56 भोग खिलाए। तभी से इस दिन भगवान को 56 भोग लगाने की परंपरा चली आ रही है। सत्य ही है कि भक्ति में विनम्रता और कृतज्ञता सबसे बड़ी शक्ति होती है।

वृंदावन में आज भी यह पर्व बड़ी श्रद्धा और भव्यता से मनाया जाता है। प्रातःकाल से ही मंदिरों में भगवान श्रीकृष्ण की झांकी सजाई जाती है। ठाकुर जी को अन्नकूट का भोग लगाया जाता है, जिसमें सैकड़ों प्रकार के व्यंजन—पूड़ी, खीर, सब्जी, दाल, मिठाइयाँ और फल सजाए जाते हैं। भक्त गोवर्धन महाराज की जय के नारे लगाते हुए परिक्रमा करते हैं। गायों को सजाया जाता है, उनके गले में फूलों की मालाएँ और घुँघरू बाँधे जाते हैं। बच्चे गोबर से बने गोवर्धन पर्वत के चारों ओर दीप जलाते हैं और सब मिलकर आरती करते हैं। चारों ओर भक्ति, संगीत और प्रसाद की सुगंध से वातावरण पवित्र हो उठता है।

गोवर्धन पूजा का असली अर्थ केवल पूजा-पाठ नहीं है, यह प्रकृति के प्रति हमारी कृतज्ञता का उत्सव है। जब हम धरती की, गाय की और अन्न की पूजा करते हैं, तो यह हमें याद दिलाता है कि हमारा जीवन इन्हीं से जुड़ा है। श्रीकृष्ण ने यही संदेश दिया था भक्ति केवल मंदिरों में नहीं, बल्कि कर्म और सेवा में है। शास्त्रों में कहा गया है कि जो व्यक्ति इस दिन गोवर्धन की पूजा करता है और अन्नकूट का दर्शन करता है, उसके घर में सदा समृद्धि बनी रहती है और माता लक्ष्मी का वास होता है। जब मनुष्य अहंकार छोड़कर कृतज्ञ बन जाता है, तब स्वयं भगवान उसके रक्षक बन जाते हैं।

सनातन धर्म की यही विशेषता है यहाँ पूजा केवल देवता की नहीं, बल्कि सृष्टि की होती है। हर पर्व में प्रकृति का महत्व है प्रकृति के साथ तालमेल ही सच्ची पूजा है। हर जीव, हर प्राणी की रक्षा मनुष्य का कर्तव्य है।

गोवर्धन पूजा इसी भावना का सजीव प्रतीक है जहाँ भक्ति में प्रेम है, सेवा में ईश्वर है, और हर दीपक में भगवान के प्रति श्रद्धा की ज्योति जलती है।

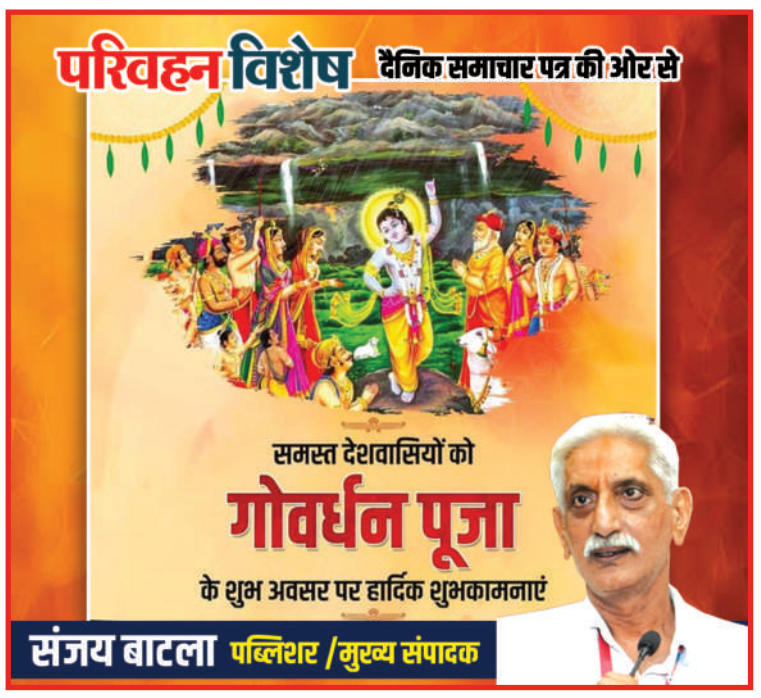

आज मनाया जाएगा गोवर्धन पूजा का पर्व

इस बार अमावस्या तिथि दो दिन रहने से गोवर्धन पूजा कब होगी इसे लेकर लोगों में भ्रम बना हुआ है। चूंकि अमावस्या तिथि 21 अक्टूबर को शाम 5 बजकर 53 मिनट तक रहेगी और कार्तिक प्रतिपदा का आरंभ 21 अक्टूबर, शाम 5 बजकर 54 मिनट पर होगा इसलिए उदया तिथि पर ही पर्व मनाने की परंपरा के अनुसार गोवर्धन पूजा का पर्व 22 अक्टूबर बुधवार को मनाया जाएगा।

दीपावली के अगले दिन गोवर्धन पूजन किया जाता है। इस दिन घर-घर गोबर से गोवर्धन महाराज का चित्र बनाया जाता है और पूजन किया जाता है। गोवर्धन पूजन दिवाली उत्सव का चौथा सबसे बड़ा उत्सव है। यह पर्व श्रीकृष्ण द्वारा अपनी छोटी उंगली से गोवर्धन पर्वत उठाकर ब्रजवासियों की रक्षा करने के रूप में मनाया जाता है। गोवर्धन पूजा हमेशा कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि को की जाती है। इस बार प्रतिपदा तिथि का आरंभ 21 अक्टूबर की शाम से हो रही है। हिंदू धर्म में कुछ पर्व और व्रत ऐसे हैं, जो उदया तिथि में ही मनाए जाते हैं। उदया प्रतिपदा तिथि 22 अक्टूबर को मान्य रहेगी। ऐसे में गोवर्धन पूजा का पर्व 22 अक्टूबर दिन बुधवार को मनाया जाएगा।

कार्तिक प्रतिपदा का आरंभ – 21 अक्टूबर, शाम 5 बजकर 54 मिनट से।

कार्तिक प्रतिपदा का समापन – 22 अक्टूबर, रात 8 बजकर 16 मिनट तक।

गोवर्धन पूजा का मुहूर्त

==========

गोवर्धन पूजा पर अपराह्न 3 बजकर 13 मिनट से शाम 5 बजकर 49 मिनट तक शुभ मुहूर्त बन रहा है। इस तिथि पर स्वाति नक्षत्र और प्रीति योग का शुभ संयोग रहेगा। सूर्य तुला राशि में गोचर करेंगे, जहां चंद्रमा का भी संचार होने वाला है। ऐसे में यह पूजा के लिए सबसे उत्तम मुहूर्त है।

गोवर्धन पूजा का धार्मिक महत्व

==========

गोवर्धन पूजा का संबंध भगवान श्रीकृष्ण द्वारा गोवर्धन पर्वत उठाने की कथा से है। उस दिन इंद्रदेव के अहंकार को तोड़ने के लिए कृष्ण ने अपने छोटे से अंगूठे पर गोवर्धन पर्वत उठा लिया था और पूरे गांव की रक्षा की थी। तब से इस पर्व पर लोग गोवर्धन बनाकर उसकी पूजा करते हैं ताकि जीवन में संकट ना आए और सुख-समृद्धि बनी रहे। गोवर्धन पूजा के दिन अन्नकूट महोत्सव भी मनाया जाता हैं। मंदिरों में सैकड़ों प्रकार के व्यंजन बनाकर श्रीकृष्ण को भोग लगाया जाता है। कहा जाता है कि इस दिन जो व्यक्ति भगवान को अन्न का भोग लगाता है, उसके घर में कभी अन्न की कमी नहीं होती।

भारत के प्राचीन 2552 वीर निर्वाण संवत का कार्तिक शुक्ल एकम से शुभारंभ

22 अक्टूबर 2025
नव वर्ष प्रारंभ सभी को शुभकामनाएं

अजमेर जिले के बड़ली गाँव से मिला शिलालेख वीर निर्वाण संवत के प्रमाण के साथ सबसे प्राचीन ब्राह्मी शिलालेखों में से एक है। पुरातत्ववेत्ता डॉ. गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने 1912 में इसकी खोज की थी, और इसमें 84 वीर संवत लिखा है, जिसका अर्थ है कि यह शिलालेख भगवान महावीर के निर्वाण के 84 वर्ष बाद (ईसा से 443 वर्ष पूर्व) अंकित किया गया था। यह शिलालेख फिलहाल अजमेर के राजपूताना संग्रहालय में संग्रहित है।

भारत की सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराओं में समय की गणना केवल वर्षों या तिथियों से नहीं, बल्कि आध्यात्मिक घटनाओं और महापुरुषों के जीवन संदेशों से जुड़ी रही है। ऐसी ही एक अद्वितीय और प्राचीन परंपरा है — "वीर निर्वाण संवत", जो भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण कल्याणक दिवस से प्रारंभ होती है।

ॐ महावीर स्वामी — अहिंसा और आत्मशुद्धि के प्रतीक

भगवान महावीर स्वामी, जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर, ने संसार को अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य और अस्तेय जैसे जीवन के शाश्वत सिद्धांतों की शिक्षा दी। उनका जीवन मानवता के लिए प्रकाशस्तंभ बन गया, जिसने यह सिखाया कि मोक्ष का मार्ग बाहर नहीं, बल्कि भीतर की आत्मा में छिपा है।

निर्वाण दिवस – आत्मा की परम शांति का पर्व

भगवान महावीर स्वामी को दीपावली की रात्रि में पावापुरी (बिहार) में निर्वाण प्राप्त हुआ था। इसी दिव्य घटना के उपलक्ष्य में जैन समाज और भारतवासी दीपों का पर्व मनाते हैं — जिससे यह संदेश मिलता है कि जब एक ज्योति (महावीर) आत्मा में विलीन होती है, तो अनंत आत्माएँ ज्ञान-प्रकाश से आलोकित होती हैं।

22 अक्टूबर 2025 – 2552वाँ वीर निर्वाण संवत प्रारंभ

इस वर्ष 22 अक्टूबर 2025 से भारत का प्राचीन पंचांग एक नया अध्याय प्रारंभ कर रहा है — 2552वाँ वीर निर्वाण संवत।

यह संवत हमें केवल कालगणना नहीं सिखाता, बल्कि संयम, सत्य और करुणा के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है।

संदेश और महत्त्व

यह संवत भारत की सबसे प्राचीन कालगणना प्रणालियों में से एक है, जो साढ़े ढाई सहस्राब्दी से अधिक पुराना है।

यह हमें याद दिलाता है कि भारत का इतिहास केवल राजाओं और युद्धों का नहीं, बल्कि धर्म, दर्शन और आत्मोद्धार की गौरवशाली यात्रा का भी इतिहास है।

वीर निर्वाण संवत हमें हर वर्ष यह स्मरण कराता है कि सच्चा प्रकाश बाहरी दीपों से नहीं, भीतर के आत्मदीप से प्रस्फुटित होता है।

निष्कर्ष

जब हम 2552वें वीर निर्वाण संवत का स्वागत करें, तो संकल्प लें कि —

> "हम अपने जीवन में भगवान महावीर के सिद्धांतों को उतारें,
> हर जीव में आत्मा देखें, और हर क्षण में करुणा जगाएँ।"

अभिनंदन हो — 2552 वीर निर्वाण संवत का!

जय महावीर!

आकाश जैन
राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी
विश्व जैन संगठन

हर पेड़ फल दे यह जरूरी नहीं, किसी की छाया ही बड़ा सुकून देती है

बोलना सभी को आता है किसी की जुबान बोलती है किसी की नियत बोलती है किसी का समय बोलता है किसी का दब दबा बोलता है और जिंदगी के अन्त में ऊपर वाले के दरबार में इंसान का हर कर्म बोलता है मेरा मानना है कि जब कोई व्यक्ति आत्म प्रशंसा करता है तो यह दूसरों के प्रति असम्मान का कारण बन सक ता है ऐसे व्यक्ति को दूसरों के प्रति सम्मान और सहानुभूति के साथ व्यवहार करना चाहिए साथ ही जब कोई व्यक्ति आत्म प्रशंसा कर ता है तो यह व्यक्ति गत विकास को रोक सकता है ऐसे व्यक्ति को अपने दोषों को स्वीकार करना चाहिए और उन पर काम करना चाहिए इस लिए इससे बचे तभी जीवन जीने में आन्नद आयेगा और जीवन सुखद बनेगा अन्यथा पछ तावे के अलावा कुछ नही मिलेगा अगर हर वक्त प्रसन्न रहना चाहते है तो अपनी बड़ाई करना छोड़ दें अपनी प्रशंसा कोई करें उसे मनसे निकाल दें क्योंकि बड़े तो प्रभु राम है जिस तरह चींटी के अंदर ईश्वर का अंश है वैसे ही हर जीव मे है बड़ा छोटा का भेद करना बन्द कर दे क्यों कि आटा कि रोटी हर इंसान को खाने को मिलती है आपके पास रहन सहन चलने फिरने उठने बैठने कि व्यवस्था अधिक धन होने से अलग किस्म कि हो सकती है परन्तु जीवन मिलने तथा इस जीवन को जाने का रास्ता एक ही है प्रेम की सीख तो घर से ही मिलती है व्यवहार और सामाजिक समझ तो सत्संग से ही मिलती है गोस्वामी जी मानस मे लिखते है बिनु सत्संग विवेक ना होई राम कृपा बिनु सुलभना सोई।

हर बार इंसान ही बुरा नहीं होता कभी कभी वक्त भी बुरा होता है कुछ टूटे धागे कुछ बंधी गांठे कुछ रफू कुछ पै बंद और फिर समझौते के टांके बस यही तो है लिबास ए जिंदगी सुख में हर्षित होना और दुःख में रोना जड़मति अर्थात मूर्ख जन करते हैं परन्तु धीर पुरुष अपने मन में दोनों को समान समझते हैं विवेक पूर्ण विचार कर धीरज रख कर चिंता का त्याग सभी प्रकार से हितकारी होता है छोटी छोटी बातों को दिल से लगा लेने वाले लोग जिंदगी में कभी बड़ा काम नहीं कर सकते।

जीवन की श्रेष्ठता मनुष्य जीवन की सार्थकता तो यही है कि इसे उप योगी बना कर जिया जाए उप भोगी बना कर नहीं जीवन को उप योगी बना कर जीने का अर्थ है कि उस वृक्ष की तरह जीवन जीना जिसका अंकुरित होना पल्लवित होना पुष्पित होना और फलित होना केवल परमार्थ के लिए होता है अपने प्रत्येक कर्म को पर हित की भावना से करना ही जीवन को उपयोगी बनाकर जीना है यदि आपकी अनुप स्थिति दूसरों को रिक्तता का अनुभव कराने वाली है तो कहीं न कहीं उनके लिए आपका जीवन उप योगिता भरा है जीवन को उप भोगी बनाने का सीधा सा अर्थ है कि उन पशुओं की तरह जीवन जीना केवल और केवल उदर पूर्ति ही जिनके जीवन का एक मात्र लक्ष्य है ये बात सदैव स्मरण रहे कि इस दुनिया में जो उप योगी है वही मूल्यवान भी है।

विचार इंसान को महान बनाता है और विचार ही इंसान को नीचे गिराता है व्यक्ति को समझ दार बनाने में संपत्ति की बजाय विपत्ति का योग दान कहीं अधिक होता है जिंदगी की फिल्म का संगीत समझ लीजिए जब तक आपकी जेब में लक्ष्मी कांत है तब तक आप सभी के लिए प्यारे लाल हैं जिसके प्रति द्वेष है उसका तो बाद में नुक सान है लेकिन जिस हृदय में द्वेष है उसकी सुख सरिता को वह पहले सुखा देता है कह दो हर वो बात जो जरुरी है कहना क्योंकि कभी कभी जिन्दगी भी बे वक्त पूरी हो जाती है आपकी गलत बातों पे जो वाह वाह करेंगें वही लोग आपको तबाह करेगें मनुष्य की चाल धन से भी बदलती है और धर्म से भी बदलती है जब धन संपन्न होता है तब अकड़ कर चलता है और जब धर्म संपन्न होता है तो विनम्र होकर चलता है जिंदगी की रेस में जो लोग आपको दौड़ कर नहीं हरा पाते वही आपको तोड़ कर हराने की कोशिश करते हैं गुणों के बल पर ही व्यक्ति सफल हो सकता है लेकिन विनम्रता और विवेक साथ हो तो वह शिखर तक पहुंच सकता है जिसकी भाषा में सभ्यता होती है उसके जीवन में भव्यता होती है कटुता वहाँ उत्पन्न होती है जहाँ हम स्वार्थ से जुड़ते हैं और प्यार वहाँ होता है जहाँ हम नि स्वार्थ भाव से जुड़े रहते हैं हमें खुद में वो बदलाव लाना चाहिए जो बदलाव हम संसार में देखना चाहते है हम बदलेंगे जग बदलेगा अपने आप का करते हुए विश्लेषण अपने पावन-पवित्र-निर्मल चरित्र का निर्माण करते जीवन जिएं हम सभी हर क्षण नया क्षण है हर मिनट नया मिनट है हर घंटा नया घंटा है हर दिन नया दिन है हर सप्ताह नया सप्ताह है इसी तरह हर वर्ष नया वर्ष है इसी सोच के साथ हमें जीना चाहिए।

अपने दुःख अप्रकट रखें दुःख होने से भी दुःख प्रकट करना अधिक पीड़ा दायी होता है दुःख प्रकट करने से दुःख कभी कम नहीं होंगे लेकिन जहाँ तहाँ अपने दुःख को प्रकट करने से दुःख हमारी पीड़ा को और अधिक बढ़ाने वाला ही है जब हम किसी बात की बार बार चर्चा करते हैं तो सुख हो अथवा दुःख उसका प्रभाव हमारी चर्या पर भी अवश्य पड़ता है अपने दुःखों को कभी किसी के मनोरंजन का साधन ना बनने दें महा पुरुषों ने तो उपदेश किया है कि रहि मन निज मन की व्यथा मन ही राखो गोय अर्थात अपने मन की व्यथा को मन में ही छुपा कर रखें क्यों कि उसका समा धान केवल आप से ही निकलेगा आप दुनिया को रो रोकर अपना दुखड़ा सुनायेंगे लेकिन वही लोग हँस हँस कर सबके सामने उसका बखान करेंगे प्रभु पर विश्वास करें और धैर्य रखें सूर्यास्त हुआ है तो शीघ्र ही सूर्योदय भी अवश्य होगा इसलिए साधक को चाहिए कि वह उन सम्पूर्ण इन्द्रियों को वश में करके समा हित चित्त हुआ मेरे परायण होकर ध्यान में बैठे क्यों कि जिस पुरुष की इन्द्रियाँ वश में होती हैं उसी की बुद्धि स्थिर हो जाती है भारतीय संस्कार और संस्कृत पर आधारित शिक्षा अपनी सांस्कृतिक विरासत के मूल्यों को अंगी कार करती है और सम्पूर्ण विकास और ज्ञान को प्रोत्साहित करती है।

कोडक कंपनी याद है...

1997 में, कोडक के पास लगभग 160,000 कर्मचारी थे। और दुनिया की लगभग 85% फोटोग्राफी कोडक कैमरों से की जाती थी। पिछले कुछ सालों में मोबाइल कैमरों के उदय के साथ, कोडक कैमरा कंपनी मार्केट से बाहर हो गई है। यहाँ तक कि कोडक पूरी तरह से दिवालिया हो गई और उसके सभी कर्मचारियों को नौकरी से निकाल दिया गया।

उसी समय कई और मशहूर कंपनियों को अपने आप को रोकना पड़ा। जैसे

#HMT (घड़ी)
#BAJAJ (स्कूटर)
#DYANORA (TV)
#MURPHY (रेडियो)
#NOKIA (मोबाइल)
#RAJDOOT (बाइक)
#AMBASSADOR (कार)

उपरोक्त कंपनियों में से किसी की भी गुणवत्ता खराब नहीं थी। फिर भी ये कंपनियाँ बाहर क्यों हो गईं? क्योंकि वे समय के साथ खुद को बदल नहीं पाईं।

वर्तमान क्षण में खड़े होकर आप शायद यह भी न सोचें कि अगले 10 सालों में दुनिया कितनी बदल सकती है! और आज की 70%-90% नौकरियाँ अगले 10 सालों में पूरी तरह से खत्म हो जाएँगी। हम धीरे-धीरे "चौथी औद्योगिक क्रांति" के दौर में प्रवेश कर रहे हैं।

आज की मशहूर कंपनियों को देखिए-

UBER सिर्फ़ एक सॉफ्टवेयर का नाम है। नहीं, उनके पास अपनी कोई कार नहीं है। फिर भी आज दुनिया की सबसे बड़ी टैक्सी-फ़ेयर कंपनी UBER है।

Airbnb आज दुनिया की सबसे बड़ी होटल कंपनी है। लेकिन मज़ेदार बात यह है कि दुनिया में उनके पास एक भी होटल नहीं है।

इसी तरह, Paytm, Ola Cab, Oyo rooms आदि जैसी अनगिनत कंपनियों के उदाहरण दिए जा सकते हैं।

आज अमेरिका में नए वकीलों के लिए कोई काम नहीं है, क्योंकि IBM Watson नामक एक कानूनी सॉफ्टवेयर किसी भी नए वकील से कहीं बेहतर वकालत कर सकता है। इस प्रकार अगले 10 सालों में लगभग 90% अमेरिकियों के पास कोई नौकरी नहीं होगी। शेष 10% बच जाएँगे। ये 10% विशेषज्ञ होंगे।

नए डॉक्टर भी काम पर जाने के लिए बैठे हैं। Watson सॉफ्टवेयर कैंसर और दूसरी बीमारियों का पता इंसानों से 4 गुना ज़्यादा सटीकता से लगा सकता है। 2030 तक कंप्यूटर इंटेलिजेंस मानव इंटेलिजेंस से आगे निकल जाएगा।

अगले 20 सालों में आज की 90% कारें सड़कों पर नहीं दिखेंगी। बची हुई कारें या तो बिजली से चलेंगी या हाइब्रिड कारें होंगी। सड़कें धीरे-धीरे खाली हो जाएंगी। गैसोलीन की खपत कम हो जाएगी और तेल उत्पादक अरब देश धीरे-धीरे दिवालिया हो जाएंगे।

अगर आपको कार चाहिए तो आपको उबर जैसे किसी सॉफ्टवेयर से कार मांगनी होगी। और जैसे ही आप कार मांगेंगे, आपके दरवाजे के सामने एक पूरी तरह से ड्राइवरलेस कार आकर खड़ी हो जाएगी। अगर आप एक ही कार में कई लोगों के साथ यात्रा करते हैं, तो प्रति व्यक्ति कार का किराया बाइक से भी कम होगा।

बिना ड्राइवर के गाड़ी चलाने से दुर्घटनाओं की संख्या 99% कम हो जाएगी। और इसीलिए कार बीमा बंद हो जाएगा और कार बीमा कंपनियाँ भी बाहर हो जायेंगी।

पृथ्वी पर ड्राइविंग जैसी चीजें अब नहीं बचेंगी। जब 90% वाहन सड़क से गायब हो जाएँगे, तो ट्रैफ़िक पुलिस और पार्किंग कर्मचारियों की ज़रूरत नहीं होगी।

जरा सोचिए, 10 साल पहले भी गली-मोहल्लों में STD बूथ हुआ करते थे। देश में मोबाइल क्रांति के आने के बाद ये सारे STD बूथ बंद होने को मजबूर हो गए। जो बच गए वो मोबाइल रिचार्ज की दुकानें बन गए। फिर मोबाइल रिचार्ज में ऑनलाइन क्रांति आई। लोग घर बैठे ऑनलाइन ही अपने मोबाइल रिचार्ज करने लगे। फिर इन रिचार्ज की दुकानों को बदलना पड़ा। अब ये सिर्फ मोबाइल फोन खरीदने-बेचने और रिपेयर की दुकानें रह गई हैं। लेकिन ये भी बहुत जल्द बदल जाएगा। Amazon, Flipkart से सीधे मोबाइल फोन की बिक्री बढ़ रही है।

पैसे की परिभाषा भी बदल रही है। कभी कैश हुआ करता था लेकिन आज के दौर में ये रूप्लास्टिक मनीर बन गया है। क्रेडिट कार्ड और डेबिट कार्ड का दौर कुछ दिन पहले की बात है। अब वो भी बदल रहा है और मोबाइल वॉलेट का दौर आ रहा है। पेटीएम का बढ़ता बाजार, मोबाइल मनी की एक क्लिक।

इसलिए जमाने के साथ बदलते रहें।

किडनी की स्वच्छता (Kidney Cleansing) क्यों है ज़रूरी?

हमारी किडनी (Kidney) शरीर का एक महत्वपूर्ण अंग है जो खून को फिल्टर करती है, टॉक्सिन्स बाहर निकालती है और शरीर में द्रव (Fluid) का संतुलन बनाए रखती है। आज के समय में प्रदूषण, केमिकल युक्त खाना, अनियमित दिनचर्या और खराब आदतों के कारण किडनी पर अधिक दबाव पड़ता है। इसलिए किडनी की स्वच्छता (Kidney Detox) करना ज़रूरी हो जाता है।

आयुर्वेद में कई ऐसे प्राकृतिक उपाय बताए गए हैं, जिनसे आप घर पर ही किडनी को शुद्ध और स्वस्थ रख सकते हैं।

किडनी के मुख्य कार्य

शरीर से हानिकारक टॉक्सिन और केमिकल बाहर करना।
लाल रक्त कण (RBC) बढ़ाना।
विटामिन D को ग्रहण करने की क्षमता बढ़ाना।
अम्ल और क्षार का संतुलन बनाए रखना।
शरीर में पानी की मात्रा नियंत्रित करना।
मूत्र का निर्माण और उत्सर्जन।
किडनी में गड़बड़ी के कारण
अधिक मसालेदार और तैलीय भोजन।
केमिकल युक्त, पैकेज्ड और प्रोसेस्ड फूड।
मधुमेह (Diabetes)।
उच्च रक्तचाप (High BP)।
अनुवांशिक कारण।
नेफ्राइटिस (Kidney Inflammation)।
UTI (Urinary Tract Infection)।
किडनी या मूत्राशय में चोट या घाव।

किडनी खराब होने के लक्षण

सिर दर्द, पीठ दर्द और जोड़ों में दर्द।
मूत्र में खून आना।
रक्तचाप का असंतुलन।
बार-बार पेशाब आना या मूत्र त्याग में कठिनाई।
आंखों और चेहरे पर सूजन।
आलस और थकान।
मूत्र त्याग के दौरान जलन।
किडनी या यूरिनरी ट्रैक्ट में पथरी।

किडनी स्वच्छता (Kidney Cleansing) के लाभ

किडनी और मूत्रनलिका की पथरी से राहत।
आंखों के नीचे डार्क सर्कल्स कम होना।
शरीर में ऊर्जा और ताजगी।

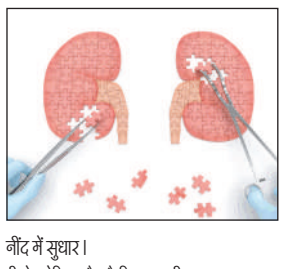

नींद में सुधार।
हीमोग्लोबिन और कैल्शियम की मात्रा बढ़ना।
रक्तचाप का संतुलन।
टॉक्सिन्स बाहर निकल जाना।
मासिक धर्म और गर्भाशय से जुड़ी समस्याओं में मदद।
पौरुष ग्रंथि की समस्याओं में लाभ।
बच्चों में बिस्तर गीला करने की समस्या (Bed Wetting) में राहत।
बेहतर परिणाम के लिए, किडनी स्वच्छता से पहले लीवर डिटॉक्स (Liver Cleansing) करना भी लाभकारी होता है।

किडनी डिटॉक्स के लिए आवश्यक सामग्री

भुट्टे के बाल (Corn Silk) – ताजा 500 ग्राम / सूखे 50 ग्राम।
पार्सली या धनिया (Parsley/Coriander) – 500 ग्राम।
तरबूज के बीज (Watermelon Seeds) – 100 ग्राम।
एक समय पर केवल एक सामग्री का प्रयोग करें। अगली बार दूसरी सामग्री का प्रयोग कर सकते हैं।

किडनी स्वच्छ करने की विधि (Kidney Detox Method)

एक लीटर पानी में भुट्टे के बाल डालकर 10 मिनट उबालें।
पानी छानकर अलग रखें और बालों को फिर से ताजे पानी में डालकर 10 मिनट उबालें।
यह प्रक्रिया 3–4 बार दोहराएँ।
तैयार काढ़े को ठंडा करके छान लें और दिन में 3–4 बार पिएँ।
इसी तरह पार्सली या तरबूज के बीज का काढ़ा भी बना सकते हैं।
प्रयोग के बाद अगर हल्की उल्टी या दर्द महसूस हो, तो घबराएँ नहीं। यह सामान्य है और कुछ समय में ठीक हो जाता है।

यदि तीव्रता में खाते हैं खाना, तो हो सकते हैं मोटापे का शिकार

1. धीरे-धीरे और अच्छी तरह से चबाकर खाने से भोजन में लार अच्छी तरह मिल जाती है, जिससे भोजन को पचाना आसान हो जाता है। इससे आपका मेटाबॉलिज्म भी सही रहता है।

2. माना जाता है कि डायबिटीज के खतरे को कम करने के लिए भी भोजन को धीरे-धीरे चबाकर खाना चाहिए। इससे खाना तो ठीक से पचता ही है साथ ही ग्लकोज भी ठीक प्रकार से टूट कर शरीर को ऊर्जा प्रदान करता है।

3. धीरे-धीरे और चबाकर खाने से पेट से जुड़ी कई समस्याएं खत्म हो जाती हैं, जैसे कब्ज व गैस आदि। धीरे-धीरे खाने से मन भी शांत रहता है और छोटी-छोटी बातों पर चिड़चिड़ाना या गुस्सा आना भी कम हो जाता है।

4. धीरे-धीरे, चबाकर खाने से भोजन करने में समय लगता है और आप ज्यादा खाने से बच जाते हैं, जिससे मोटापे जैसे परेशानी से भी बचाव होने में मदद मिलती है।

जीवन सार्थकता

इस ब्रह्माण्ड में एक बहुत बड़ा नियम काम करता है, यदि हम किसी को धोखा भी देते हैं तो आवश्यक नही के वही आदमी हमको पलटकर धोखा देगा, हो सकता है उसकी इतनी सामर्थ्य न हो। पर अस्तित्व इसको नही छोड़ता किसी दूसरे के द्धारा हमको धोखा मिलेगा लेकिन मिलेगा अवश्य, जो हम दूसरों को देंगें वही लौटकर आएगा फिर चाहे वो आदर हो, सम्मान हो, धोखा हो, कुछ भी हो

किसी ने हँसाया, किसी ने रुलाया, किसी ने अपनाया, किसी ने ठुकराया, बहुत कुछ मिला, बहुत कुछ गंवाया। कुछ अपनों से सीखा, कुछ जीवन ने सिखाया! अब देखो! स्वयं बोलो तो मीठा, सामने वाला बोले तो कड़वा, यही तो झूठ का स्वाद है

अनुशासन का अर्थ है अपने भीतर एक व्यवस्था निर्मित करना। पीड़ा तब नहीं होती जब कोई संबंध टूटता है वास्तविक पीड़ा तब होती है जब संबंध बना रहता है पर जुड़ाव मर जाता है। सबकी नकल हो सकती है लेकिन चरित्र, व्यवहार, संस्कार और ज्ञान की नकल नहीं हो सकती। भले लोगों की संगति से सदा भलाई ही मिलती हैं क्योंकि जब हवा फूलो से होकर बहती है तो वह भी सुगंधित हो जाती हैं

!!!Life is Not So Hard. But Our Thoughts, Our Doings make it Harder!!!

आत्मरक्षा में धर्मयुद्ध करना मनुष्य का परम धर्म है

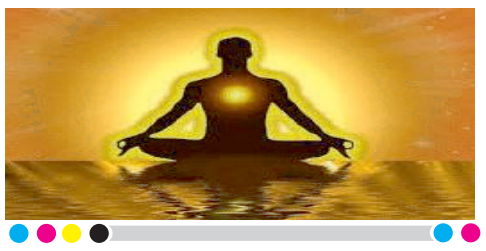

"अन्नकूट : अन्नदान की परंपरा, राम-राम : आत्मीयता का संदेश"

सुनील कुमार महला

हर वर्ष दीपावली आती है, उजियारा लाती है। दीपकों की रौशनी हर दिल में नई उम्मीद जगाती है।जित देखो तित दीपों की पंक्तियां सजतीं हैं।इन दीपों की सुंदर आवलियां हर तरफ हवाओं में स्नेह, खुशियां, उल्लास, उमंग बिखेरती हैं। धन, वैभव, मिठास का उत्सव बन जाती है, पर सबसे बड़ा उपहार 'राम-राम' कहलाती है। 'राम-राम' का अभिवादन प्रेम का संदेश दे जाता है, सच तो यह है कि हर बार दीपावली आती है, पर 'राम-राम' रह जाता है। वास्तव में, 'राम' दो अक्षर का नाम, कोई साधारण नाम नहीं है, बल्कि इसके पीछे कई बड़े-बड़े और गूढ़ अर्थ छिपे हुए हैं। इसीलिए प्रायः यह कहा भी जाता है कि 'राम से बड़ा राम का नाम।' हिंदू धर्म में राम को केवल एक नाम नहीं, बल्कि एक महामंत्र माना गया है, जिसका जाप करने से व्यक्ति को समस्त दुखों से मुक्ति मिल सकती है। 'राम' नाम का यदि संधि विच्छेद किया जाए तो इस प्रकार अर्थ निकलता है - 'र+आ+म'। मतलब 'र' से 'रसातल', 'आ' से 'आकाश' तथा 'म' से 'मृत्यु लोक।' अर्थात जो पाताल, आकाश और धरती का स्वामी है वही राम है। वहीं संस्कृत की दृष्टि से देखा जाए तो, रम्धातु में घम प्रत्यय जोड़कर राम बना है। यहां रम्का अर्थ है रमण, रमना या निहित होना, निवास करना और घम का अर्थ है ब्रह्माण का खाली स्थान। इस प्रकार राम का अर्थ पूरे ब्रह्मांड में निहित या रमा हुआ तत्व अर्थात स्वयं ब्रह्म। वैसे 'राम' शब्द के अर्थ की यदि हम यहां पर बात करें तो संस्कृत में 'राम' (रामः) शब्द धातु 'रम्' से बना है, जिसका अर्थ होता है-'आनंद देना, विश्राम देना, हर्ष प्रदान करना।' अर्थात्जो स्वयं आनंदस्वरूप है और जो दूसरों को भी

आनंद प्रदान करता है, वही 'राम' है। इसलिए भगवान राम को आनंद, धर्म, मर्यादा और सत्य के प्रतीक माना गया है। 'राम' नाम ब्रह्म का प्रतीक भी है-'रा' का मतलब अग्नि (ऊर्जा) तथा 'म' का मतलब चंद्र (शीतलता) से है। इन दोनों का मेल दर्शाता है- संतुलित जीवन। उनका पूरा नाम 'रामचंद्र' है-जहां 'चंद्र' का अर्थ है- 'शीतलता, सौम्यता और प्रकाश देने वाला।' इस प्रकार 'रामचंद्र' का अर्थ हुआ-'जो सबको शीतलता, शांति और सुख प्रदान करे।' 'राम' नाम तीन कालों में पूर्ण है। 'रा' अक्षर पापों का नाश करता है, 'म' अक्षर मोक्ष का मार्ग खोलता है। इसीलिए रामनाम को 'तारक मंत्र' कहा गया है-जो जीवन के पार ले जाता है। राम, विष्णु का अवतार कहे गए हैं, लेकिन वे पूर्ण मानव रूप में रहे और उन्होंने कभी चमत्कार से जीवन नहीं चलाया। यह दिखाने के लिए कि मर्यादा और धर्म के बल पर भी ईश्वरत्व पाया जा सकता है। बहुत कम लोग यह बात जानते होंगे कि राम का जन्म 'नवमी' को और मरण (जलसमाधि) भी नवमी को हुआ। यानी वे नवमी तिथि से आरंभ होकर उसी तिथि में लीन हुए- यह अद्भुत संयोग है। यह भी एक तथ्य है कि वाल्मीकि रामायण में कहीं भी 'जय श्री राम' शब्द नहीं आता। यह नारा बाद में भक्ति परंपरा (विशेषतः तुलसीदासजी की रामचरितमानस) से प्रसिद्ध हुआ। भगवान राम ने किसी से घृणा नहीं की। उन्होंने रावण जैसे शत्रु का भी सम्मान किया, और उसके मरण के बाद लक्ष्मण को कहा-'जाओ, रावण से ज्ञान लो-अब वह मृत्यु के समीप है, सत्य बोलेगा।' राम का राज्य ('रामराज्य') केवल धार्मिक शासन नहीं था, बल्कि लोककल्याण का आदर्श प्रशासन था-जहाँ कोई दुखी नहीं था, कोई झूठ नहीं बोलता था, और सबको न्याय समान मिलता था। पाठकों को बताता चलूं कि रामनाम का उल्लेख केवल भारत में नहीं, बल्कि थाईलैंड, इंडोनेशिया, कंबोडिया, लाओस आदि देशों की संस्कृति और साहित्य में भी मिलता है। संस्कृत में कहा गया है -'रमन्ते सर्वत्र इति रामः।'शास्त्रों में निहित एक श्लोक के अनुसार, 'रमन्ते योगिनः अस्मिन सा रामं उच्यते।' जिसका अर्थ है कि योगी ध्यान में जिस शून्य में रमते हैं उसे राम कहते हैं।कई विद्वानों ने राम नाम का अर्थ 'मनोज्ञ' भी माना है। यहां 'मनोज्ञ' का अर्थ है-'जो मन को जानने वाला हो।' हमारे यहां दीपावली पर रामा-श्यामा की परंपरा रही है, जो आज भी कायम है। वास्तव में, दीपावली के दूसरे दिन, विशेषकर अन्नकूट के दिन, लोगों के घर-घर जाकर 'राम-राम' कहना एक सुंदर परंपरा, हमारा रीति-रिवाज है।यह केवल अभिवादन मात्र ही नहीं है, बल्कि आध्यात्मिक भाव से भरा हुआ संबोधन है। 'राम' का अर्थ है-जो आनंद, शांति और मर्यादा का स्रोत है। जब हम 'राम-राम' कहते हैं, तो वास्तव में हम एक-दूसरे को शांति, प्रेम और पवित्रता का आशीर्वाद देते हैं। अन्नकूट का पर्व और 'राम-राम' की परंपरा दोनों सामूहिक सौहार्द और साझा संस्कृति के प्रतीक हैं।इस दिन गाँवों और कस्बों में लोग एक-दूसरे के घर जाकर 'राम-राम' कहते हैं, भोजन ग्रहण करते हैं और स्नेह का आदान-प्रदान करते हैं। दीपावली दिखावे से दूर, सादगी और आत्मीयता से जुड़ा त्योहार है।अन्नकूट हमें यह सिखाता है कि भोजन बाँटने में आनंद है। वहीं पर, 'राम-राम' सिखाता है-मिलजुलकर रहने में ही सच्ची दीपावली है।राम नाम आत्मीयता का प्रतीक है। 'राम-राम' कहना भारतीय संस्कृति में शुभकामना का सबसे पवित्र तरीका माना गया है, जो मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम के गुणों-सत्य, धर्म, और सद्भाव की प्रेरणा देता है।आपस में एक दूसरे को राम-राम कहने की यह परंपरा हमारे समाज में एकता और स्नेह का संदेश फैलाती थी। आज के डिजिटल युग में जब लोग मोबाइल पर शुभकामनाएं भेजकर औपचारिकता निभा लेते हैं, लेकिन दीपावली के दूसरे दिन 'राम-राम' कहने की यह परंपरा हमें याद दिलाती है कि सच्चा त्योहार आमने-सामने मिलने, मुस्कुराने और अपनापन बांटने में है। दीपावली के दूसरे दिन हर गली से 'राम-राम' की गूंज एक नई ऊर्जा और सामाजिक समरसता का संचार करती है।दीपावली की यही सच्ची भावना है-दीपों की तरह दिलों को भी रौशन करना। अंत में यही कहूंगा कि 'दीप जलाएं, दिल मिलाएं-राम नाम से रिश्ते सजाएं।'

पर्व विशेष : गोवर्धन पूजा : धरती के माथे का तिलक गोवर्धन, जहाँ ईश्वर ने विनम्रता सिखाई

उमेश कुमार साहू

भारतीय संस्कृति में पर्व केवल तिथियों के अनुसार मनाए जाने वाले उत्सव नहीं, बल्कि जीवन और प्रकृति के संतुलन को समझाने वाले अध्याय हैं। ऐसा ही एक दिव्य पर्व है - गोवर्धन पूजा, जिसे अन्नकूट भी कहा जाता है। यह दीपावली के अगले दिन मनाया जाता है, जब सम्पूर्ण व्रज भूमि में श्रद्धा, भक्ति और उत्साह का अद्भुत संगम दिखाई देता है। परंतु इस पर्व का रहस्य केवल पूजा या परंपरा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानव-जीवन के अहंकार, विनम्रता, प्रकृति और भगवान के साथ सामंजस्य का गूढ़ संदेश देता है।

अहंकार के गर्व को तोड़ने वाली लीला

प्राचीन ग्रंथों के अनुसार, जब इंद्र के मन में अपनी देवत्व-शक्ति का अहंकार अत्यधिक बढ़ गया, तो उन्होंने वर्षा के नियंत्रण को अपनी व्यक्तिगत सत्ता समझ लिया। वे भूल गए कि वर्षा भी उसी परम ब्रह्म की व्यवस्था का एक अंश है। उसी समय बालरूप श्रीकृष्ण ने व्रजवासियों को समझाया कि "हम सबका पोषण इंद्र नहीं, प्रकृति करती है - यह गोवर्धन पर्वत, यह गायें, यह वन-भूमि।"

इंद्र-यज्ञ को रोककर उन्होंने व्रजवासियों से कहा कि वे इस पर्वत का पूजन करें, क्योंकि यह हमारी अन्नदात्री धरती का प्रतीक है। जब इंद्र को यह बात अहंकारजन्य लगी, तो उन्होंने प्रलयकारी वर्षा से गोकुल को डुबाने का प्रयास किया। परंतु वही बालक श्रीकृष्ण सात दिनों तक अपनी कनिष्ठा अंगुली पर गोवर्धन पर्वत उठाए खड़े रहे, और समस्त व्रज की रक्षा की।

यह केवल चमत्कार नहीं था, बल्कि एक प्रतीकात्मक शिक्षा थी - जिसके भीतर श्रद्धा और करुणा का बल हो, उसके लिए प्रकृति भी सहायक बन जाती है।

गोवर्धन की दिव्यता और प्रतीकात्मकता

गोवर्धन केवल एक पर्वत नहीं, बल्कि जीवित चेतना का प्रतीक माना गया है। यह पर्वत धरती, जल, वायु और जीवन के

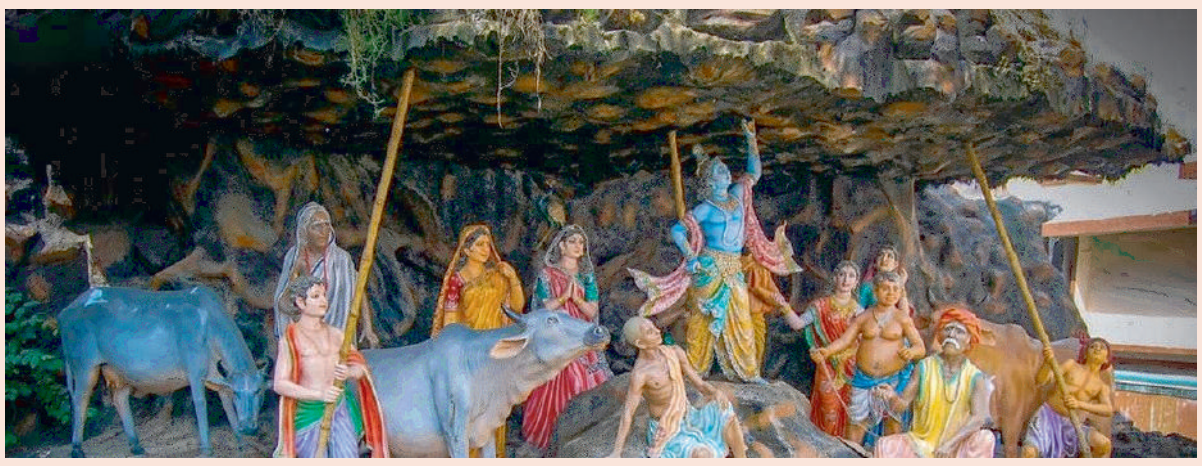

संरक्षण का साक्षात प्रतीक है। पुराणों में कहा गया है कि श्रीकृष्ण ने स्वयं को गोवर्धन के रूप में प्रकट कर यह दर्शाया कि ईश्वर प्रकृति में ही बसते हैं।

गोवर्धन पूजा का अर्थ केवल पहाड़ की आराधना नहीं है, बल्कि प्रकृति के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना है। यह पर्व हमें यह स्मरण कराता है कि मनुष्य का अस्तित्व पृथ्वी और पर्यावरण के संरक्षण से ही संभव है। जब हम गोवर्धन की पूजा करते हैं, तो वस्तुतः हम अपने अन्न, जल, पशु, वनस्पति और पर्यावरण का सम्मान करते हैं।

अन्नकूट का दार्शनिक अर्थ

गोवर्धन पूजा के दिन व्रजवासी तरह-तरह के अन्न और पकवान बनाकर उन्हें पर्वत के प्रतीक रूप में सजाते हैं, इसे अन्नकूट कहा जाता है। यह केवल भोग नहीं, बल्कि ₹अन्न ही ब्रह्म है₹ की वेदवाणी का प्रत्यक्ष प्रदर्शन है। इस दिन मनुष्य अपने श्रम और प्रकृति की देन के प्रति आभार प्रकट करता है।

अन्नकूट यह सिखाता है कि समृद्धि तब तक अर्थहीन है जब तक उसमें बाँटने की भावना न हो। श्रीकृष्ण ने जब सबके साथ बैठकर अन्न का सेवन किया, तो यह सामाजिक समरसता और समानता का अद्भुत उदाहरण बना।

विनम्रता का पाठ

इंद्र का अहंकार तब शांत हुआ जब उन्होंने देखा कि जिस 'बालक' को वे साधारण मानव समझते थे, वही परमात्मा स्वयं हैं। वे पश्चाताप से भर उठे और श्रीकृष्ण के चरणों में नतमस्तक हो गए। इस क्षण में देवता से भी बड़ा दर्शन छिपा है - जिस क्षण अहंकार मिटता है, वहीं सच्चा देवत्व प्रकट होता है।

आज जब मानव अपने विज्ञान, सत्ता और संपत्ति के बल पर स्वयं को सर्वश्रेष्ठ मानने लगा है, तब गोवर्धन लीला यह याद दिलाती है कि अहंकार चाहे देवों में भी क्यों न हो, उसका पतन निश्चित है।

गोवर्धन पूजा, प्रकृति, पर्वत और भक्ति का उत्सव

डॉ मुश्ताक अहमद शाह

गोवर्धन पूजा भारतीय संस्कृति का वह पावन पर्व है जो मनुष्य और प्रकृति के गहरे संबंध की अभिव्यक्ति है। दीपावली के अगले दिन कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को यह उत्सव अन्नकूट पर्व के रूप में मनाया जाता है। पौराणिक मान्यता के अनुसार द्वापर युग में जब इंद्र देव के अहंकार से ब्रजभूमि में भीषण वर्षा होने लगी, तब भगवान श्रीकृष्ण ने अपने बाल स्वरूप में अपनी छोटी उंगली पर गोवर्धन पर्वत को सात दिनों तक उठाकर ब्रजवासियों की रक्षा की थी। उसके पश्चात ब्रजवासियों ने इंद्र की पूजा छोड़कर गोवर्धन पर्वत और गौ माता की पूजा आरम्भ की, इसी घटनाक्रम की स्मृति में यह पर्व प्रतिवर्ष बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। यह पर्व केवल धार्मिक ही नहीं, बल्कि प्राकृतिक और सामाजिक चेतना का प्रतीक भी है क्योंकि इसमें भूमि, अन्न, जल, गौ और वृक्षों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की जाती है जो हमारे जीवन के मूल स्तंभ हैं। इस दिन लोग प्रातःकाल स्नान करके घर-आँगन की सफाई करते हैं, फिर गाय के गोबर या मिट्टी से गोवर्धन पर्वत की आकृति बनाकर उसे दीपों, पुष्पों और रंगों से सजाते हैं। इसके बाद भगवान श्रीकृष्ण, गोवर्धन पर्वत और गायों की पूजा की जाती है तथा अन्नकूट के रूप में छप्पन भोग अर्पण किए जाते हैं जिनमें पूड़ी, खीर, मिठाइयाँ, दालें और अनेक व्यंजन सम्मिलित होते हैं। पूजा उपरांत इस प्रसाद को परिवार, ब्राह्मणों और

निर्धनों में बांटा जाता है जिससे समाज में सौहार्द और समता का भाव प्रकट होता है। धार्मिक ग्रंथों में इस पर्व का उल्लेख इस रूप में मिलता है कि यह उत्सव अन्न के प्रति आभार का प्रतीक है क्योंकि अन्न ही जीवन का आधार है। कृषि प्रधान देश भारत में यह पर्व किसानों, पशुपालकों और आम जनमानस के लिए विशेष महत्व रखता है। गोवर्धन पूजा का एक अन्य नाम अन्नकूट भी है, जिसका अर्थ होता है भोजन का पर्वत, अर्थात उस अन्न का पर्व जिसके माध्यम से भगवान को प्रसन्न किया जाता है। इस दिन गौ पूजा का भी अत्यंत महत्व है। शास्त्रों में उल्लेख है कि गाय देवी लक्ष्मी का स्वरूप मानी जाती हैं और इनके स्पर्श से पापों का नाश होता है। गोधन के बिना जीवन अधूरा है, इसलिए इस पर्व को गोधन पूजन भी कहा जाता है। पर्यावरणीय दृष्टि से भी यह पर्व अत्यंत उपयोगी है क्योंकि यह हमें प्रकृति संरक्षण और पशुधन संवर्धन का संदेश देता है। हिन्दू परंपरा में गाय का गोबर पवित्र माना गया है और इसी से गोवर्धन पर्वत का प्रतीक बनाया जाता है। इससे धार्मिक आस्था के साथ स्वच्छता और पर्यावरण संतुलन की भावना भी जुड़ी है। यही कारण है कि गोवर्धन पूजा केवल पूजा-पाठ का कार्य नहीं बल्कि धरती, जल, पौधों, पशुओं और मनुष्य के बीच पारस्परिक सम्मान और संतुलन का उत्सव है। यह पर्व यह संदेश देता है कि सच्ची भक्ति केवल देवता की आराधना में नहीं बल्कि प्रकृति के प्रति आभार में निहित है। जब मनुष्य प्रकृति के साथ सामंजस्य रखेगा तभी समृद्धि, सुख और शांति संभव है। भारतीय संस्कृति में गोवर्धन पूजा इस विश्वास का जीवंत प्रतीक है कि जहाँ अन्न, गाय, भूमि और प्रकृति की आराधना होती है, वहीं भक्ति, दयालुता और सच्ची समृद्धि का विकास हो सकता है।

गायों की पूजा का त्योंहार है गोवर्धन पूजा

रमेश सर्राफ धमोरा

गोवर्धन पूजा एक प्रमुख त्योहार है। लोग इसे अन्नकूट के नाम से भी जानते हैं। इस पर्व की अपनी मान्यता और लोककथा है। इस त्यौहार का भारतीय लोकजीवन में काफी महत्व है। इस पर्व में प्रकृति के साथ मानव का सीधा सम्बन्ध दिखाई देता है। भगवान श्रीकृष्ण ने आज ही के दिन इन्द्र का मानमर्दन कर गिरिराज पूजन किया था। कबीर दास जी कहते हैः

कबीर गोवर्धन कृष्ण जी उठाया, द्रोणागिरि हनुमंत।
शेष नाग सब सृष्टी उठाई, इनमें को भगवंत।।

इस दिन मन्दिरों में अन्नकूट किया जाता है। अन्नकूट एक प्रकार से सामूहिक भोज का आयोजन है जिसमें पूरा परिवार एक जगह बनाई गई रसोई से भोजन करता है। इस दिन चावल, बाजरा, कढ़ी, साबुत मूंग सभी सब्जियां एक जगह मिलाकर बनाई जाती हैं। मंदिरों में भी अन्नकूट बनाकर प्रसाद के रूप में बांटा जाता है। सायंकाल गोबर के गोवर्धन बनाकर पूजा की जाती है।

अन्नकूट में चंद्र-दर्शन अशुभ माना जाता है। यदि प्रतिपदा में द्वितीया हो तो अन्नकूट अमावस्या को मनाया जाता है। इस दिन सन्ध्या के समय दैत्यराज बलि का पूजन भी किया जाता है। गोवर्धन गिरि भगवान के रूप में माने जाते हैं और इस दिन उनकी पूजा अपने घर में करने से धन, धान्य, संतान और गोरस की वृद्धि होती है। आज का दिन तीन उत्सवों का संगम होता है। इस दिन दस्तकार और कल-कारखानों में कार्य करने वाले कारीगर भगवान विश्वकर्मा की पूजा भी करते हैं। इस दिन सभी कल-कारखाने तो पूर्णतः बंद रहते हैं। घर पर कुटीर उद्योग चलाने वाले कारीगर भी काम नहीं करते। भगवान विश्वकर्मा और मशीनों का दोपहर के समय पूजन किया जाता है।

गोवर्धन पूजा में गोधन यानी गायों की पूजा की जाती है। शास्त्रों में बताया गया है कि गाय उसी प्रकार पवित्र होती जैसे नदियों में गंगा। गाय को देवी लक्ष्मी का स्वरूप भी कहा गया है। देवी लक्ष्मी जिस प्रकार सुख समृद्धि प्रदान करती हैं उसी प्रकार गौ माता भी अपने दूध से स्वास्थ्य रूपी धन प्रदान करती हैं। इनका बछड़ा खेतों में हल जोतकर अनाज उगाता है। इस तरह गौ सम्पूर्ण मानव जाती के लिए पूजनीय और आदरणीय है। गौ के प्रति श्रद्धा प्रकट करने के लिए ही कार्तिक शुक्ल पक्ष प्रतिपदा के दिन गोर्वधन की पूजा की जाती है और इसके प्रतीक के रूप में गाय की।

वेदों में इस दिन वरुण, इन्द्र, अग्नि आदि देवताओं की पूजा का विधान है। इसी दिन बलि पूजा, गोवर्धन पूजा होती हैं। इस दिन गाय-बैल आदि पशुओं को स्नान कराकर, फूल माला, धूप, चंदन आदि से उनका पूजन किया जाता है। गायों को मिठाई खिलाकर उनकी आरती उतारी जाती है। यह ब्रजवासियों का मुख्य त्योहार है। अन्नकूट या गोवर्धन पूजा भगवान कृष्ण के अवतार के बाद द्वापर युग से प्रारम्भ हुई। उस समय लोग इन्द्र भगवान की पूजा करते थे तथा छप्पन प्रकार के भोजन बनाकर तरह-तरह के पकवान व मिठाइयों का भोग लगाया जाता था।

दीपावली के दूसरे दिन सायंकाल गोवर्धन पूजा का विशेष आयोजन होता है। इस दिन प्रातः गाय के गोबर से लेटे हुए पुरुष के रूप में गोवर्धन बनाया जाता है। अनेक स्थानों पर इसके मनुष्याकार बनाकर पुष्पों, लताओं आदि से सजाया जाता है। इनकी नाभि के स्थान पर एक कटोरी या मिट्टी का दीपक रख दिया जाता है। फिर इसमें दूध, दही, गंगाजल, शहद, बताशे आदि पूजा करते समय डाल दिए जाते हैं और बाद में इसे प्रसाद के रूप में बांट देते हैं। शाम को गोवर्धन की पूजा की जाती है। पूजा में धूप, दीप, नैवेद्य, जल, फल, फूल, खील, बताशे आदि का प्रयोग किया जाता है। पूजा के बाद गोवर्धनजी की जय बोलते हुए उनकी सात परिक्रमाएं लगाई जाती हैं। परिक्रमा के समय एक व्यक्ति हाथ में जल का लोटा व अन्य जौ लेकर चलते हैं। जल के लोटे वाला व्यक्ति पानी की धारा गिराता हुआ तथा अन्य जौ बोते हुए परिक्रमा पूरी करते हैं।

महाराष्ट्र में यह दिन बालि प्रतिपदा या बालि पड़वा के रूप में मनाया जाता है। भगवान विष्णु के एक अवतार वामनकी राजा बलि पर विजय और बाद में राजाबलि को पाताल लोक भेजने के कारण इस दिन उनका पुण्य स्मरण किया जाता है। माना जाता है कि भगवान वामन द्वारा दिए गए वरदान के कारण असुर राजा बलि इस दिन पातल लोक से पृथ्वी लोक आता है। अधिकतर गोवर्धन पूजा का दिन गुजराती नव वर्ष के दिन के साथ मिल जाता है जो कि कार्तिक माह की शुक्ल पक्ष के दौरान मनाया जाता है। गोवर्धन पूजा उत्सव गुजराती नव वर्ष के एक दिन पहले मनाया जा सकता है और यह प्रतिपदा तिथि के प्रारम्भ होने के समय पर निर्भर करता है।

गोवर्धन पूजा के सम्बन्ध में एक लोकगाथा प्रचलित है कि देवराज इन्द्र का अभिमान चूर करने हेतु भगवान श्री कृष्ण ने एक लीला रची। एक दिन उन्होंने देखा के सभी बृजवासी उत्तम पकवान बना रहे हैं और किसी पूजा की तैयारी में जुटे। श्री कृष्ण ने यशोदा मैया से प्रश्न किया कि आप लोग किन की पूजा की तैयारी कर रहे हैं। कृष्ण की बातें सुनकर यशोदा मैया बोली हम देवराज इन्द्र की पूजा के लिए अन्नकूट की तैयारी कर रहे हैं। मैया के ऐसा कहने पर श्री कृष्ण बोले मैया हम इन्द्र की पूजा क्यों करते हैं? यशोदा ने कहा वह वर्षा करते हैं जिससे अन्न की पैदावार होती है। उनसे हमारी गायों को चारा मिलता है। भगवान श्री कृष्ण बोले हमें तो गोर्वधन पर्वत की पूजा करनी चाहिए क्योंकि हमारी गाये तो वहीं चरती हैं। इस दृष्टि से गोर्वधन पर्वत ही पूजनीय है और इन्द्र तो कभी दर्शन भी नहीं देते व पूजा न करने पर क्रोधित भी होते हैं। अतः ऐसे अहंकारी की पूजा नहीं करनी चाहिए।

श्री कृष्ण के कहने पर सभी ने इन्द्र के बदले गोवर्धन पर्वत की पूजा की। देवराज इन्द्र ने इसे अपना अपमान समझा और मूसलाधार वर्षा शुरू कर दी। तब श्री कृष्ण ने अपनी कनिष्ठा उंगली पर पूरा गोवर्धन पर्वत उठा लिया और सभी बृजवासियों को उसमें अपने गाय और बछड़े समेत शरण लेने के लिए बुलाया। इन्द्र कृष्ण की यह लीला देखकर और क्रोधित हुए फलतः वर्षा और तेज हो गयी। इन्द्र का मान मर्दन के लिए तब श्री कृष्ण ने सुदर्शन चक्र से कहा कि आप पर्वत के ऊपर रहकर वर्षा की गति को नियत्रित करें और शेषनाग से कहा आप मेड़ बनाकर पानी को पर्वत की ओर आने से रोकें।

इन्द्र लगातार सात दिन तक मूसलाधार वर्षा करते रहे तब उन्हे एहसास हुआ कि उनका मुकाबला करने वाला कोई आम मनुष्य नहीं हो सकता। अतः वे ब्रह्मा जी के पास पहुंचे और सब वृतान्त कह सुनाया। ब्रह्मा जी ने इन्द्र से कहा कि आप जिस कृष्ण की बात कर रहे हैं वह भगवान विष्णु के साक्षात अंश हैं। ब्रह्मा जी के मुख से यह सुनकर इन्द्र अत्यंत लज्जित हुए और श्री कृष्ण से कहा कि प्रभु मैं आपको पहचान न सका। इसलिए अहंकारवश भूल कर बैठा। आप दयालु हैं और कृपालु भी इसलिए मेरी भूल क्षमा करें। इसके पश्चात देवराज इन्द्र ने श्री कृष्ण की पूजा कर उन्हें भोग लगाया।

सातवें दिन श्रीकृष्ण ने गोवर्धन को नीचे रखा और ब्रजवासियों से कहा अब तुम प्रतिवर्ष गोवर्धन पूजा कर अन्नकूट का पर्व मनाया करो। तभी से यह पर्व अन्नकूट के नाम से मनाया जाने लगा। इस पौराणिक घटना के बाद से ही गोवर्धन पूजा की जाने लगी। इस दिन देश के बहुत से प्रदेशों में लोग गोवर्धन पर्वत की पूजा करते हैं। गाय बैल को इस दिन स्नान कराकर उन्हें रंग लगाया जाता है। उनके गले में नई रस्सी डाली जाती है। गाय और बैलों को गुड़ और चावल मिलाकर खिलाया जाता है।

अमित शाह हैं संकटमोचन, संगठन शिल्पी और लौहपुरुष

ललित गर्ग

भारत की राजनीति में कुछ नाम ऐसे होते हैं जो केवल पदों से नहीं, अपने कर्म, दृष्टि, दृढ़ता, संकल्प और राष्ट्रभावना से पहचान पाते हैं। अमित अनिलचंद्र शाह ऐसा ही एक नाम है-संघर्षों में तपे, संगठन के शिल्पी और राष्ट्र की सुरक्षा एवं एकता के प्रहरी। एक प्रभावशाली और कुशल राजनीतिज्ञ के रूप में, अमित शाह का भारतीय राजनीति में एक प्रमुख स्थान है। गृह एवं सहकारिता मंत्री के रूप में उन्होंने भारत की आंतरिक सुरक्षा, सामाजिक एकता और ग्रामीण विकास के क्षेत्रों में जो क्रांतिकारी एवं युगांतकारी कार्य किए हैं, वे उन्हें हमारे समय का 'लौहपुरुष' सिद्ध करते हैं- सरदार वल्लभभाई पटेल की परंपरा के सच्चे उत्तराधिकारी। निश्चित ही शाह एक युगांतरकारी एवं युग-निर्माता लोकनायक हैं। उन्हें अक्सर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का करीबी सहयोगी, कुशल शासक और पार्टी के लिए एक प्रमुख चुनावी रणनीतिकार माना जाता है। एक किशोर के रूप में, वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में शामिल हो गए। यहीं से उनके राजनीतिक सफर की शुरुआत हुई। 1987 में वह भाजपा के युवा मोर्चा के सदस्य बने। गुजरात में नरेंद्र मोदी के मुख्यमंत्री कार्यकाल के दौरान, अमित शाह एक शक्तिशाली नेता के रूप में उभरे। उन्होंने कई महत्वपूर्ण मंत्रालय संभाले, जिनमें गृह, कानून और न्याय और परिवहन शामिल थे।

अमित शाह ने सहकारिता मंत्रालय को मात्र एक विभाग नहीं, बल्कि ग्रामीण भारत के पुनर्जागरण का आंदोलन बना दिया। उनकी दृष्टि में सहकारिता केवल आर्थिक संरचना नहीं, बल्कि 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास' का व्यवहारिक दर्शन है। उन्होंने शक्कर कारखानों से लेकर डेयरी, कृषि-उद्योग, बीज उत्पादन और विपणन तक सहकारिता को एक नई गति दी। देश के पहले राष्ट्रीय सहकारिता नीति मसौदे की तैयारी, पीएसी के डिजिटलीकरण और 200,000 प्राथमिक कृषि साख समितियों को मल्टी-डायमेंशनल मॉडल में बदलने की दिशा में उनका काम ऐतिहासिक है। उनके नेतृत्व में सहकारिता अब आत्मनिर्भर भारत की रीढ़ बन चुकी है, जहाँ किसान केवल उत्पादक नहीं, बल्कि साझेदार हैं। अमित शाह ने सहकारिता को नई भाषा दी-"सहकार से समृद्धि"।

भारत के भीतरी हिस्सों में दशकों से नक्सलवाद ने भय, असुरक्षा और विकासहीनता का माहौल बनाया था। अमित शाह के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने 'समग्र रणनीति' के तहत नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में निर्णायक कार्रवाई की। कानून-व्यवस्था, खुफिया सूचना और स्थानीय विकास के त्रिस्तरीय ढांचे पर आधारित इस नीति ने नक्सलवाद को जड़ों से हिला दिया। आज भारत

के 90 प्रतिशत से अधिक नक्सल क्षेत्र शांति के मार्ग पर लौट रहे हैं, निकट भविष्य में भारत नक्सल मुक्त राष्ट्र बन जायेगा, यह अमित शाह की सूझबूझ, संकल्प और दृढ़ता का परिणाम है। उनका विश्वास रहा-"गोलियों से नहीं, विकास और संवाद से आतंक मिटाया जा सकता है।" उनकी अलग कार्यशैली की झलक अध्यक्ष बनने के बाद से ही पार्टी को दिखने लगी थी। अमित शाह का नाम जम्मू-कश्मीर के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा। उनकी रणनीति और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में अनुच्छेद 370 का हटाया जाना केवल एक संवैधानिक निर्णय नहीं, बल्कि राष्ट्र की अखंडता का संकल्प था। यह उस विभाजनकारी मानसिकता पर अंतिम प्रहार था जिसने वर्षों तक कश्मीर को अलगाव की आग में झोंक रखा था। आज घाटी में तिरंगा गर्व से लहराता है, पर्यटन और निवेश के नए द्वार खुल रहे हैं, और युवाओं में आत्मविश्वास लौट रहा है-यह अमित शाह की निर्भीक राजनीतिक इच्छाशक्ति का परिणाम है। उन्होंने संसद में कहा था-"कश्मीर भारत का मुकुट है, और जब तक इसकी हर घाटी में शांति और विकास नहीं आता, तब तक हमारा प्रयास अधूरा रहेगा।" शाह की कार्यशैली में सबसे अहम है कि किसी चीज को पहले से भांपने की। कश्मीर से 370 हटाने का मामला हो या फिर किसी चुनावी रणनीति की तैयारी, उन्हें अंदाजा हो जाता है कि किस मोहरे को कहां बिठाना है। इसी का असर है कि अनुच्छेद 370 हटाने के बाद अब तक कश्मीर में शांति एवं वहां शांतिपूर्ण चुनाव का होना है तो अयोध्या जैसे सदियों के विवाद का अंत शांतिपूर्ण तरीके से हो जाना है।

गृह मंत्री के रूप में अमित शाह ने देश की सुरक्षा व्यवस्था को नई ऊँचाई दी। आतंकी नेटवर्क के विरुद्ध कड़े कानून, एनआईए की शक्ति में वृद्धि, सीमा सुरक्षा में तकनीकी नवाचार और पुलिस सुधारों की नई पहल-इन सबने भारत की आंतरिक मजबूती को सुदृढ़ किया है। उन्होंने 'शून्य सहनशीलता नीति' को व्यवहार में उतारा। चाहे दिल्ली दंगे हों या सीमा पार आतंकवाद की चुनौती-हर परिस्थिति में उनका निर्णय तेज, संतुलित और राष्ट्रहित में रहा। उनके कार्यकाल में भारत में आंतरिक सुरक्षा का सबसे स्थिर दौर देखा जा रहा है, जहाँ आतंक, नक्सलवाद और अलगाववाद तीनों पर नियंत्रण स्थापित हुआ है। राजनीतिक दृष्टि से अमित शाह को 'मोदी के हनुमान' कहा जाता है, क्योंकि वे न केवल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सबसे विश्वसनीय सहयोगी हैं, बल्कि उनकी दृष्टि को व्यवहार में उतारने वाले कर्मयोद्धा भी हैं। 2014 से 2020 तक, उन्होंने भाजपा के 10वें अध्यक्ष के रूप पार्टी को 70 से अधिक देशों के बराबर सदस्य संख्या वाला विश्व का सबसे बड़ा राजनीतिक संगठन बनाया। 2014 और 2019 के चुनावों में उनकी रणनीति, संगठन और जनसंपर्क ने भाजपा को ऐतिहासिक विजय दिलाई। उनके रणनीतिक कौशल ने पार्टी को सफलता की नई ऊंचाइयों तक पहुँचाया। लेकिन उनकी पहचान राजनीति से परे है-वे राष्ट्रीय एकता के संरक्षक, सुरक्षा के प्रहरी और सहकारिता के संचारक हैं।

अमित शाह ने संगठन के बाद सरकार में भी अपनी कौशल क्षमता का लोहा मनवाया तो जब भी संसदीय इतिहास में भारत के मोदीमय होने की गाथा का वर्णन होगा, उसमें 'चाणक्य नीति' की तरह 'शाह नीति' का जिक्र स्वाभाविक होगा। अमित शाह की यह रणनीति पार्टी नेताओं को भी तब समझ आई जब चुनावों के आधिकारिक पोस्टरों-बैनरों पर भी शाह की तस्वीर नजर नहीं आई, दरअसल वे पूरे चुनाव को मोदीमय करने की 'शाह नीति' थी। इसलिए शाह ने एक स्पष्ट निर्णय लिया कि प्रचार सामग्रियों पर सिर्फ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ही होंगे। आधुनिक राजनीति का चाणक्य कहें या फिर मोदी के भरोसेमंद सारथी, इसी खास सोच की वजह से भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह की यह अमिट पहचान बन चुकी है।

अमित शाह को एक उत्कृष्ट संगठक और अभियान रणनीतिकार माना जाता है। उनके समर्थक उन्हें हिंदू धर्म का महान रक्षक मानते हैं, जबकि उनके आलोचक उन्हें एक धुरवीकरण करने वाली शख्सियत के रूप में देखते हैं। वह अपनी राजनीतिक कुशलता और जमीन से जुड़कर काम करने के लिए जाने जाते हैं। अमित शाह का राजनीतिक करियर उनके रणनीतिक कौशल, संगठन क्षमता और कठोर निर्णय लेने की प्रवृत्ति को दर्शाता है। एक छोटे कार्यकर्ता से लेकर देश के गृह मंत्री तक का उनका सफर भारतीय राजनीति में उनके मजबूत प्रभाव का प्रमाण है। वह भविष्य में भी भारतीय राजनीतिक परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति बने रहने की संभावना है। अमित शाह का व्यक्तित्व सरदार वल्लभभाई पटेल की स्मृति को सजीव करता है। जहाँ पटेल ने रियासतों का विलय किया, वहाँ शाह ने विचारों का एकीकरण किया। जहाँ पटेल ने लौह इच्छाशक्ति से भारत का नक्शा जोड़ा, वहाँ शाह ने अखंड भारत की भावना को राजनीतिक और सामाजिक धरातल पर साकार किया। उनके जीवन का सूत्रवाक्य रहा है-"व्यक्ति नहीं, राष्ट्र सर्वोपरि।" शाह ने राष्ट्रवाद को सर्वोपरि रखा तो 'काम रुके ना, देश झुके ना' के नारे के साथ विकास को भी उसमें जोड़ा। चुनौतियों से जूझने की उनकी छवि ही उन्हें जुझारू और लक्ष्य के प्रति जुनूनी बनाती रही है।

अमित शाह की कार्यशैली अनूठी एवं विलक्षण है, वे जब कोई काम हाथ में लेते हैं तो स्पष्ट लक्ष्य सामने होता है और उसके हिसाब से रणनीति पर काम करते हैं। भले नतीजे पक्ष में आए या खिलाफ, इसकी परवाह नहीं करते। उनका विजन स्पष्ट रहता है और नतीजों के बजाए काम करने पर फोकस रहता है। इसलिए मोदी-शाह की जोड़ी हर चुनाव को युद्ध के रुप में लड़ने के लिए जानी जाती है। शाह का मानना है कि संगठन को हमेशा 24 घंटे 365 दिन गतिशील रखना चाहिए। यह काम वे अपने पांच दशक के राजनीतिक सफर में, वार्ड के बूथ प्रभारी के तौर से करते रहे हैं। गीत-संगीत के शौकीन शाह निदा फाजली के प्रशंसकों में से हैं। खाने-पीने के शौकीन जरुर हैं, लेकिन संयमित और अनुशासित भोजन ही लेते हैं। अमित शाह केवल एक राजनेता नहीं, बल्कि एक युग का नेतृत्व करने वाले कर्मयोगी हैं। उनकी राजनीति में चातुर्य नहीं, दृष्टि है; उनके निर्णयों में कठोरता नहीं, राष्ट्रभक्ति की गहराई है। चाहे सहकारिता का नवजागरण हो, सुरक्षा का सुदृढ़ीकरण या कश्मीर का एकीकरण-हर क्षेत्र में उन्होंने यह सिद्ध किया है कि यदि नीयत सच्ची हो और दृष्टि व्यापक तो कोई भी परिवर्तन असंभव नहीं। भारत के इतिहास में अमित शाह उस विरल श्रेणी के नेता हैं जिनके कार्यों ने राष्ट्र की दिशा बदली है-वास्तव में वे आज के "संकटमोचन, संगठनशिल्पी और लौहपुरुष" हैं।

एक समाज श्रेष्ठ समाज संस्था ने दीपावली की संध्या पर एक दीया शहीदों के नाम से 251 दीये जलाकर शहीदों को श्रद्धांजलि दी

परिवहन विशेष न्यूज

एक समाज श्रेष्ठ समाज संस्था अध्यक्ष योगेन्द्र कुमार साहू मार्गदर्शक पूर्णिमा रजवार के नेतृत्व में संस्था के माध्यम से भारतीय सेना के शहीद जवानों के सम्मान में दीपावली की शुभ संध्या पर एक दीया शहीदों के नाम से संस्था पदाधिकारियों ने हल्द्वानी डीके पार्क में 251 दीये जलाकर भारतीय सेना के शहीद जवानों को श्रद्धासुमन श्रद्धांजलि दी

इस दौरान एक समाज श्रेष्ठ समाज संस्था मार्गदर्शक मीना जोशी सदस्य मनीष साहू ने संयुक्त रूप से कहा की भारतीय सेना के जवान अपनी जान की परवाह न करते हुए भारत एवं भारतवासियों को हमेशा सुरक्षित रखते है क्योंकि भारतीय सेना के जवान हजारों फुट की ऊंचाई पर अपनी हड्डियाँ गलाकर दुश्मनों की हर हरकत पर पैनी निगाह रखते हुए दुश्मनों को मुंहतोड़ जवाब देकर दुश्मनों को संभलने का मौका भी नहीं देते है तब जाकर हम अपने घरों में सुरक्षित रहते है और तब हम अपने सारे त्योहारों को हर्ष उल्लास पूरी खुशी के साथ भयमुक्त होकर मना पाते है इसलिए भारतीय सेना के शहीद जवानों के बलिदान को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता इसीलिए एक समाज श्रेष्ठ समाज संस्था भारतीय सेना के शहीद जवानों के सम्मान में एक दीया शहीदों के नाम से दीपावली पर 251 दीये जलाकर अपने शहीदों को श्रद्धांजलि देकर उनके प्रति श्रद्धा भाव प्रकट कर उनके बलिदान को हमेशा याद रखती है और यह हम सभी भारतीयों का परम कर्तव्य है

इस दौरान शहीदों को श्रद्धांजलि देने में संस्था अध्यक्ष योगेन्द्र कुमार साहू कोषाध्यक्ष बलराम हालदार उपाध्यक्ष लोकेश कुमार साहू समाजसेवी हेमन्त कुमार साहू तरुण सक्सेना मार्गदर्शक पूर्णिमा रजवार अलका टंडन रेनू कांडपाल मीना जोशी सुमन वार्ष्णेय खुशबू जायसवाल मंजू शाह सीमा बत्रा मन्ना परगई पूजा जोशी खुशी नागर मनीष साहू नमन तिवारी इशिका वार्ष्णेय संदीप यादव अमन कुमार सूरज मिस्त्री सुशील राय दीपक कुमार सूरज कुम्हार मुकेश कुमार आदि लोग उपस्थित रहे।

नारीः हर चुनौती को विजय में बदलने वाली शक्ति

नारी तू नारायणी"—यह प्राचीन उक्ति आज के भारत में एक प्रबल सत्य के रूप में जीवंत है। भारतीय नारी अब केवल मिथकों की कथाओं तक सीमित नहीं, बल्कि वास्तविकता की सशक्त रचनाकार है, जो समाज के हर क्षेत्र में नेतृत्व, नवाचार और परिवर्तन की नई इबारत लिख रही है। सड़कों से संसद तक, खेतों से स्टार्टअप्स तक, खेल के मैदानों से साहित्यिक मंचों तक, उनकी यात्रा व्यक्तिगत उपलब्धियों से कहीं बढ़कर है—यह सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक क्रांति का प्रतीक है।

भारतीय राजनीति में महिलाओं का योगदान अब प्रतीकात्मक नहीं, बल्कि प्रभावशाली और दिशा-निर्धारक है। मध्यप्रदेश की सुमित्रा महाजन इसका जीवंत उदाहरण हैं। इंदौर से आठ बार सांसद और 2014 से 2019 तक लोकसभा की पहली पूर्णकालिक महिला अध्यक्ष के रूप में, उन्होंने अपनी सूझबूझ, अनुशासन और सादगी से नेतृत्व का नया प्रतिमान रचा। उनकी कार्यशैली इस बात का प्रमाण है कि महिलाएं न केवल राजनीति में सहभागी हो सकती हैं, बल्कि इसे नई दिशा प्रदान कर सकती हैं। इसी तरह, यशोधरा राजे सिंधिया ने मध्यप्रदेश में खेल, शिक्षा और सामाजिक कल्याण के क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान दिया। ग्वालियर राजघराने की यह बेटी अपनी राजनीतिक यात्रा से सामाजिक सुधार और महिला सशक्तीकरण की प्रेरणा बनीं। उमा भारती, मध्यप्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री और केंद्रीय मंत्री, ने अपनी बेबाकी और गंगा सफाई जैसे अभियानों से पर्यावरण और सामाजिक जागरूकता में महिलाओं की भूमिका को सशक्त किया। राष्ट्रीय मंच पर, इंदिरा गांधी ने भारत को वैश्विक पटल पर स्थापित किया, तो आज निर्मला सीतारमण वित्तमंत्री के रूप में आर्थिक नीतियों को नया आयाम दे रही हैं।

2023 में पारित नारी शक्ति वंदन अधिनियम (महिला आरक्षण बिल) ने संसद और विधानसभाओं में 33% सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित कर एक ऐतिहासिक कदम उठाया। मध्यप्रदेश में पंचायतों और स्थानीय निकायों में लाखों महिलाएं नेतृत्व की बागडोर संभाल रही हैं। वहां की महिला सरपंचों ने शिक्षा, स्वच्छता और बुनियादी ढांचे में सुधार के लिए असाधारण कार्य किए हैं। ये महिलाएं ग्रामीण भारत को सशक्त बना रही हैं, जो सामाजिक निर्णयों में उनकी बढ़ती भागीदारी का जीवंत प्रमाण है।

भारतीय महिलाएं आर्थिक स्वतंत्रता के क्षेत्र में अभूतपूर्व कीर्तिमान रच रही हैं। मध्यप्रदेश में स्वयं सहायता समूहों ने लाखों महिलाओं को आत्मनिर्भरता का मार्ग प्रशस्त किया। मध्यप्रदेश स्टेट लाइवलीहुड फोरम जैसे पहलों ने इन समूहों के माध्यम से महिलाओं को न केवल वित्तीय स्वायत्तता प्रदान की, बल्कि सामुदायिक नेतृत्व को भी प्रज्वलित किया, जो ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नया बल दे रहा है।

राष्ट्रीय मंच पर, किरण मजूमदार-शॉ ने बायोकॉन के जरिए जैव-प्रौद्योगिकी में क्रांति लाकर भारत को वैश्विक स्तर पर अग्रणी बनाया। फाल्गुनी नायर ने नायका को सौंदर्य और ई-कॉमर्स का पर्याय बनाया, तो विनीता सिंह ने शुगर कॉस्मेटिक्स के जरिए सौंदर्य उद्योग में नवाचार की मिसाल कायम की। स्टार्टअप इंडिया और डिजिटल इंडिया जैसे सरकारी अभियानों ने महिलाओं को तकनीक और उद्यमिता के क्षेत्र में नई ऊंचाइयां छूने को प्रेरित किया। ये महिलाएं न केवल आर्थिक प्रगति की वाहक हैं, बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरण जैसे सामाजिक सरोकारों को भी सशक्त कर रही हैं।

महिलाओं का नेतृत्व राजनीति और उद्यमिता तक सीमित नहीं। खेल के मैदान में, पी.वी. सिंधु ने बैडमिंटन में ओलंपिक पदक जीतकर भारत का मान बढ़ाया, तो मैरी कॉम ने मुक्केबाजी में विश्व स्तर पर अपनी अमिट छाप छोड़ी। कला और साहित्य में, लता मंगेशकर की स्वर-लहरियों ने भारतीय संगीत को अमरता दी, जबकि अमृता प्रीतम ने अपनी लेखनी से सामाजिक रूढ़ियों को तोड़ा। मध्यप्रदेश की मेधा पाटकर ने नर्मदा बचाओ आंदोलन के जरिए पर्यावरण और मानवाधिकारों की लड़ाई को नई दिशा दी, जो सामाजिक परिवर्तन का प्रेरक प्रतीक है।

सरकारी योजनाओं ने महिलाओं के सशक्तिकरण में क्रांतिकारी भूमिका निभाई है। 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' ने लिंगानुपात को सुधारने में उल्लेखनीय योगदान दिया, वहीं 'मिशन शक्ति' और 'महिला ई-हाट' जैसे कार्यक्रमों ने महिलाओं को आर्थिक स्वावलंबन और सामाजिक मंच प्रदान किए। मध्यप्रदेश में पंचायतों में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी ने न केवल उनके नेतृत्व को उभारा, बल्कि सामाजिक निर्णयों में उनकी आवाज को अभूतपूर्व ताकत दी। ये योजनाएं न सिर्फ अवसरों का द्वार खोल रही हैं, बल्कि समाज की रूढ़िगत मानसिकता को बदलने का भी सशक्त माध्यम बन रही हैं।

महिलाओं की यह यात्रा चुनौतियों से भरी रही है। पितृसत्तात्मक समाज, शिक्षा और संसाधनों की कमी, और जड़ें जमाए सामाजिक रूढ़ियों ने उनके मार्ग में बार-बार अवरोध खड़े किए। कार्यस्थल पर लैंगिक भेदभाव, ग्रामीण क्षेत्रों में अवसरों की कमी और सुरक्षा जैसे गंभीर मुद्दे आज भी बाधक हैं। फिर भी, भारतीय महिलाओं ने अपनी अटूट इच्छाशक्ति और जुनून से हर रुकावट को चुनौती में बदलकर जीत हासिल की है।

भविष्य का भारत वही होगा, जहां महिलाएं हर क्षेत्र में समानता के साथ अपनी पहचान बनाएंगी। सरकारी योजनाएं, सामाजिक जागरूकता और शिक्षा इस दिशा में ठोस कदम हैं, लेकिन सच्चा परिवर्तन तभी संभव है जब समाज अपनी सोच को बदले और महिलाओं को केवल प्रतीक नहीं, बल्कि शक्ति का जीवंत स्वरूप माने। शिक्षा और तकनीक तक समान पहुंच, कार्यस्थल पर लैंगिक समानता, और रूढ़ियों को तोड़ने की दृढ़ प्रतिबद्धता इस बदलाव की नींव बनाएगी।

आज की भारतीय महिला न केवल अपने सपनों को पंख दे रही है, बल्कि पूरे राष्ट्र को नई ऊंचाइयों तक ले जा रही है। सुमित्रा महाजन, किरण मजूमदार-शॉ, पी.वी. सिंधु, मेधा पाटकर और लाखों अन्य महिलाओं की प्रेरक कहानियां साबित करती हैं कि नारी शक्ति महज एक नारा नहीं, बल्कि भारत की प्रगति का आधार है। मध्यप्रदेश की पंचायतों से लेकर वैश्विक मंच तक, ये महिलाएं नई इबारत लिख रही हैं। उनकी उपलब्धियां व्यक्तिगत विजय से कहीं अधिक हैं—वे पूरे समाज और राष्ट्र के लिए प्रेरणा की मशाल हैं।

यह युग नारी शक्ति का युग है। भारतीय महिलाएं राजनीति, उद्यमिता, खेल और सामाजिक परिवर्तन जैसे हर क्षेत्र में नेतृत्व की मिसाल कायम कर रही हैं। उनकी यह यात्रा न केवल प्रेरणादायी है, बल्कि हर भारतीय को यह विश्वास दिलाती है कि जब नारी आगे बढ़ती है, तो वह सिर्फ अपने लिए नहीं, बल्कि पूरे समाज के लिए रास्ता बनाती है। सच्चा भारत वही होगा, जहां नारी का सम्मान, उसकी स्वतंत्रता और नेतृत्व क्षमता को पूर्ण स्वीकार्यता मिले। यह नारी शक्ति का स्वर्णिम युग है, और भारत इसका गौरवशाली साक्षी बन रहा है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

कॉमेडी के बादशाह असरानी जीवनपर्यंत हरफनमौला रहे !

डॉ श्रीगोपाल नारसन एडवोकेट

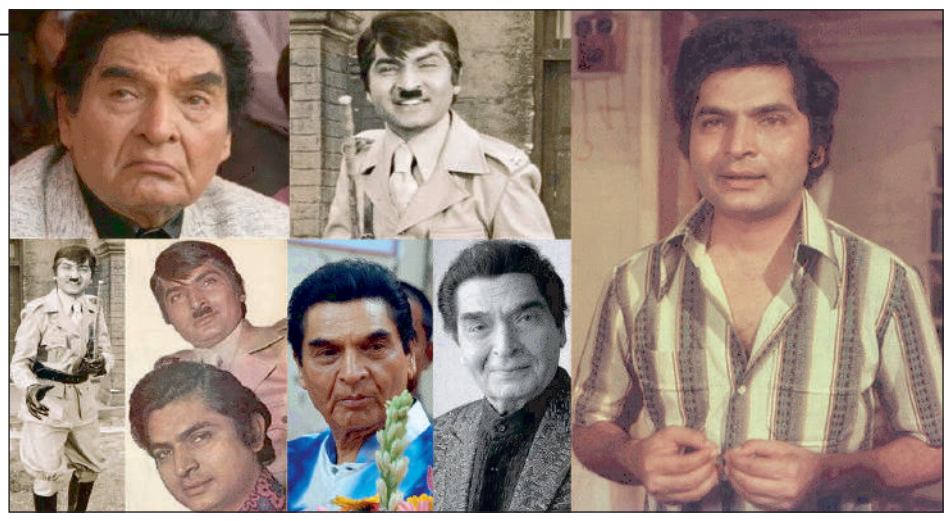

फ़िल्म अभिनेता गोवेर्धन असरानी अब हमारे बीच नही है। 84 वर्ष की आयु में दीपावली के दिन उनका निधन हो गया है। उन्हें भारतीय फिल्मों में कॉमेडी के बादशाह के रूप में जाना जाता रहा।

गोवेर्धन असरानी का जन्म 1 जनवरी सन 1940 में राजस्थान की राजधानी जयपुर में हुआ था। उनके चार बहनें और तीन भाई हैं। उन्होंने अपनी पढ़ाई की शुरुआत सेंट जेवियर स्कूल जयपुर से की। उसके बाद उन्होंने स्नातक की पढ़ाई राजस्थान कॉलेज से पूरी की। पढ़ाई खत्म होने के बाद उन्होंने कई वर्षो तक बतौर रेडियो आर्टिस्ट काम किया था। असरानी की शादी अभिनेत्री मंजू बंसल ईरानी से हुई । असरानी ने अपनी पत्नी के साथ भी कई फिल्मों में भूमिकाएं अदा की हैं। असरानी अब तक 300 से अधिक हिंदी व गुजरती फिल्मों में अभिनय कर चुकें हैं। वह पिछले पांच दशक से हिंदी सिनेमा में सक्रिय हैं। उन्होंने हिंदी सिनेमा के अमूमन सभी दिग्गज अभिनेताओं के साथ अभिनय किया हैं। फ़िल्मी दुनिया में अभिनय के अलावा वह एक राजनीतिज्ञ भी रहे हैं। उन्होंने सन 2004 में कांग्रेस पार्टी की सदस्यता ग्रहण की थी व लोकसभा चुनावों के दौरान उहोने कांग्रेस की जनसभाओं में बढ़-चढ़कर हिस्सा भी लिया था।

'हम अंग्रेजों के जमाने के जेलर हैं !' फिल्म 'शोले' का यह डायलॉग उनकी जिंदगी में शोहरत लेकर आया था जो आज भी याद किया जाता है। इस डायलॉग को मशहूर बनाने के पीछे असरानी का ही हाथ है। इस फिल्म में उनका शानदार अंदाज सभी ने देखा है। असरानी की गिनती बॉलीवुड के दिग्गज अभिनेताओं में होती हैं। उन्होंने अधिकांश फिल्मों में कॉमेडी रोल और सपोर्टिव रोल किए हैं। परन्तु अपने अभिनय कौशल से उन्होंने सभी किरदारों में जान डाल दी थी। असरानी के अंदर सिंगिंग का भी हुनर है ,यह बात बहुत कम लोग जानते हैं कि असरानी ने कई हिंदी फिल्मों में अपनी आवाज का जादू बिखेरा है। असरानी के पिता की कारपेट की दुकान थी। मगर, परिवार के बिजनेस में असरानी की बिल्कुल दिलचस्पी न थी। ऊपर से गणित की पढ़ाई में भी वे कमजोर थे। राजस्थान कॉलेज से स्नातक करने के बाद इन्होंने ऑल इंडिया रेडियो, जयपुर में वॉइस आर्टिस्ट के रूप में काम करना शुरु किया। सन 1964 में उन्होंने पुणे के फिल्म एंड टेलिविजन इंस्टिट्यूट ऑफ इंडिया में दाखिला लिया और वहीं अभिनय सीखा।

असरानी ने करीब पांच दशक तक फिल्मों में काम किया है। शुरुआत में असरानी को ज्यादा रोल नहीं मिले इसलिए वो एफटीआईआई में ही शिक्षक बन गए थे। असरानी ने दर्शकों को सिर्फ हंसाया ही नहीं, बल्कि मधुर संगीत भी सुनाया है। सन 1977 में आई फिल्म 'आलाप' में असरानी ने दो गाने गाए, जो उन्हीं पर फिल्माए गए। इसके अलावा 'फूल खिले हैं गुलशन गुलशन' में मशहूर गायक किशोर कुमार के साथ भी एक गाना गाया था।असरानी ने अधिकतर फिल्मों में साइड रोल किए हैं। 'चला मुरारी हीरो बनने' और 'सलाम मेमसाहब' जैसी फिल्मों में उन्होंने लीड एक्टर के तौर पर भी काम किया था। असरानी ने सन 1967 में रिलीज हुई फिल्म 'हरे कांच की चूड़ियां' से फिल्मों में कदम रखा था। असरानी ने कई फिल्मों में अपने अभिनय की छाप छोड़ी है, लेकिन 'शोले' में जेलर के किरदार ने इन्हें खूब लोकप्रियता दिलाई। उन्होंने 'मेरे अपने', 'बावर्ची', 'परिचय', 'अभिमान', 'महबूब, 'बंदिश', 'चुपके-चुपके' जैसी फिल्मों में भी शानदार अभिनय किया है।

फ़िल्म अभिनेता असरानी से मेरी मुलाकात करीब 5 साल पहले उज्जैन के मौनीबाबा आश्रम में हुई थी,वे बाबा के बड़े मुरीद थे और जब तक बाबा जीवित रहे असरानी की आस्था भी उनके लिए बनी रही।असरानी मौनीबाबा को रुद्र का साक्षात स्वरूप मानते थे।असरानी बातचीत में भी हरफनमौला थे और अभिनय में भी हरफनमौला रहे।आठ दशक के अपने जीवन मे असरानी ने लोगो को न सिर्फ खुलकर हंसाया बल्कि एक अच्छे इंसान के रूप में लोगो की जरूरत पड़ने पर मदद भी की।असरानी के मैनेजर बाबूभाई थीबा ने बताया कि असरानी का निधन जुहू के आरोग्य निधि अस्पाताल में हुआ। उनका अंतिम संस्कार भी शाम को ही सांताक्रूज वेस्ट के शास्त्री नगर शवदाह गृह में कर दिया गया। इस मौके पर उनके परिजन और करीबी लोग ही मौजूद थे। असरानी ने एक इंटरव्यू बताया था कि लोग उनको कमर्शियल एक्टर नहीं समझते थे और उन लोगों में सम्पूर्ण सिंह गुलजार भी शामिल थे। उन्होंने बताया था, 'गुलजार साहब ने कहा था ना ना...मुझे वो कमर्शियल एक्टर नहीं समझते थे...बोले कुछ अजीब सा चेहरा है।' लेकिन जब उन्होंने एक्टिंग में हाथ दिखाए तो फिर उन्हें पीछे मुड़कर देखने का मौका नहीं मिला। बेशक असरानी अब इस दुनिया में नहीं हैं. लेकिन वे अपने किरदारों से हमेशा जिंदा रहेंगे।

गोवर्धन पूजा और अन्नकूट उत्सव 21 अक्टूबर 2025- दीपावली का चौथा माणिक मोती- प्रकृति, पशुधन और मानवता के संतुलन का उत्सव

गोवर्धन पूजा और अन्नकूट,हमें याद दिलाता हैं कि विकास तभी सार्थक है जब वह धरती,अन्न, जल व पशु जीवन के प्रति कृतज्ञता से भरा हो। गोवर्धन पूजा और अन्नकूट उत्सव,भारतीय संस्कृति की कृषि प्रधानता,पशुधन के प्रति संवेदना और सामूहिकता की भावना का प्रतीक है-**एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र**

वैश्विक स्तरपर भारत की सांस्कृतिक परंपराएँ केवल अनुष्ठानों या धार्मिक विधियों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि उनमें जीवन, प्रकृति और मानवता का गहरा दर्शन निहित है। दीपावली का पंचदिवसीय महापर्व भारतीय जीवनके विविध आयामों को उजागर करताहै, धनतेरस से आरंभ होकर नरक चतुर्दशी, दीपावली, गोवर्धन पूजा और भाई दूज तक यह श्रृंखला हर दिन एक नए आध्यात्मिक संदेश को जन-जीवन में प्रसारित करती है।21अक्टूबर 2025, मंगलवार, को जब कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा के दिन गोवर्धन पूजा और अन्नकूट महोत्सव मनाया जाएगा, तब यह दीपावली के चौथे रत्न के रूप में आस्था और प्रकृति संरक्षण का अद्वितीय संगम प्रस्तुत करेगा।इस दिन को कई प्रदेशों में"पड़वा" या "प्रतिपदा" भी कहा जाता है और इसे अन्नकूट पर्व के रूप में भी मनाया जाता है,जिसका अर्थ है, "अन्न का विशाल पर्वत" अर्थात्समृद्धि कृतज्ञता और धरती माता के प्रति श्रद्धा का उत्सवसरकारें अब"इको-टूरिज्म" और "स्पिरिचुअल टूरिज्म" के रूप में ऐसे त्योहारों को वैश्विक ब्रांडिंग दे रही हैं।मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यहमानता हूं कि 2025 का गोवर्धन पर्व इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह वर्ष जलवायु परिवर्तन, खाद्य असमानता और ऊर्जा संकट जैसे वैश्विक मुद्दों के मध्य आ रहा है।ऐसे में यह पर्व मानवता को यह संदेश देगा कि "प्रकृति से युद्ध नहीं, संवाद आवश्यक है।"भारत सरकार और विभिन्न अंतरराष्ट्रीय हिंदू संगठनों द्वारा इस वर्ष 'गोवर्धन पर्वत संरक्षण अभियान', 'अन्नकूट फूड शेयरिंग मिशन' और 'गौसंवर्धन जागरूकता सप्ताह' जैसी पहलें चलाए जाने की ज़रूरत है,जो इस पर्व को वैश्विक चेतना से जोड़ेंगी।संयुक्त राष्ट्र के सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स में"ज़ीरो हंगर", "क्लाइमेट एक्शन" और "लाइफ ऑन लैंड" प्रमुख लक्ष्य हैं। गोवर्धन पूजा इन तीनों का प्रतीक है,अन्नकूट से भोजन के प्रति सम्मान और समान वितरण,गोवर्धन आराधना से प्रकृति संरक्षण,और पशुपालन पूजन से पारिस्थितिक संतुलन की भावना प्रकट होती है।इस प्रकार यह भारतीय पर्व वैश्विक सतत विकास का सांस्कृतिक प्रतीक बन चुकाहै।चूँकि दीपावली का चौथा माणिक- गोवर्धन पूजा और अन्नकूट उत्सव 21 अक्टूबर 2025- प्रकृति,पशुधन और मानवता के संतुलन का उत्सव हैं इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, गोवर्धन पूजा और अन्नकूट,हमें याद दिलाता हैं कि विकास तभी सार्थक है जब वह धरती,अन्न, जल व पशु जीवन के प्रति कृतज्ञता से भरा हो।ऐसे में यह पर्व मानवता को यह संदेश देगा कि "प्रकृति से युद्ध नहीं, संवाद आवश्यक है।"

साथियों बात अगर हम गोवर्धन पर्व और अन्नकूट की पौराणिक उत्पत्ति जब भगवान ने दिया प्रकृति संरक्षण का संदेश को समझने की करेंतो,भारत के ग्रामीण इलाकों में आज भी इस दिन गाय, बैल और कृषि उपकरणों की पूजा की जाती है। लोग अपने घरों के सामने गोबर से गोवर्धन पर्वत का प्रतीक बनाते हैं, जिसे फूलों, धान, गन्ने, तुलसी और रंगोली से सजाया जाता है।गोवर्धन पूजा की कथा का मूल आधार श्रीकृष्ण और इंद्र के मध्य का संवाद है, जिसने भारतीय समाज को प्रकृति के प्रति कर्तव्यबोध सिखाया। द्वापर युग में जब ब्रज के लोग इंद्रदेव को प्रसन्न करने के लिए यज्ञ करते थे ताकि वर्षा हो, तब बालक कृष्ण ने उनसे कहा, "हमारी समृद्धि का मूल इंद्र नहीं, बल्कि गोवर्धन पर्वत हैजो हमारे गायों के लिए चारा,जल और जीवन देता है।" इस विचार ने प्रकृति-पूजा को ईश्वरीय दर्जा दिया।जब ब्रजवासियों ने इंद्र की पूजा छोड़कर गोवर्धन की आराधना की, तब इंद्र क्रोधित होकर प्रचंड वर्षा ले आए। तब श्रीकृष्ण ने अपनी कनिष्ठा अंगुली पर सात दिन तक गोवर्धन पर्वत उठाकर ब्रजवासियों की रक्षा की। इस घटना ने न केवल मानवता को एकता और सहयोग का पाठ पढ़ाया बल्कि यह भी सिखाया कि प्रकृति ही असली देवता है, और उसका संरक्षण ही सच्ची पूजा है।आध्यात्मिक संदेश- अहंकार का दमन और विनम्रता का उत्सव-गोवर्धन पूजा केवल प्रकृति का नहीं, बल्कि अहंकार पर विजय का पर्व भी है। जब इंद्र का अहंकार टूटा और उन्होंने श्रीकृष्ण से क्षमा माँगी, तो यह शिक्षा दी गई कि शक्ति का प्रदर्शन नहीं, बल्कि सेवा और करुणा ही ईश्वरीय गुण हैं।आज जब राष्ट्र, व्यक्ति और समाज सत्ता के घमंड में खो रहे हैं, तब यह पर्व हमें याद दिलाता है" अहंकार अंततः विनाश की जड़ है, जबकि विनम्रता सृजन की।"अन्नकूट का अर्थ और वैश्विक प्रतीकवाद-

कृतज्ञता का पर्व अन्नकूट शब्द दो भागों से मिलकर बना है, 'अन्न' अर्थात्भोजन और 'कूट' अर्थात्ढेर या पर्वत। इस दिन मंदिरों में विभिन्न प्रकार के व्यंजनों का भव्य अन्नकूट तैयार किया जाता है, जिसमें सैकड़ों तरह के पकवान, मिठाइयाँ और प्रसाद भगवान को अर्पित किए जाते हैं।यह पर्व अन्न के प्रति सम्मान और धरती की उदारता का उत्सव है। आधुनिक संदर्भ में देखा जाए तो यह त्योहार फूड सिक्योरिटी, सस्टेनेबल एग्रीकल्चर और वेस्टेज-फ्री कंजम्पशन जैसे वैश्विक मुद्दों पर भी प्रकाश डालता है।जब दुनिया खाद्य असमानता, भुखमरी और जलवायु संकट से जूझ रही है, तब अन्नकूट का यह संदेश, 2025 का गोवर्धन पर्व इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह वर्ष जलवायु परिवर्तन, खाद्य असमानता और ऊर्जा संकट जैसे वैश्विक मुद्दों के मध्य आ रहा है।ऐसे में यह पर्व मानवता को यह संदेश देगा कि "प्रकृति से युद्ध नहीं, संवाद आवश्यक है।"अन्न का आदर करो, प्रकृति का आभार मानो"वैश्विक स्तर पर अत्यंत प्रासंगिक है।

साथियों बात अगर हम गोवर्धन पूजा का वैज्ञानिक और पर्यावरणीय महत्व को समझने की करें तो,यदि धार्मिक आस्था से ऊपर उठकर इस पर्व को वैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाए, तो गोवर्धन पूजा इकोलॉजिकल बैलेंस और एग्रो-इकोनॉमिक रिलेशन की याद दिलाती है।यह त्योहार मनुष्य को यह सिखाता है कि उसकी समृद्धि का मूल आधार प्रकृति और पशु हैं। खेतों में काम आने वाले बैलों, गायों, और कृषि भूमि की सफाई और सजावट का भाव कृषि उत्पादकता को भी बढ़ाता है।आज जब ग्लोबल वार्मिंग, डीफॉरेस्टेशन और एनिमल क्रुएल्टी जैसे संकट बढ़ रहे हैं, तब गोवर्धन पूजा हमें याद दिलाती है कि "धरती हमारी माता है, और उसका संरक्षण हमारी संतान धर्म है।"अब गोवर्धन पूजा केवल भारत तक सीमित नहीं रही। अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन, मॉरीशस, नेपाल, थाईलैंड मलेशिया और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों में बसे भारतीय समुदाय इसे बड़े उत्साह से मनाते हैं।लंदन के भक्तिवेदांता मनोर टेम्पल में हर वर्ष हजारों भक्त अन्नकूट महोत्सव में भाग लेते हैं, जहाँ लगभग 1000 से अधिक व्यंजन भगवान श्रीकृष्ण को अर्पित किए जाते हैं। न्यूयॉर्क, टोरंटो, और सिडनी के मंदिरों में भी इसी परंपरा के तहत "गोवर्धन अन्नाकुट फेस्टिवल" आयोजित किया जाता है।यह उत्सव न केवल भारतीय संस्कृति की प्रतिष्ठा बढ़ाता है, बल्कि विश्व को यह संदेश देता है कि आध्यात्मिकता और पर्यावरण संरक्षण एक ही सूत्र में बंधे हैं।

साथियों बात अगर हम गोवर्धन पूजा और आर्थिकसमृद्धि का संबंध को समझने की करें तो, धनतेरस, दीपावली और गोवर्धन पूजा, ये तीनों पर्व आर्थिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। गोवर्धन पूजा के दिन व्यापारी अपने नए खातों की शुरुआत करते हैं, कृषक अपने पशुओं और खेतों को पुनःपूजते हैं और गृहस्थ महिलाएँ अपने रसोईघर की समृद्धि के लिए अन्न का आदर करती हैं।यह परंपरा बताती है कि भारतीय संस्कृति में आर्थिक प्रगति और आध्यात्मिक श्रद्धा को विरोधी नहीं, बल्कि पूरक माना गया है।वर्तमान में जब दुनिया उपभोक्तावाद में डूबी है, तब यह त्योहार सिखाता है कि सच्ची समृद्धि "देने" और "साझा करने" में है, न कि केवल उपभोग उपभोग नहीं करना होगा

अतःअगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि गोवर्धन पूजा 2025-मानवता, प्रकृति और भक्ति का संतुलित उत्सव 21 अक्टूबर 2025 का गोवर्धन पूजा एवं अन्नकूट महोत्सव दीपावली श्रृंखला का वह चौथा माणिक है,जो आध्यात्मिकता, पारिस्थितिकी और मानवता को एक सूत्र में बाँधता है।यह दिन हमें याद दिलाता है कि सच्चा धर्म केवल मंदिरों में नहीं, बल्कि खेतों, पशुओं, पर्वतों और भोजन में भी बसता है।जब हम गोवर्धन की पूजा करते हैं, तो वास्तव में हम प्रकृति, अन्न और जीवन के प्रति अपनी जिम्मेदारी स्वीकार करते हैं।दुनिया के लिए यह पर्व भारत की उस सनातन दृष्टि का प्रतीक है जो कहती है->"यत्र सर्वे भूतानि आत्मन्येवानुपश्यति, स पश्यति।"अर्थात्जो हर प्राणी में अपने ही आत्मा को देखता है, वही सच्चा दृष्टा है।गोवर्धन पूजा इसी दृष्टि का उत्सव है,भक्ति में पर्यावरण,और पर्यावरण में भक्ति का दिव्य समागम।यह पर्व हमें यह सिखाता है कि प्रकृति ही गोवर्धन है, अन्न ही ईश्वर है, और मानवता ही पूजा है।

फिल्म जगत से इन्दौर को जोड़ने वाले स्व ओ पी गोयल साहब

पुराने दौर जब फिल्मी कलाकारों का एक दौर हुआ करता था, जब सिनेमा जगत में सिंगल स्क्रीन सिनेमाघरों की अपनी पहचान हुआ करती थी। तब इन्दौर में एक ऐसा व्यक्तित्व जो फिल्मो के करीब रहे खुद डिसट्रिब्यूशन को देखा इन्दौर में उन्होंने लक्ष्मी फिल्म के नाम से अपना आफिस फिल्म कालोनी में शुरू किया। जहां फ़िल्मी कलाकारों का आना-जाना रहता था। आप स्वयं ने इन्दौर को फिल्मी दुनिया से जोड़ने का कार्य बड़ी ईमानदारी से किया। वह थे स्वगीर्य

ओ पी गोयल साहब जिनके बिना अधूरा सा है फिल्म जगत और उनका यहां इन्दौर।

आज फिल्म लाइन के श्री ओपी गोयल जी को एक वर्ष पूरा हो गया वह हमारे बीच में नहीं है पर उनकी प्रथम पुण्यतिथि पर उनकी यादें आज भी ताजा है उन्होंने कई फिल्में रिलीज की और फिल्मो मे प्रोड्यूसर का भी काम किया

फिल्म जगत में उनकी अपनी पहचान थी पूरे इंदौर शहर में उनकी फिल्म लाइन की कारण एक अलग ही पहचान थी फिल्म संगठन सेंट्रल सर्किट सिनेमा एसोसिएसन में उन्होंने काफी लगन और मेहनत से संगठन को चलाया कई फिल्मों में विवादों के कारण प्रदर्शन होते थे तो प्रदर्शनकारियों से चर्चा करके समस्या का समाधान करते थे। फिल्म लाइन में कभी किसी से उन्होंने दुश्मनी नहीं रखी किसी से कोई विवाद भी हो जाए तो सामने वाले से मिलकर मुलाकात करके विवाद को खत्म कर देते थे । इंदौर से लेकर मुंबई तक ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जो उन्हे नहीं जानता था कई फिल्म कलाकारो में जैसे जुबली कुमार राजेन्द्र कुमार , देव आंनद, धर्मेन्द्र , आदि कई बड़े नामी कलाकारों से परिवारिक संबंध थे।वह इंदौर भी वो लेकर आए थे मल्लिका शेरावत, पूजा भट्ट, डिनू मोरिया, संजय दत्त , बप्पी लहरी, संगीतकार रविंद्र जैन और उनके तो पारिवारिक संबंध थे वह सहज योग से भी जुड़े हुए थे। नीलू फुले जो राजस्थानी फिल्म से हिन्दी में आई उनके साथ भी उन्होंने फिल्म बनाई। समाज में भी उनका काफी वर्चस्व था सिने क्लब ऑफ इंदौर में भी सक्रिय रहते थे। उनकी एक विशेषताएं होती की फिल्म लाइन हो या कोई भी हो हर किसी के दुख में सबसे पहले जाते थे आज एक वर्ष हो चुका है उनकी पुण्यतिथि पर लेकिन उनकी कमी आज भी सबको लगती है ।

प्रेषक स्वतंत्र लेखक हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

बचपन बिक रहा है: बच्चों से भीख मंगवाना एक सामाजिक अपराध....

"मासूम बच्चों का शोषण सिर्फ गरीबी का परिणाम नहीं, बल्कि समाज और व्यवस्था की बड़ी विफलता है।"

मासूम बच्चों का शोषण समाज की गंभीर समस्या बन चुका है। भीख मंगवाना केवल गरीबी का नतीजा नहीं, बल्कि बच्चों की मासूमियत का फायदा उठाने वाला व्यवस्थित व्यवसाय है। लोग दया के भाव में पैसा देते हैं, जबकि बच्चे मानसिक और शारीरिक रूप से प्रभावित होते हैं। समाज, सरकार और नागरिकों को मिलकर जागरूकता फैलानी चाहिए, चाइल्डलाइन (1098) और एनजीओ के माध्यम से बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करनी चाहिए, और उन्हें शिक्षा व सुरक्षित वातावरण देना प्राथमिकता बनानी चाहिए। बचपन बच्चों का अधिकार है, किसी का व्यवसाय नहीं।

डॉ प्रियंका सौरभ

हमारे समाज में बच्चों का बचपन उनकी सबसे बड़ी संपत्ति है। उनका खेलना, पढ़ना, सीखना और सुरक्षित वातावरण में पनपना ही उनका अधिकार है। लेकिन बच्चों का शोषण, भीख मंगवाने के लिए उनका इस्तेमाल और उनकी मासूमियत का लाभ उठाना आज एक गंभीर सामाजिक समस्या बन चुका है।

भीख मंगवाना केवल एक व्यक्तिगत समस्या नहीं है; यह एक व्यवस्थित व्यवसाय बन चुका है। छोटे शहरों और बड़े शहरों में यह आम दृश्य है कि मासूम बच्चे हाथ में थाली, कपड़े या किसी वस्तु के साथ चलते हैं, और लोग उनके मासूम चेहरों पर दया दिखाकर पैसे डाल देते हैं। यह न केवल बच्चों के बचपन को छीनता है, बल्कि उन्हें मानसिक और शारीरिक रूप से भी प्रभावित करता है।

समाज की जागरूकता की कमी, लोगों का दया भाव और कुछ परिवारों की आर्थिक मजबूरी मिलकर इस समस्या को बढ़ावा देते हैं। यह सिर्फ गरीबी का नतीजा नहीं, बल्कि बच्चों के अधिकारों का उल्लंघन है।

बचपन किसी भी मानव जीवन का सबसे महत्वपूर्ण और संवेदनशील हिस्सा होता है। यह वह समय है जब बच्चे सीखते हैं, अनुभव प्राप्त करते हैं और अपनी पहचान बनाते हैं। लेकिन जब बच्चों को भीख मंगवाने या किसी अन्य शोषण के लिए मजबूर किया जाता है, तो उनका विकास बाधित होता है।

भीख मंगवाना कभी-कभी आर्थिक मजबूरी का नतीजा हो सकता है, लेकिन जब यह नियमित रूप से होता है, और बच्चे को मजबूर किया जाता है, तो यह शोषण बन जाता है। मासूमियत का फायदा उठाकर बच्चों से पैसे कमाना एक नैतिक अपराध है।

समाज की भूमिका यहां महत्वपूर्ण बन जाती है। लोग यह सोचकर पैसा देते हैं कि वे मदद कर रहे हैं, लेकिन वास्तव में वे बच्चों के शोषण को प्रोत्साहित कर रहे हैं। माता-पिता और परिवार की भी जिम्मेदारी बनती है कि वे अपने बच्चों को इस तरह की गतिविधियों से बचाएं।

भारत में बाल श्रम और बच्चों से भीख मंगवाने को रोकने के लिए कई कानून हैं। बाल श्रम (निषेध और विनियमन) अधिनियम बच्चों को मजदूरी और शोषण से बचाने के लिए बनाया गया है। इसके अलावा, चाइल्डलाइन 1098 जैसी सेवाएँ 24X7 बच्चों की मदद के लिए उपलब्ध हैं।

एनजीओ और सामाजिक संगठन भी सक्रिय रूप से बच्चों को शोषण से बचाने और उन्हें शिक्षा उपलब्ध कराने का काम कर रहे हैं। लेकिन वास्तविक चुनौती यह है कि कई बार बच्चे और उनके माता-पिता कानूनी संरचना से अनजान रहते हैं, और शोषण नेटवर्क इतने संगठित होते हैं कि उन्हें पकड़ना मुश्किल होता है।

सरकार और समाज को मिलकर बच्चों की सुरक्षा के लिए जागरूकता फैलानी होगी और उन्हें सही दिशा में मार्गदर्शन देना होगा।

समाज का दया भाव और सहानुभूति अक्सर बच्चों के शोषण का कारण बन जाती है। अगर लोग बच्चों को भीख देने के बजाय सही तरीके से मदद करें, तो वे शोषण को बढ़ने से रोक सकते हैं।

स्थानीय समुदाय, स्कूल, माता-पिता और पड़ोसी मिलकर बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित कर सकते हैं। बच्चों को सुरक्षित वातावरण, शिक्षा और

खेलकूद का अवसर देना उनके विकास के लिए जरूरी है।

समाज को यह समझना होगा कि केवल पैसे देना बच्चों की मदद नहीं है। सही कार्रवाई, जैसे कि एनजीओ, चाइल्डलाइन और सामाजिक संस्थाओं को सूचित करना, ही बच्चों को शोषण से बचा सकती है।

भीख मंगवाना कई जगहों पर आर्थिक व्यवसाय बन चुका है। कुछ परिवार और नेटवर्क मासूम बच्चों को इस्तेमाल करके पूरे दिन हजारों रुपये कमाते हैं। यह सिर्फ बच्चों की मासूमियत का फायदा उठाना नहीं है, बल्कि उन्हें मानसिक और शारीरिक रूप से प्रभावित करना भी है।

पैसा देने वाले लोग यह सोचते हैं कि वे दया कर रहे हैं, लेकिन असल में वे इस प्रणाली को मजबूती प्रदान कर रहे हैं। यह एक चक्र बन जाता है, जिसमें बच्चों का शोषण जारी रहता है। बच्चों के भविष्य और समाज की नैतिक जिम्मेदारी के लिहाज से यह गंभीर समस्या है।

इस समस्या का समाधान समाज, सरकार और नागरिकों के मिलकर काम करने में है। बच्चों की सुरक्षा और शिक्षा के लिए कदम उठाना जरूरी है।

पैसे देने की बजाय मदद करें। बच्चों को भीख देने के बजाय उन्हें शिक्षा, खेल और सुरक्षित वातावरण उपलब्ध करवाएं। बच्चों की सुरक्षा के लिए चाइल्डलाइन (1098) और मान्यता प्राप्त एनजीओ से संपर्क करें। समाज में बच्चों के अधिकारों और शोषण की समस्या के बारे में जागरूकता बढ़ाएं। स्कूल, माता-पिता और पड़ोसी मिलकर बच्चों के सुरक्षित वातावरण को सुनिश्चित करें।

सिर्फ दया भाव या छोटे पैसों से बच्चों की मदद नहीं होगी। सही कार्रवाई, जागरूकता और कानूनी उपाय ही उन्हें बचा सकते हैं।

बचपन बच्चों का अधिकार है, किसी का व्यवसाय नहीं। मासूम बच्चों का शोषण समाज की नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारी को चुनौती देता है। हमें यह समझना होगा कि बच्चों को सुरक्षित, शिक्षित और स्वतंत्र वातावरण देना हमारा कर्तव्य है।

समाज, सरकार और नागरिकों के मिलकर सही कदम उठाने से ही इस समस्या का समाधान संभव है। जागरूकता, शिक्षा और सहयोग से ही हम बच्चों को उनका बचपन वापस दिला सकते हैं और उनके उज्ज्वल भविष्य की नींव रख सकते हैं।

भविष्य की सबसे बड़ी ज़रूरत: फिर से इंसान बनना

कभी इंसान होना ही गर्व की बात होती थी—आज वही सबसे कठिन काम बन गया है। यह कैसी विडंबना है कि विज्ञान और तकनीक की ऊँचाइयों पर पहुँचते-पहुँचते हम इंसानियत की नींव खो बैठे हैं। हमारी तरक्की जितनी ऊँची हुई, हमारी संवेदनाएँ उतनी ही नीची गिरती चली गईं। अब इंसान होना सिर्फ़ शरीर में नहीं, आत्मा में दुर्लभ हो गया है। यह युग बाहर से चमकता है, पर भीतर से खोखला—जहाँ दिलों की जगह आँकड़े गूँजते हैं और भावनाओं को एल्गोरिद्म बाँध लेते हैं। हम उस मोड़ पर खड़े हैं, जहाँ हमें पूछना पड़ रहा है: इंसान कहलाने का असली अर्थ हम क्यों भूल गए?

आज का समाज एक ऐसे दर्पण में बदल गया है, जो हमें हमारा बाहरी रूप तो दिखाता है, पर उसका सार छिपा लेता है। पहले गाँव-मोहल्लों में लोग सुख-दुख के साथी बनते थे। खुशी हो या गम, पड़ोसी बिना बुलाए कंधे से कंधा मिलाकर खड़े हो जाते थे। आज वही पड़ोसी स्मार्टफोन की स्क्रीन में डूबा है, और किसी का दुख उसके लिए बस एक क्षणिक वीडियो बनकर रह गया। सड़क पर घायल की पुकार गूँजती है, पर लोग पहले कैमरे की रिकॉर्डिंग शुरू करते हैं। यह वह संवेदनहीन युग है, जहाँ इंसान की कीमत उसके दर्द के "व्यूज" से तौली जाती है। क्या यही वह आधुनिकता है, जिसे हमने अपने सपनों में सजाया था?

संवेदना का यह पतन आज की सबसे बड़ी त्रासदी है। जब किसी का दर्द हमारे दिल को नहीं छूता, जब किसी की पुकार हमारे कदमों को नहीं रोकती, तब हमारी मानवता पर सवाल उठने लगते हैं। हम इतने आत्ममुग्ध हो चुके हैं कि दूसरों के आँसुओं को देखने का वक्त ही नहीं बचा। हर कोई अपनी जिंदगी की दौड़ में इतना आगे निकल जाना चाहता है कि पीछे छूट गए लोगों का ख्याल ही भूल जाता है। हमने समय को इतना अनमोल बना दिया है कि किसी के लिए दो पल ठहरना भी हमें घाटे का सौदा लगता है। पर क्या यह घाटा वाकई समय का है, या हमारी करुणा का?

ईमानदारी, जो कभी समाज का मजबूत आधार थी, आज विलुप्तप्राय हो चुकी है। अब सच बोलना मूर्खता समझा जाता है, और झूठ को चतुराई का तमगा मिलता है। लोग सच को इसलिए दबाते हैं, क्योंकि वह "जटिल" है; झूठ आसान है, त्वरित लाभ का रास्ता है। रिश्तों में भी अब सौदेबाजी हावी है। पहले दिल से दिल मिलते थे; आज रिश्ते शर्तों और अनुबंधों की बेड़ियों में जकड़े हैं। पहले एक वचन ही काफी था; आज वादे कागजों की स्याही में सिमट गए हैं। यह वह युग है, जहाँ भरोसा एक भूली-बिसरी कहानी बन गया है, और स्वार्थ ही हर रिश्ते की नींव बन चुका है।

हमारे बच्चे ऐसे माहौल में पल रहे हैं, जहाँ जीत को ही सब कुछ माना जाता है—चाहे वह किसी भी कीमत पर आए। स्कूलों में पढ़ाई के साथ-साथ यह सिखाया जाता है कि कैसे दूसरों को पछाड़ा जाए। नैतिकता और करुणा जैसे शब्द अब किताबों तक सिमट गए हैं। हम भूल चुके हैं कि समाज केवल व्यक्तिगत उपलब्धियों का जोड़ नहीं, बल्कि करुणा, सहानुभूति और ईमानदारी का एक नाजुक ताना-बाना है। जब ये धागे कमजोर पड़ते हैं, तो वह सामाजिक ढांचा चरमराने लगता है, जो हमें एकजुट रखता है।

सोशल मीडिया ने इस संकट को और गहरा किया है। यह मंच हमें हज़ारों लोगों से जोड़ने का दम भरता है, पर असल में हमें अकेला छोड़ देता है। लाखों "फॉलोअर्स" के बीच भी लोग खोखलापन महसूस करते हैं। यहाँ भावनाएँ "पोस्ट" बनकर रह गई हैं, और संवेदनाएँ "स्टोरी" बनकर 24 घंटे में मिट जाती हैं। लोग एक-दूसरे को समझने की बजाय "रिएक्ट" करते हैं, और सच्चे संवाद की जगह "कमेन्ट्स" ने ले ली है। यह डिजिटल युग हमें जोड़ने का वादा करता है, पर वास्तव में हमें और अलग-थलग कर रहा है। हमारी भावनाएँ अब स्क्रीन की चकाचौंध में कैद हैं, और असली दुनिया में हमारा दिल ऑफ़लाइन हो चुका है।

क्या यही वह प्रगति है, जिसका हमने सपना देखा था? हमने मंगल पर यान भेजे, चाँद पर कदम रखे, पर अपने पड़ोसी के दरवाजे तक जाने का वक्त नहीं निकाला। हमारे पास हर सवाल का जवाब देने वाली मशीनें हैं, पर किसी के दुख को समझने वाला दिल नहीं। हम तकनीक में जितने आगे बढ़े, मानवीयता में उतने ही पीछे रह गए। यह वह युग है, जहाँ सब कुछ खरीदा जा सकता है—सिवाय इंसानियत के।

लेकिन क्या यह निराशा ही अंत है? कतई नहीं। मानवता का इतिहास हमें सिखाता है कि हर अंधेरे के बाद उजाला आता है। आज भी कुछ लोग हैं, जो बिना स्वार्थ के दूसरों की मदद करते हैं। कोई अनजान व्यक्ति सड़क पर गिरे हुए को उठाता है, कोई भूखे को खाना देता है, कोई सच के लिए डटकर खड़ा होता है—ये छोटे-छोटे प्रयास ही इंसानियत की लौ को जलाए रखते हैं। इंसान बनना भले ही कठिन हो गया हो, पर यही वह चुनौती है, जो हमें फिर से इंसान बनने की प्रेरणा देती है।

हमें आत्मनिरीक्षण की जरूरत है। हमें यह पूछना होगा कि हम क्या बनना चाहते हैं—ऐसी मशीनें, जो सिर्फ़ काम करती हैं, या ऐसे इंसान, जिनमें करुणा और सच्चाई बाकी है? असली सफलता धन, यश या शोहरत में नहीं, बल्कि किसी के चेहरे पर लाई गई मुस्कान में है। वह व्यक्ति जो दूसरों के दर्द को महसूस करता है, जो सच के लिए अकेले खड़े होने का साहस रखता है—वही आज का सच्चा नायक है।

आज दुनिया को मशीनों से ज्यादा इंसानों की जरूरत है। मशीनें हर काम कर सकती हैं, पर किसी के आँसुओं को पोंछने का हुनर सिर्फ़ इंसानों में है। अगर हम यह हुनर खो देंगे, तो हमारी सारी उपलब्धियाँ बेमानी हो जाएँगी। अब समय है कि हम फिर से याद करें—इंसान बनना सबसे कठिन काम हो सकता है, पर यही वह काम है, जो हमें इंसान बनाता है। इस दौड़ में शामिल हों—न दूसरों को पीछे छोड़ने की, बल्कि एक-दूसरे का हाथ थामने की। क्योंकि इंसानियत ही वह धागा है, जो हमें जोड़े रखता है। अगर यह टूट गया, तो सारी सभ्यता बिखर जाएगी।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

मात्रा बनाम. गुणवत्ता बहस: बढ़ी हुई चिकित्सा सीटों (एमबीबीएस/एमडी/एमएस) के प्रभाव की जांच

विजय गर्ग

भारत में चिकित्सा शिक्षा का तेजी से विस्तार, एमबीबीएस, एमडी और एमएस सीटों में उल्लेखनीय वृद्धि के कारण एक दोधारी तलवार है। हालांकि लक्ष्य गंभीर डॉक्टर-प्रति रोगी अनुपात को संबोधित करना और विशेष रूप से कम सेवा प्राप्त क्षेत्रों में स्वास्थ्य देखभाल की पहुंच में सुधार करना है, लेकिन चिंताएं व्यापक रूप से उठाई गई हैं कि यह अनियंत्रित विस्तार गुणवत्ता के घटाव का कारण बन सकता है, जिसके परिणामस्वरूप संभावित रूप से कम कुशल चिकित्सक उत्पन्न हो सकते हैं।

विस्तार के लिए तर्क: अंतर को पूरा करना

सरकारी नीति और राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग (एनएमसी) द्वारा मुख्यतः बढ़ी हुई मेडिकल सीटों के समर्थकों ने अधिक डॉक्टरों की तीव्र आवश्यकता पर प्रकाश डाला

डॉक्टरों की कमी से निपटना: भारत में चिकित्सक-जनसंख्या अनुपात में सुधार होने के बावजूद, डब्ल्यूएचओ दिशानिर्देशों और बढ़ती आबादी की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अभी भी चिकित्सा पेशेवरों की अधिक घनत्व आवश्यक है। सीटों में वृद्धि सीधे इस घाटे से निपटती है।

पहुंच में सुधार: सरकार ग्रामीण और परिधीय क्षेत्रों में डॉक्टरों को बेहतर बनाए रखने की उम्मीद करते हुए पहले से कम सेवा वाले जिलों में नए मेडिकल कॉलेज स्थापित करने का लक्ष्य रखती है।

विशेषज्ञों की उपलब्धता: विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों में अधिक विशेषज्ञ पैदा करने के लिए स्नातकोत्तर (एमडी/एमएस) सीटें बढ़ाना आवश्यक है, जिससे तृतीयक देखभाल को मजबूत किया जा सके।

किफायती: सरकारी सीटों की संख्या बढ़ाने से विभिन्न आर्थिक पृष्ठभूमि के छात्रों को अनुदानित लागत पर चिकित्सा शिक्षा प्राप्त करने का अधिक अवसर मिलता है।

गुणवत्ता चिंता: पतला होने का खतरा

केंद्रीय डर यह है कि विस्तार की तीव्र गति आवश्यक बुनियादी संसाधनों से आगे बढ़ रही है, जिससे सीखने का वातावरण कमजोर हो रहा है

1। संकाय की कमी

सबसे महत्वपूर्ण बाधा विशेष रूप से नए और निजी कॉलेजों में योग्य चिकित्सा संकाय की कमी है। विशेषज्ञ चेतावनी देते हैं कि

प्रति छात्र शिक्षकों की अपर्याप्त संख्या (शिक्षक-छात्र अनुपात) व्यक्तिगत ध्यान और मार्गदर्शन को सीमित करती है, जो नैदानिक प्रशिक्षण के लिए महत्वपूर्ण है।

प्रीमियर संस्थानों में भी कई मौजूदा संकाय पद अपूर्ण रहते हैं, जिससे कॉलेज ₹स्टॉप गैप उपाय₹ पर निर्भर हो जाते हैं या मौजूदा कर्मचारियों को अत्यधिक काम करते हैं।

संकाय भर्ती मानकों में आराम (जैसे कि अनिवार्य निवास के बिना एमएससी/पीएचडी उम्मीदवारों या अनुभवी सरकारी विशेषज्ञों को पढ़ाने की अनुमति देना) को कुछ लोगों द्वारा तत्काल अंतराल भरने के लिए आवश्यक माना जाता है, लेकिन अन्य लोग शिक्षण गुणवत्ता पर समझौता करते हैं।

बुनियादी ढांचा और नैदानिक संपर्क

चिकित्सा शिक्षा संसाधन भरी है, प्रभावी नैदानिक प्रशिक्षण के लिए मजबूत बुनियादी ढांचे और उच्च रोगी भार की आवश्यकता होती है

अपर्याप्त बुनियादी ढांचा: नव स्थापित कॉलेज अक्सर प्रयोगशालाओं, उपकरणों, पुस्तकालयों और छात्रावासों के लिए आवश्यक मानकों को पूरा करने में संघर्ष करते हैं। सर्वेक्षणों में खराब बुनियादी ढांचे का सीधा प्रभाव शिक्षा की गुणवत्ता पर पड़ा है।

सीमित रोगी जोखिम: नैदानिक विषयों के लिए, ₹हाथ-ऑन₹ प्रशिक्षण गैर-विमर्श योग्य है। यदि रोगी-विद्यार्थी अनुपात बहुत कम है, तो डॉक्टरों का नया समूह पर्याप्त व्यावहारिक अनुभव के बिना स्नातक होगा, जो स्वतंत्र अभ्यास की उनकी नैदानिक तत्परता को प्रभावित करेगा। यह चिंता विशेष रूप से विकासशील अस्पतालों वाले नए कॉलेजों में तीव्र है।

कार्यशील कौशल प्रयोगशालाएं: कौशल प्रयोगशालाओं की उपलब्धता और कार्यक्षमता, जहां छात्र नियंत्रित वातावरण में प्रक्रियाओं का अभ्यास करते हैं, कई कॉलेजों में अपर्याप्त रहती है, जिससे सैद्धांतिक ज्ञान और व्यावहारिक क्षमता के बीच अंतर बढ़ जाता है।

रिक्त सीटें और सस्ती

विडंबना यह है कि चिकित्सा शिक्षा की उच्च मांग के बावजूद, हजारों सीटें अक्सर खाली हो जाती हैं, मुख्य रूप से निजी कॉलेजों में। इसका श्रेय निम्नलिखित को दिया जाता है

अत्यधिक शुल्क: निजी चिकित्सा सीटों की उच्च लागत उन्हें कई योग्य उम्मीदवारों के लिए अनुपलब्ध बना देती है।

परामर्श और गुणवत्ता संबंधी चिंताएं: उम्मीदवार अक्सर शिक्षा की गुणवत्ता, मान्यता और अनिश्चित कैरियर संभावनाओं के कारण नए या कम प्रतिष्ठित कॉलेजों से बचते हैं।

न्यूनीकरण प्रयास और आगे का रास्ता

सरकार और राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग (एनएमसी) इन चुनौतियों के बारे में जानते हैं और गुणवत्ता को सुरक्षित रखने के लिए उपाय शुरू कर चुके हैं

नियामक सुधार: एनएमसी ने बुनियादी ढांचे, संकाय और नैदानिक सामग्री के लिए बेंचमार्क निर्धारित करने के लिए न्यूनतम मानक आवश्यकता नियम पेश किए हैं।

एनएक्सटी (राष्ट्रीय प्रस्थान परीक्षण): एकीकृत लाइसेंस परीक्षा, एनएक्सटी की नियोजित शुरुआत का उद्देश्य सभी संस्थानों में चिकित्सा स्नातक की क्षमताओं के मूल्यांकन को मानकीकृत करना है, इससे पहले कि वे अभ्यास कर सकें, एक महत्वपूर्ण गुणवत्ता फिल्टर के रूप में कार्य करें।

प्रौद्योगिकी को एकीकृत करना: संकाय का समर्थन करने और शिक्षण विधियों को आधुनिक बनाने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और ई-पुस्तकों का उपयोग किया जा रहा है।

निष्कर्ष

जबकि अधिक डॉक्टरों का उत्पादन करने की महत्वाकांक्षा विकास के लिए प्रशंसनीय और आवश्यक है

तत्काल चुनौती चिकित्सा शिक्षा की अखंडता बनाए रखना है। यदि केवल मात्रा पर ध्यान केंद्रित किया जाए तो ₹गुणवत्ता वाले डॉक्टर₹ के डर का कोई आधार नहीं है। विस्तार का वास्तविक परीक्षण योग्य संकाय, आधुनिक नैदानिक बुनियादी ढांचे और एनएक्सटी परीक्षा जैसी मजबूत गुणवत्ता आश्वासन तंत्र में समानुपातिक निवेश के साथ सीटों की वृद्धि को तेजी से मेल खाने की सरकार की क्षमता होगी। इस व्यापक दृष्टिकोण के बिना, अधिक डॉक्टरों का अल्पकालिक लाभ अपर्याप्त प्रशिक्षित पेशेवरों पर निर्भर कमजोर सार्वजनिक स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली की दीर्घकालिक लागत को जोखिम में डालता है।

सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार प्रतिष्ठित शिक्षाविद् मलोट पंजाब

अलविदा "अंग्रेज़ों के ज़माने के जेलर" — असरानी को भावभीनी श्रद्धांजलि

गोवर्धन असरानी, जिन्हें हम सब प्यार से असरानी कहते थे, भारतीय सिनेमा के सबसे प्रिय हास्य अभिनेता थे। उनके अभिनय में विनम्रता, सादगी और अद्भुत हास्य का संगम था। शोले के "अंग्रेज़ों के ज़माने के जेलर" से लेकर गोलमाल, बावर्ची और चुपके चुपके तक, उन्होंने हर किरदार में जीवन की सच्चाई दिखायी। युवा हों या वृद्ध, सभी उनकी हँसी और संवादों के दीवाने थे। सरल जीवन, निष्ठा और कला के प्रति समर्पण उनके व्यक्तित्व का मूल था। भारतीय सिनेमा उनका योगदान हमेशा याद रखेगा।

- डॉ. सत्यवान सौरभ

भारतीय चलचित्र जगत ने एक और प्रकाशपुंज खो दिया। हास्य अभिनय के महारथी, सरल स्वभाव के धनी और हर पीढ़ी को हँसाने वाले कलाकार गोवर्धन असरानी, जिन्हें संसार प्यार से केवल असरानी कहता था, अब इस नश्वर संसार से विदा ले चुके हैं। उनके निधन के साथ भारतीय सिनेमा का एक स्वर्णिम अध्याय समाप्त हो गया है। परन्तु उनकी मुस्कान, उनकी आवाज़ और उनका सहज अभिनय सदैव जीवित रहेगा।

असरानी का जीवन केवल अभिनय की कहानी नहीं था, बल्कि यह एक ऐसी यात्रा थी जिसमें परिश्रम, लगन, अनुशासन और कला के प्रति गहरा समर्पण समाहित था। वे उन विरल कलाकारों में से एक थे जिन्होंने दर्शकों को यह सिखाया कि हँसी केवल ठहाका नहीं होती, बल्कि जीवन की जटिलताओं को हल्का करने का साधन भी होती है। उनके अभिनय में हास्य की गंभीरता और संवेदना दोनों एक साथ दिखाई देती थीं।

असरानी का जन्म सन्‌ १९४१ में जयपुर नगर में एक सिंधी परिवार में हुआ था। बचपन से ही वे अभिनय की ओर आकर्षित थे। उनके परिवार को यह स्वप्न नहीं था कि एक दिन उनका बेटा भारतीय चलचित्रों में एक प्रसिद्ध नाम बनेगा, परंतु असरानी के भीतर कला का दीप बचपन से ही प्रज्वलित था। विद्यालय के नाटकों में उन्होंने भाग लिया और वहीं से अभिनय का बीज अंकुरित हुआ। युवावस्था में उन्होंने पुणे स्थित भारतीय चलचित्र तथा दूरदर्शन संस्थान में प्रशिक्षण प्राप्त किया। उस संस्थान ने उन्हें न केवल अभिनय का अभ्यास सिखाया बल्कि कला के गहरे दर्शन से भी परिचित कराया। वहाँ से निकलने के बाद उन्होंने मुंबई नगर का रुख किया — वही नगर जिसने असंख्य स्वप्नदर्शियों को गले लगाया और असंख्य को असफलताओं की धूल में मिला दिया। परंतु असरानी उन लोगों में थे जो असफलताओं से टूटते नहीं बल्कि और मज़बूत होते हैं।

असरानी जी की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे हास्य को हल्केपन से नहीं, बल्कि गंभीरता से निभाते थे। उनका कहना था कि "लोगों को हँसाना सबसे कठिन कार्य है, क्योंकि उसमें सच्चाई छिपी होती है।" उन्होंने दर्शकों को यह महसूस कराया कि हँसी केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि जीवन के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण है। उनका हास्य कभी अशिष्ट नहीं हुआ। उनके संवादों में एक मर्यादा थी, एक विनम्रता थी। वे दर्शकों के चेहरों पर मुस्कान लाते थे, परंतु किसी की गरिमा को ठेस नहीं पहुँचाते थे। यही कारण है कि वे पीढ़ियों तक प्रिय बने रहे।

सन्‌ १९७५ में जब शोले प्रदर्शित हुई, तो उसमें अनेक पात्रों ने इतिहास रचा — जय, वीरू, गब्बर

सिंह, ठाकुर और इसी श्रेणी में था वह जेलर, जो हर बार अपनी अंग्रेज़ी मिश्रित हिंदी में दर्शकों को हँसा देता था। "हम अंग्रेज़ों के ज़माने के जेलर हैं..." यह संवाद आज भी भारतीय जनमानस में जीवित है। असरानी ने इस किरदार को केवल निभाया नहीं, बल्कि उसमें प्राण फूँक दिए। उनकी आँखों की चपलता, चेहरे के भाव, शरीर की भाषा — सब कुछ ऐसा था कि दर्शक हर बार उस दृश्य के आने पर मुस्कुरा उठते थे। इस एक भूमिका ने उन्हें अमर बना दिया, परंतु उन्होंने स्वयं को कभी इस एक छवि तक सीमित नहीं होने दिया।

असरानी का अभिनय केवल हास्य तक सीमित नहीं था। उन्होंने गंभीर भूमिकाएँ भी निभाईं। बावर्ची, अभिमान, चुपके चुपके, गोलमाल, नमक हराम, कुली नंबर एक, दिल है कि मानता नहीं, हेरा फेरी जैसी अनेक चलचित्रों में उन्होंने अपनी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय दिया। वे ऐसे कलाकार थे जो किसी भी परिस्थिति में ढल जाते थे। निर्देशक उनके चेहरे को देखकर समझ जाते थे कि इस व्यक्ति में असीम संभावनाएँ छिपी हैं। उनकी आवाज़ में एक ऐसी मिठास थी जो दर्शकों के कानों में सीधे उतर जाती थी। उन्होंने मंच, दूरदर्शन और चलचित्र — तीनों माध्यमों पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

असरानी के लिए अभिनय केवल जीविका नहीं, बल्कि एक साधना था। वे कहा करते थे, "कलाकार वह दर्पण है जिसमें समाज अपना चेहरा देखता है। अगर हँसी के ज़रिए मैं समाज की थकान दूर कर सकता हूँ, तो वही मेरा पुरस्कार है।" उनका यह दृष्टिकोण उन्हें सामान्य हास्य कलाकारों से ऊपर उठा देता था। वे हँसी के साथ विचार भी देते थे। उनकी प्रस्तुति कभी फूहड़ नहीं होती थी; उसमें मानवता का तत्व होता था।

असरानी जी का स्वभाव अत्यंत विनम्र था। उन्होंने अपने सह-अभिनेताओं के साथ हमेशा मित्रता का व्यवहार किया। चाहे राजेश खन्ना हों, अमिताभ बच्चन हों या धर्मेन्द्र — सभी ने उनके साथ कार्य करना आनंददायक बताया। वे सेट पर हल्के-फुल्के वातावरण का निर्माण करते थे। कठिन दृश्यों में भी वे वातावरण को सहज बना देते थे। उनके साथी कलाकार कहते हैं कि असरानी जी का हँसी-मज़ाक केवल मनोरंजन के लिए नहीं होता था, बल्कि वह तनाव को दूर करने का साधन होता था।

बहुत से लोग नहीं जानते कि असरानी ने केवल अभिनय ही नहीं किया, बल्कि निर्देशन और शिक्षण के क्षेत्र में भी योगदान दिया। उन्होंने नवोदित कलाकारों को अभिनय की बारीकियाँ सिखाईं। वे अक्सर कहा करते थे, "हास्य अभिनय केवल चेहरा बिगाड़ने या अजीब चाल चलने का नाम नहीं है; यह दिल की सच्चाई से उपजता है।" उन्होंने युवा कलाकारों को सिखाया कि कैमरे के सामने झूठ नहीं बोला जा सकता। दर्शक हर झूठ को पकड़ लेते हैं। इसलिए अभिनय का आधार ईमानदारी होना चाहिए।

असरानी जी का सबसे बड़ा पुरस्कार यही था कि वे हर उम्र के दर्शकों के प्रिय थे। बुजुर्ग उन्हें पुराने दौर की यादों से जोड़ते थे, युवा उन्हें हल्के-फुल्के हास्य के प्रतीक मानते थे, और बच्चे उन्हें अपने मजेदार अंकल के रूप में देखते थे। उनकी आवाज़ सुनते ही चेहरा मुस्कुरा उठता था। वे हर वर्ग के लिए आत्मीय थे।

अपने जीवन के अंतिम वर्षों में भी असरानी सक्रिय रहे। उन्होंने कई धारावाहिकों और नाटकों में भाग लिया। वे कहते थे कि "जब तक साँस है, अभिनय चलता रहेगा।" वे कभी भी प्रसिद्धि के पीछे नहीं भागे। उन्होंने सरल जीवन जिया, और यही सरलता उनकी सबसे बड़ी पहचान थी। उनका निधन ८४ वर्ष की आयु में हुआ, परंतु वे अंतिम दिनों तक सक्रिय रहे। वे न केवल अपने परिवार के लिए, बल्कि भारतीय चलचित्र जगत के लिए भी प्रेरणा बन गए।

असरानी का योगदान केवल अभिनय तक सीमित नहीं है। उन्होंने यह सिद्ध किया कि हँसी भी एक गंभीर कला है। उन्होंने दर्शकों को यह सिखाया कि हर परिस्थिति में मुस्कराना संभव है। उनकी विरासत आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत है। हर वह कलाकार जो हास्य के क्षेत्र में कार्य करेगा, कहीं न कहीं असरानी से प्रेरणा लेगा। उनके संवाद, उनकी शैली, उनकी आत्मीयता — सब कुछ भारतीय सिनेमा की स्मृतियों में अमिट रहेंगे।

असरानी जी का जीवन यह सिखाता है कि किसी भी कार्य को अगर मन से किया जाए, तो वह कला बन जाता है। उन्होंने संघर्ष किया, असफलताएँ देखीं, परंतु कभी अपने लक्ष्य से विचलित नहीं हुए। वे यह भी मानते थे कि कला का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज में आशा और सहानुभूति जगाना है। उनके जीवन से हमें यह सीख मिलती है कि विनम्रता, ईमानदारी और परिश्रम — यही किसी कलाकार की सच्ची पहचान हैं।

आज जब असरानी जी हमारे बीच नहीं हैं, तो ऐसा लगता है मानो भारतीय सिनेमा का एक प्रिय स्वर मौन हो गया हो। परंतु उनकी हँसी, उनका चेहरा और उनका अभिनय हमारे भीतर सदा जीवित रहेगा। वे जहाँ भी होंगे, शायद वहाँ भी अपनी विशिष्ट शैली में कह रहे होंगे — "आर्डर! आर्डर! अदालत की कार्यवाही स्थगित की जाती है!" उनकी आत्मा को शांति मिले। भारतवर्ष सदैव उनका आभारी रहेगा।

असरानी — एक नाम, एक मुस्कान, एक युग। सिनेमा की हँसी अब कुछ कम हो गई है, पर असरानी की यादें सदैव गूंजती रहेंगी।

प्रदूषण कम करने के लिए कृत्रिम बारिश करवाने की योजना से फसलों व खेती के लिए नुकसानदेह है

विजय गर्ग

दिवाली उत्सव पर प्रतिवर्ष की जाने वाली आतिशबाज़ी से गंभीर वायु प्रदूषण उत्पन्न होता है। इसे कम करने के लिए इस साल दिल्ली सरकार ने दिवाली के अगले दिन कृत्रिम बारिश दके जरिये मौसम का मिज़ाज बदलने की योजना बनाई है, जिससे खरीफ फसलों की कटाई-गहाई और रबी की बुआई पर असर पड़ने की आशंका है, जो राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा के लिए भी गंभीर खतरा साबित हो सकती है।

प्रदूषण कम करने के लिए कृत्रिम बारिश करवाने की योजना जहां फसलों व खेती के लिए नुकसानदेह है वहीं इसके नकारात्मक पर्यावरणीय प्रभावों की भी आशंका कम नहीं। इसमें खाद्य सुरक्षा के लिए भी जोखिम हैं। अव्यावहारिक योजनाओं के बजाय प्रदूषण नियंत्रण के वैज्ञानिक समाधान अपनाने चाहिए।

दिवाली उत्सव पर प्रतिवर्ष की जाने वाली आतिशबाज़ी से गंभीर वायु प्रदूषण उत्पन्न होता है। इसे कम करने के लिए इस साल दिल्ली सरकार ने दिवाली के अगले दिन कृत्रिम बारिश दके जरिये मौसम का मिज़ाज बदलने की योजना बनाई है, जिससे खरीफ फसलों की कटाई-गहाई और रबी की बुआई पर असर पड़ने की आशंका है, जो राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा के लिए भी गंभीर खतरा साबित हो सकती है।

पिछले छह दशक से देश की खाद्य सुरक्षा और सार्वजनिक खाद्य वितरण प्रणाली को सुनिश्चित करने के लिए केंद्र सरकार किसानों से धान और गेहूं खरीदती है, जिसमें लगभग 80 प्रतिशत योगदान राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के आसपास के राज्यों का रहा है, जहां अभी अक्तूबर-नवंबर महीने में खरीफ फसलों—धान, ज्वार, बाजरा, मूंग, अरहर, कपास आदि की कटाई-गहाई और रबी फसलों —गेहूं, जौ, चना, सरसों, मसूर, आलू आदि की बुआई चल रही है, जिसके लिए बिना बारिश वाला सूखा मौसम अति आवश्यक है।

निस्संदेह, जब किसान खरीफ फसलों की उपज समेटने और रबी की बुआई में व्यस्त हैं और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के आसपास के राज्यों की कृषि उपज विपणन मंडियां अनाज से भरी हुई हैं, तब दिल्ली सरकार द्वारा दिवाली के अगले दिन कृत्रिम बारिश करवाने की योजना अव्यावहारिक है जिससे किसान का नुकसान भी हो सकता है। ऐसे समय की जाने वाली कृत्रिम बारिश के चलते किसानों की खरीफ फसल उपज और मंडियों में अनाज की बर्बादी तथा बुआई की गई फसलों के खराब होने की संभावना रहेगी।

उल्लेखनीय है कि सामान्य प्राकृतिक वर्षा तब होती है जब सूरज की गर्मी से नम हवा गर्म और हल्की होकर ऊपर उठती है। ऊपर उठी हुई हवा का दबाव कम हो जाता है और आसमान में एक ऊंचाई पर पहुंचने के बाद वह ठंडी हो जाती है। जब इस हवा में सघनता बढ़ जाती है तो वर्षा की बूंदें बड़ी होकर हवा में देर तक नहीं ठहर पातीं और बारिश के रूप में नीचे गिरने लगती हैं। लेकिन कृत्रिम वर्षा करने के लिए सिल्वर आयोडाइड और सूखी बर्फ जैसे ठंडा करने वाले रसायनों का प्रयोग करके कृत्रिम बादल बनाकर वर्षा करवाई जाती है।

मानव-निर्मित गतिविधियों के जरिये कृत्रिम बादल बनाने और फिर उनसे वर्षा कराने की क्रिया को 'क्लाउड सीडिंग' कहा जाता है। हालांकि, क्लाउड सीडिंग के कई फायदे हैं, लेकिन मौसम परिवर्तन की यह तकनीक पूरी तरह सुरक्षित नहीं है। इसके नकारात्मक पर्यावरणीय प्रभावों में जल और वायु प्रदूषण, पारिस्थितिक तंत्र का विघटन, असामान्य मौसम परिवर्तन और मिट्टी व पानी में रसायनों का जमाव शामिल है। इसके उपयोग से सिल्वर आयोडाइड जैसे हानिकारक रसायन हवा, पानी और मिट्टी में मिल सकते हैं, जिससे स्वास्थ्य जोखिम उत्पन्न हो सकते हैं, और पड़ोसी क्षेत्रों में वर्षा में कमी या अत्यधिक वर्षा व बाढ़ जैसे दुष्प्रभाव भी हो सकते हैं। कृत्रिम वर्षा से प्राकृतिक मौसम चक्र बाधित हो सकता है, जिससे अप्रत्याशित सूखा या अति वर्षा की स्थिति बन सकती है और किसानों व पारिस्थितिकी तंत्र पर नकारात्मक असर पड़ सकता है। मौसम के संतुलन में बदलाव के दीर्घकालिक अवांछित प्रभाव हो सकते हैं, जिन्हें अभी मौसम वैज्ञानिक पूरी तरह समझ नहीं पाए।

राजधानी क्षेत्र में वायु प्रदूषण लगभग पूरे वर्ष बना रहता है, लेकिन सर्दी के महीनों (अक्तूबर-मार्च) में मानसून की वापसी से वायु गति और तापमान कम होने के कारण पृथ्वी की सतह पर वायु प्रदूषण का घनत्व बढ़ जाता है। पराली जलाने के अलावा, दिल्ली के वायु प्रदूषण के लिए अन्य कारक—वाहनों से निकलने वाला धुआं, औद्योगिक उत्सर्जन, निर्माण कार्य से उठने वाली धूल आदि मुख्य रूप से जिम्मेदार हैं। प्रदूषण में पराली जलाने की महीनेवार हिस्सेदारी अलग-अलग होती है। नवंबर में यह लगभग 30 प्रतिशत और बाकी महीनों में मात्र 0–5 प्रतिशत तक सीमित रहती है। अतः वायु प्रदूषण के लिए वाहन, उद्योग और निर्माण कार्य जैसे स्थानीय कारक अधिक जिम्मेदार हो सकते हैं।

उल्लेखनीय है कि इस वर्ष सर्वोच्च अदालत ने पराली जलाने से रोकने के लिए किसानों को जेल और भारी जुर्माना लगाने के लिए केंद्र और राज्य सरकारों को सख्त निर्देश जारी किए हैं। जबकि दिल्ली सरकार की मांग के अनुरूप दिल्लीवासियों को दिवाली पर पटाखे जलाने की अनुमति देना वायु प्रदूषण रोकने की सरकारी नीति में विरोधाभास प्रतीत होता है।

निस्संदेह, वायु प्रदूषण पर्यावरण और मानव जीवन के स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा है, लेकिन वायु प्रदूषण रोकथाम के अब तक के सरकारी प्रयास कम व्यावहारिक और नाकाफी साबित हुए हैं। इसी कड़ी में दिवाली के अगले दिन दिल्ली सरकार की कृत्रिम बारिश की योजना अव्यावहारिक ही नहीं, बल्कि देश की कृषि और राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा हो सकती है। राजधानी क्षेत्र में वायु प्रदूषण नियंत्रण हेतु कोरे प्रचार पर सरकारी धन की बर्बादी करने वाली योजनाओं के बजाय सरकार को वैज्ञानिक समाधान अपनाने की आवश्यकता है—जैसे कंबाइन हार्वेस्टर पर 'स्ट्रॉ मैनेजमेंट सिस्टम' अनिवार्य करना ताकि पराली खेत में दबाकर जैविक खाद बनाई जा सके, और वाहन तथा उद्योगों के प्रदूषण को प्रभावी रूप से नियंत्रित करना।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

यूट्यूब:21वीं सदी का न्यू कैरियर पथ

विजय गर्ग

अतीत में, कैरियर के सपने अक्सर पारंपरिक व्यवसायों तक सीमित थे - डॉक्टर, इंजीनियर, शिक्षक या वकील। लेकिन आज के डिजिटल युग में, ₹कैरियर₹ की परिभाषा नाटकीय रूप से बदल गई है। सबसे रोमांचक नई सीमाओं में से एक यूट्यूब है, जो एक साधारण वीडियो साझा करने वाली साइट से दुनिया भर के लाखों लोगों के लिए पूर्णकालिक करियर गंतव्य बन गया है।

सभी के लिए एक मंच

यूट्यूब सभी को एक मंच देता है। चाहे आप गायक हों, शिक्षक हों, गेमर हों, कुक हो या कॉमेडियन, मंच दुनिया के साथ अपनी प्रतिभा साझा करने का एक स्थान प्रदान करता है। सबसे अच्छा हिस्सा. आपको शुरू करने के लिए औपचारिक योग्यता या बड़े निवेश की आवश्यकता नहीं है। आपको केवल एक स्मार्टफोन, रचनात्मकता और सुसंगतता की आवश्यकता है।

शौक से लेकर पेशे तक

कई रचनाकारों के लिए जो शौक था, वह अब पूर्णकालिक व्यवसाय बन गया है। सफल यूट्यूबर्स कई चैनलों के माध्यम से कमाई करते हैं - विज्ञापन राजस्व, ब्रांड साझेदारी, सदस्यता, माल और लाइव स्ट्रीमिंग। कुछ निर्माता अपने स्टूडियो बनाने, टीमों को नियुक्त करने और यहां तक कि अपना व्यवसाय शुरू करने के लिए भी पर्याप्त पैसा बनाते हैं।

प्रभाव की शक्ति

यूट्यूब प्रभावकार, या ₹यूटीबर्स₹ आज की मशहूर हस्तियां हैं। वे राय, रुझान और उपभोक्ता विकल्पों को आकार देते हैं। कई ब्रांड अब पारंपरिक विज्ञापनों की तुलना में यूट्यूबर्स के साथ सहयोग करना पसंद करते हैं क्योंकि दर्शकों को वे अधिक प्रासंगिक और प्रामाणिक लगते हैं। इसने एक संपूर्ण उद्योग बनाया है जिसे इन्फ्लूएंसर मार्केटिंग कहा जाता है।

शिक्षा और सशक्तिकरण

यूट्यूब केवल मनोरंजन के लिए नहीं है - यह एक शक्तिशाली शैक्षिक उपकरण भी है। कई शिक्षक और पेशेवर ज्ञान साझा करने, ट्यूटोरियल प्रदान करने और वैश्विक दर्शकों को कौशल सिखाने के लिए मंच का उपयोग करते हैं। कोडिंग से लेकर खाना पकाने तक, छात्र लगभग कुछ भी मुफ्त में सीख सकते हैं। इससे शिक्षा को लोकतांत्रिक बनाया गया है और मनोरंजन (शिक्षा + मनोरंजन) में नए कैरियर मार्ग बनाए गए हैं।

यूट्यूब कैरियर की चुनौतियां

हालांकि, यूट्यूब यात्रा आसान नहीं है। इसमें धैर्य, अनुशासन और रचनात्मकता की आवश्यकता होती है। प्रतिस्पर्धा तीव्र है, एल्गोरिदम बदलते रहते हैं और सफलता के लिए अक्सर वर्षों का प्रयास होता है। मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं, ऑनलाइन आलोचना और सामग्री जलना रचनाकारों के लिए वास्तविक चुनौतियां हैं।

जुनून पर निर्मित भविष्य

चुनौतियों के बावजूद, यूट्यूब उन सपने देखने वालों को आकर्षित करता रहता है जो जुनून को पेशे में बदलना चाहते हैं। यह इस बात का प्रतीक है कि हम काम को कैसे देखते हैं - जीवित रहने के लिए नहीं, बल्कि आत्म-अभिव्यक्ति, स्वतंत्रता और प्रभाव की अनुमति देने वाले कार्य के रूप में।

21वीं सदी में, यूट्यूब सिर्फ एक मंच नहीं है - यह करियर क्रांति है। यह व्यक्तियों को उन तरीकों से बनाने, संवाद करने और कमाई करने में सक्षम बनाता है जो केवल एक दशक पहले कल्पना नहीं की जा सकती थीं। आज की पीढ़ी के लिए, यह स्पष्ट है: सफलता केवल कार्यालयों और डिग्री से ही नहीं आती - यह कैमरे, एक विचार और ₹अपलोड₹ को हिट करने की हिम्मत से भी आ सकती है

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

एआई गणितज्ञों से बेहतर हो सकता है? विजय गर्ग

विशेषज्ञों के बीच सहमति यह है कि ऐआई ने अभी तक गणित के सबसे उन्नत और अमूर्त क्षेत्रों में मानव गणितज्ञों से आगे नहीं बढ़ी है, लेकिन वह तेजी से एक अपरिहार्य उपकरण बन रहा है जो क्षेत्र को पुनः आकार दे रहा है। जबकि वर्तमान एआई कुछ कार्यों में उत्कृष्ट है, यह अभी भी बुनियादी सीमाओं का सामना करता है जो इसे मानव गणितज्ञों से अलग करते हैं। गणित में एआई की ताकतें एआई प्रणालियों ने कई प्रमुख गणितीय क्षेत्रों में मनुष्यों से बेहतर सिद्ध किया है

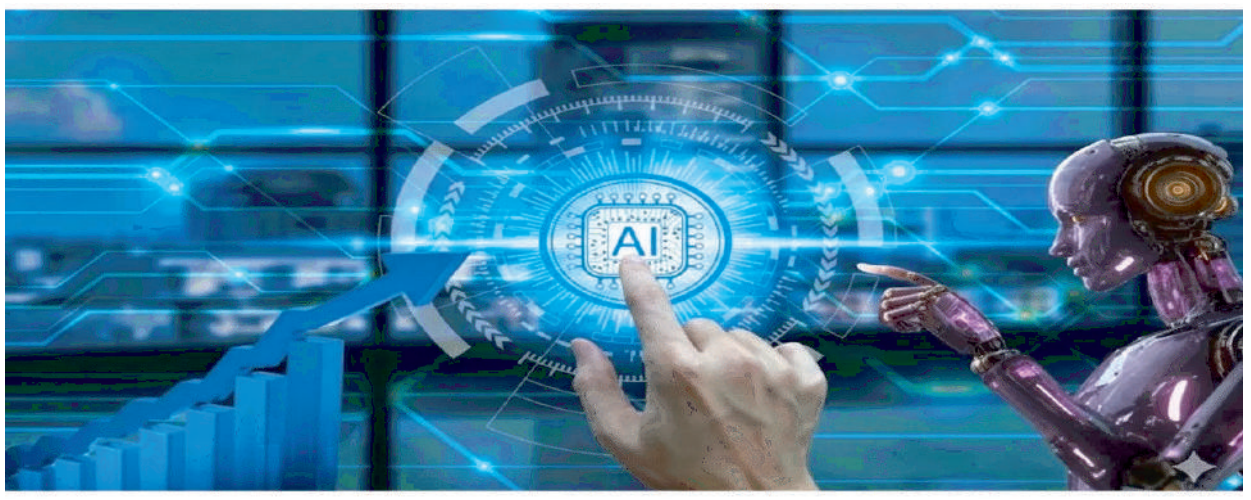

जटिल गणना और डेटा विश्लेषणः एआई मानव क्षमताओं से कहीं अधिक गति और सटीकता के साथ विशाल, जटिल गणनाएं कर सकता है। प्रूफ वेरिफिकेशनः लीन जैसे स्वचालित सैद्धांतिक प्रूफर्स का उपयोग गणितीय प्रमाणों की कठोरता को औपचारिक रूप से जांचने और सत्यापित करने के लिए किया जाता है, जो अनिवार्य रूप से सत्यापन प्रक्रिया में मानवीय त्रुटि को समाप्त करता है।

पैटर्न मान्यता और अनुमानः गणितीय वस्तुओं और बड़े डेटा सेट में छिपे हुए पैटर्न और संबंधों की पहचान करने में एआई अत्यधिक प्रभावी है। इस क्षमता ने नए अनुमानों (सिद्धांतों के लिए शिक्षित अनुमान) और कुछ मामलों में, पहले अज्ञात गणितीय संबंधों की खोज का नेतृत्व किया है।

विशिष्ट समस्या प्रकारों का समाधानः जटिल अंतर समीकरण या अनुकूलन समस्याओं को हल करने जैसे क्षेत्रों में (जैसे, लॉजिस्टिक्स या वित्त में), एआई-आधारित तरीके अक्सर पारंपरिक तरीकों की तुलना में तेजी से और कम कंप्यूटिंग शक्ति के साथ समाधान पा सकते हैं। एआई की वर्तमान सीमाएं अपनी प्रगति के बावजूद, एआई, विशेष रूप से बड़े भाषा मॉडल (एलएलएम), अभी भी उन्नत गणित के मुख्य पहलुओं के साथ संघर्ष कर रहा है

गहन अवधारणात्मक समझ की कमीः वर्तमान एआई प्रणाली अपने प्रशिक्षण डेटा से सांख्यिकीय पैटर्न मान्यता पर काम करती हैं। वे पाठ उत्पन्न कर सकते हैं जो एक प्रमाण या स्पष्टीकरण जैसा दिखता है, लेकिन उनमें अक्सर अंतर्ज्ञानी समझ और आधारभूत गणितीय अवधारणाओं और सिद्धांतों की कमी होती है जिनके पास मनुष्य होता है। इससे सूक्ष्म लेकिन महत्वपूर्ण त्रुटियां हो सकती हैं, जिन्हें अक्सर ₹भ्रमह₹ कहा जाता है

रचनात्मकता और अंतर्ज्ञानः वास्तविक गणितीय सृजनशीलता - पूरी तरह से नई अवधारणाओं को तैयार करने, किसी समस्या को उपन्यास तरीके से ढांचे में डालने या जाहिरा तौर पर असंबद्ध क्षेत्रों के बीच संबंध बनाने की क्षमता - मानव गणितज्ञों का विशेष क्षेत्र बना हुआ है। एआई वर्तमान में उन समस्याओं से निपटने में सीमित है जिनके लिए अंतर्दृष्टि की आवश्यकता होती है या ₹बॉक्स के बाहर सोचह₹ क्योंकि यह उस डेटा की संरचना पर निर्भर करता है जिस पर इसे प्रशिक्षित किया गया था।

उपन्यास या अमूर्त समस्याओं का प्रबंधनः एआई अपने प्रशिक्षण डेटा के समान समस्याओं पर सबसे अच्छा प्रदर्शन करता है। यह अक्सर उपन्यास, अनुसंधान स्तर या अत्यधिक अमूर्त समस्याओं का सामना करते समय शानदार रूप से विफल रहता है जिन्हें जटिल गणना के बजाय सिद्धांतों की गहरी, गैर-अल्गोरिथम समझ की आवश्यकता होती है। गणितज्ञों द्वारा शीर्ष एआई मॉडलों को चुनौती देने के लिए डिज़ाइन किए गए परीक्षणों ने सबसे कठिन समस्याओं पर बहुत कम सफलता दर दिखाई है। भविष्यः सहयोग, प्रतिस्थापन नहीं गणित में AI का तत्काल भविष्य गणितज्ञों के पूर्ण प्रतिस्थापन की बजाय मानव-एआई सहयोग की ओर इशारा करता है।

सह-पायलट के रूप में एआईः मानव गणितज्ञों के लिए एक शक्तिशाली सहायक के रूप में कार्य करेगा, जो काम के उबाऊ भागों (जैसे गणना, डेटा संग्रह और प्रमाण सत्यापन) को स्वचालित कर देगा तथा अनुसंधान के लिए नए मार्ग सुझाएगा।

भूमिका में बदलावः मानव गणितज्ञ की भूमिका रचनात्मकता, समस्या निर्माण, एआई द्वारा उत्पन्न सर्वोत्तम अनुमानों को संसाधित करने और मशीन के आउटपुट पर कठोर आलोचनात्मक सोच लागू करने पर अधिक ध्यान केंद्रित कर सकती है।

दीर्घकालिक क्षमताः आर्टिफिशियल जनरल इंटेलिजेंस (एजीआई) की सैद्धांतिक अवधारणा - मानव-स्तरीय बुद्धिमत्ता वाला एक ऐआई जो विभिन्न क्षेत्रों में सामान्य हो सकता है - अंततः एआई का नेतृत्व कर सकता है जो वास्तव में मानवीय गणितज्ञों से प्रतिस्पर्धा या आगे बढ़ सकता है। हालांकि, एजीआई को प्राप्त करने की समयरेखा गहन बहस का विषय बनी हुई है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

बेस्ट माइंड्स अपने युवाओं को याद करने के बजाय नवाचार करते हैं।

विजय गर्ग

भारत दुनिया के सबसे युवा देशों में से एक है, जिसकी जनसंख्या 80 करोड़ से अधिक (लगभग 65 प्रतिशत) 35 वर्ष की आयु से कम है। देश वर्तमान में अपने जनसांख्यिकीय लाभांश चरण में है, जो आर्थिक विकास क्षमता की 50 वर्ष (2005-2055) खिड़की है, जब कामकाजी आयु के व्यक्तियों का अनुपात (15-64 वर्ष) बच्चों और बुजुर्गों को समर्थन देने के लिए पर्याप्त है। हालांकि, इस लाभांश को प्राप्त करने के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, कौशल विकास और रोजगार सृजन की आवश्यकता होती है ताकि युवा पूरी तरह से योगदान कर सकें। महत्वपूर्ण प्रश्न यह हैः क्या भारत इस अवसर का लाभ उठाएगा? क्या हमें यकीन है कि हमारी युवा पूरी तरह से अलग बस नहीं चला रही हैं? प्रत्येक वर्ष, लगभग 22 लाख छात्र दो लाख एमबीबीएस और संबंधित सीटों के लिए नीट-यूजी लेते हैं तथा 42,000 आईआईटी और अन्य स्थानों के लिए 14 लाख जेई मेन का प्रयास करते हैं।

प्रत्येक छात्र के लिए 2.5 वर्ष (912.5 दिन) की तैयारी का अनुमान लगाते हुए, नीट में 20 लाख असफल उम्मीदवार 182 करोड़ मानव-दिन खर्च करते हैं। जेईई के 13.5 लाख में एक और 123 करोड़ जोड़ दिए गए हैं, जिससे प्रतिवर्ष कुल 305 करोड़ मानव दिन बर्बाद हो जाते हैं। इससे खोए गए उत्पादन में 2.07 लाख करोड़ रुपये का अनुवाद होता है, जो संलग्न अस्पतालों के साथ 115-390 नए मेडिकल कॉलेजों (प्रत्येक 528-1,760 करोड़ रुपये) को वित्तपोषित कर सकता है; और अगले वर्ष 235-470 इंजीनियरिंग कॉलेज (प्रत्येकी 440-880 करोड़ रुपये)। इन 33 लाख असफल छात्रों के लिए, उनका बचपन बिना किसी समान लाभ के हमेशा के लिए खो जाता है। यदि उन्होंने अपनी पसंद का खेल खेला होता तो कुछ लोग सफल पेशेवर बन सकते थे या कम से कम स्वस्थ जीवन जी सकते थे। इसके अलावा, एनएसएस के 80वें दौर का व्यापक मॉड्यूलर सर्वेक्षणः शिक्षा, 2025 में बताया गया है कि 27 प्रतिशत छात्र औसत 2,409 रुपये पर निजी कोचिंग चुनते हैं, जो केवल उच्च माध्यमिक स्तरों के लिए 16,116 करोड़ रुपए तक पहुंच जाता है। इन्फिनियम ग्लोबल रिसर्च के अनुसार, भारत का कोचिंग व्यवसाय अब 70,000 करोड़ रुपये का है और यह 2028 तक दोगुना होने की उम्मीद है।

यह समस्या इन दो परीक्षाओं से परे है। सिविल सेवा परीक्षा (सीएसई) के लिए प्रतिवर्ष 10 लाख से अधिक आवेदक उपस्थित होते हैं, जिसका लक्ष्य लगभग 1,000 पदों पर है। यह अन्य सरकारी नौकरियों की तलाश करने वाले लाखों लोगों से कम है (नीचे बताया गया)। प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद के संजीव सान्याल ने सीएसई कोचिंग को ₹प्रतिभाओं का व्यापक गलत आवंटन₹ कहा है, जो कि ₹ओपियम बेचने वाली माफिया₹ जैसा है चयन के लिए एक भाग्यशाली डुबकी अधिक मानवीय होगी। इससे देश के विकास में योगदान देने वाले अन्य सार्थक क्षेत्रों में लाखों लोगों का समय, धन और ऊर्जा बचाई जाएगी।

13 वर्ष की आयु के बच्चे उन में से 90 प्रतिशत से अधिक को खत्म करने के लिए डिज़ाइन की गई प्रणाली से असफलता का संदेश आंतरिक रूप से प्राप्त करते हैं, जिससे जीवन भर तक आघात, अवसाद और समय बर्बाद होने पर अपराध महसूस होता है। एनसीआरबी के भारत में अपराध 2023 के अनुसार, 2013 से 2023 तक भारत ने आत्महत्या करने वाले 1,17,849 छात्रों को खो दिया। यह संख्या अकेले 2023 में 13,892 की रिकॉर्ड ऊंचाई पर पहुंच गई, जो 2022 से 6.5 प्रतिशत बढ़ी। बाल अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र कन्वेंशन प्रत्येक बच्चे को अपनी व्यक्तित्व और प्रतिभाओं को अधिकतम क्षमता तक विकसित करने के साथ-साथ आराम, अवकाश और खेल का अधिकार प्रदान करता है (अनुच्छेद 31)।

भारत, एक हस्ताक्षरकर्ता के रूप में, ₹बच्चे के सर्वोत्तम हितों₹ को प्राथमिकता देने के सीआरसी के मूल सिद्धांत का पालन करने के लिए बाध्य है सुक्देब साह बनाम कोचिंग सेंटर में एक लड़की की आत्महत्या से प्रेरित। आंध्र प्रदेश राज्य ने जुलाई में प्रदर्शन के आधार पर बैच भेदभाव और सार्वजनिक शर्मिंदगी को प्रतिबंधित करने के लिए दिशानिर्देश जारी किए थे। मार्च में, अमित कुमार वी। भारत संघ, न्यायालय ने न्यायमूर्ति एस के नेतृत्व में एक राष्ट्रीय कार्यबल स्थापित किया था। रविंद्र भट्ट उच्च शिक्षा में सुधार की सिफारिश करेंगे। यूनिसेफ युवाह ₹ iDreamCareer भारत करियर आकांक्षा रिपोर्ट 2025 में पाया गया है कि केवल 10.4 प्रतिशत छात्रों के पास पेशेवर कैरियर परामर्श तक पहुंच है; 78 प्रतिशत को कोई बैकअप कैरियर योजना नहीं मिलती।

सर्वेक्षण में शामिल 21,239 छात्रों में से केवल 6 प्रतिशत ने अपनी ताकत और कमजोरियों की पहचान करने के लिए किसी भी उपकरण का उपयोग किया था, तथा बहुत कम लोगों को मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन तक पहुंच थी। इस मार्गदर्शन से इनकार करने वाले छात्र अनिश्चितता और अयोग्य सलाह के प्रति संवेदनशील हैं। इस करियर मार्गदर्शन के अंतराल का पहले से ही विनाशकारी परिणाम हुए हैं। हर साल, 22 मिलियन आवेदकों ने एक लाख केंद्र सरकार की नौकरियों के लिए आवेदन किया है। ये आकांक्षी लोग अपनी युवावस्था को न तो काम करते हैं और न ही किसी कौशल का निर्माण करते हैं। यदि कोई उम्मीदवार एक वर्ष बिताता है, तो यह बर्बादी वार्षिक रूप से 824 करोड़ मानव दिनों तक पहुंच जाती है, जो अग्रिम आर्थिक उत्पादन में 5.59 लाख करोड़ रुपये का प्रतिनिधित्व करती है। इस त्रासदी से बचा जा सकता हैः यदि छात्र कक्षा 10 के बाद से जानते हैं कि सरकारी नौकरी परीक्षाओं में 0.5 प्रतिशत की सफलता दर होती है, जो भारतीय राष्ट्रीय टीम तक पहुंचने वाले स्कूल क्रिकेटर की तुलना में अधिकतर बैकअप योजनाएं विकसित करेंगे, कौशल विकास का अनुसरण करेंगे या निजी क्षेत्र के करियर का पता लगाएंगे।

नीदरलैंड छात्रों को मार्गदर्शन करने के लिए 15 वर्ष की आयु में योग्यता और व्यक्तित्व मूल्यांकन का उपयोग करता है। साइप्रस, दक्षिण अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया, थाईलैंड और फिनलैंड सहित कई देशों के छात्र पेशेवर सहायता के साथ सूचित करियर और विषय चयन के लिए मनोवैज्ञानिक परीक्षण का उपयोग करते हैं। परीक्षाओं को कोचिंग-प्रतिरोधी, वैज्ञानिक योग्यता परीक्षण के रूप में पुनः कल्पना की जानी चाहिए, स्मृति प्रतियोगिता नहीं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 में ₹सैकड़ों विश्वविद्यालयों को अपनी-अपनी प्रवेश परीक्षा देने की बजाय₹ एक उच्च गुणवत्ता वाली सामान्य योग्यता परीक्षण का प्रस्ताव है भारत में पहले से ही विश्व स्तरीय मॉडल हैं।

सशस्त्र बलों के लिए सेवा चयन बोर्ड (एसएसबी) खुफिया, व्यक्तित्व, नेतृत्व और निर्णय का मूल्यांकन करता है। वर्ड एसोसिएशन, स्थिति प्रतिक्रिया और स्व-वर्णन जैसे परीक्षण सैन्य सेवा के लिए मनोवैज्ञानिक उपयुक्तता को मापते हैं। सिद्धान्तवादी नेताओं के निर्माण में सशस्त्र बलों की सफलता दिखाई देती है। एसएसबी द्वारा चुने गए अधिकारी लगातार अखंडता, लचीलापन और राष्ट्रीय हित के लिए बलिदान करने की इच्छा प्रदर्शित करते हैं। इसके विपरीत, एक ऐसी प्रणाली जो परीक्षा में सफलता को पुरस्कृत करती है, अक्सर सामग्री को नजरअंदाज कर देती है। इससे ऐसे पेशेवरों की पीढ़ी पैदा हो सकती है जो परीक्षण करने में कुशल हैं, लेकिन प्रशासनिक और राजनीतिक दबाव या नवाचार का सामना करने के लिए ताकत नहीं रख सकते। वैज्ञानिक नवाचारकों को खोजने के लिए भारत का राष्ट्रीय ओलंपियाड कार्यक्रम उठाया जा सकता है।

यदि ऐसे परीक्षाओं में केवल पात्रता स्कोर प्राप्त करने वाले छात्रों को जेईई या नीट के लिए बैठने का अधिकार दिया जाता, तो उम्मीदवारों की संख्या लाखों से घटकर कुछ हजार वास्तविक योग्य आकांक्षी हो जाती। ओलंपियाड असाधारण वैज्ञानिक प्रतिभा की पहचान करने के सबसे प्रभावी तरीकों में से एक साबित हुए हैं। अंतर्राष्ट्रीय गणित ओलंपियाड में हर चालीस स्वर्ण पदक विजेताओं में से एक बाद में प्रमुख विज्ञान पुरस्कार अर्जित करता है, जो एमआईटी के स्नातक छात्रों की तुलना में पचास गुना अधिक सफल होता है। ओपनएआई के आधे संस्थापकों ने ओलंपियाड में अपनी यात्रा शुरू की। हालांकि, यह प्रस्ताव कुलीनतावादी प्रतीत हो सकता है और ओलंपियाड से कम परिचित ग्रामीण और आर्थिक रूप से वंचित छात्रों को बाहर करने के लिए विरोध का सामना कर सकता है।

एनईपी को समग्र प्रगति, क्षमता-आधारित मूल्यांकन और व्यावसायिक शिक्षा के एकीकरण पर जोर देने के लिए जर्मन मॉडल पर पेशेवर अकादमियों के विकास में भारी निवेश की आवश्यकता होती है, जहां मेकाट्रॉनिक्स में ₹मास्टर शिल्पकार₹ का महत्व होता है और अक्सर सामान्य इंजीनियर से अधिक कमाई करता है। दक्षिण कोरिया का आर्थिक चमत्कार केवल डॉक्टरों द्वारा नहीं, बल्कि तकनीशियन और डिजाइनरों द्वारा भी बनाया गया था। नोबेल पुरस्कार विजेता अभिजित बनर्जी चेतावनी देते हैं कि ₹हमारे युवाओं के जीवन में मेरिटोक्रेसी का वर्चस्व है विश्व गुरु बनने की आकांक्षा रखने वाली राष्ट्र अपने युवाओं को नवाचार के बजाय याद करने में खर्च नहीं कर सकती।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

वीडियो अब भरोसेमंद नहीं: डीपफेक कैसे पहचानें

हम एक ऐसे युग में जी रहे हैं, जहाँ सच्चाई और झूठ के बीच की रेखा धुंधली पड़ चुकी है। तस्वीरें अब केवल यादों का आलम नहीं, बल्कि छल का जाल बुन सकती हैं। वीडियो अब सत्य का दर्पण नहीं, बल्कि धोखे का हथियार बन सकते हैं। और आवाज़ें? वे किसी और की नकल बनकर भरोसे को तार-तार कर सकती हैं। यह है कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) का डरावना चेहरा — डीपफेक। यह तकनीक इतनी विश्वसनीय और सजीव झूठ रचती है कि सच और झूठ का फर्क मिट जाता है। क्या हम इस खतरे से अनजान रह सकते हैं? कदापि नहीं।

डीपफेक: झूठ को सच बनाने वाली तकनीक

डीपफेक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन लर्निंग की वह तकनीक है, जो वास्तविक जैसे दिखने वाले नकली वीडियो, तस्वीरें या ऑडियो रचती है। 'डीप' यानी गहरी सीख (Deep Learning) और 'फेक' यानी नकली का मेल। यह तकनीक किसी के चेहरे, हावभाव, आवाज़ या बोलने के लहजे को विश्लेषित कर उसे इतनी कुशलता से पुनर्जनन करती है कि वह असली प्रतीत होता है। चाहे वह किसी राजनेता का फर्जी भाषण हो, किसी सेलिब्रिटी का बनावटी वीडियो, या आपके किसी करीबी की नकली आवाज़ — डीपफेक असंभव को संभव बना देता है। पहले यह तकनीक केवल विशेषज्ञों या बड़ी कंपनियों तक सीमित थी, लेकिन अब स्मार्टफोन ऐप्स और ऑनलाइन टूल्स ने इसे आम लोगों की उंगलियों पर ला दिया है। चंद क्लिक्स में कोई भी नकली सामग्री बना सकता है। यही सुगमता इसे घातक बनाती है।

डिजिटल युग का सामाजिक संकट

डीपफेक अब महज मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक, राजनीतिक और व्यक्तिगत स्तर पर गंभीर खतरा बन चुका है। इसके कुछ भयावह प्रभाव (i) राजनीतिक दुष्प्रचार — चुनावों में नेताओं के फर्जी बयान या भाषण वायरल होकर जनता को भटका सकते हैं। (ii) सामाजिक तनाव — किसी समुदाय के खिलाफ नकली वीडियो बनाकर नफरत और हिंसा को हवा दी जा सकती है। (iii) व्यक्तिगत बदनामी — खासकर महिलाओं को निशाना बनाकर उनकी छवि धूमिल करने के लिए डीपफेक का दुरुपयोग बढ़ रहा है। (iv) आर्थिक ठगी — किसी परिचित या बॉस की आवाज़ की नकल कर लोगों से धन उगाही की जा रही है। जब सत्य और असत्य का भेद करना इतना जटिल हो गया है, तो सवाल उठता है — आम आदमी इस डिजिटल भंवर से खुद को कैसे बचाए?

डीपफेक से बचाव: सजगता की सात कुंजियाँ

आज के डिजिटल दौर में डीपफेक का जाल हर उस व्यक्ति को फँसा सकता है जो आँख मूँदकर भरोसा कर लेता है। डीपफेक के जाल से बचने के लिए आपको तकनीकी विशेषज्ञ होने की जरूरत नहीं। केवल थोड़ी-सी सतर्कता, विवेक और जागरूकता ही इस छलावे का सबसे बड़ा तोड़ है। बस याद रखें — सच की रक्षा तकनीक नहीं, आपकी सजगता करेगी। सात सरल लेकिन असरदार कुंजियाँ, जो आपको डीपफेक के इस भ्रमजाल से सुरक्षित रख सकती हैं।

1. चेहरों की बारीकियों को परखें — डीपफेक वीडियो में चेहरों की गतिविधियाँ अक्सर अप्राकृतिक होती हैं। इन संकेतों पर गौर करें - आँखों की हरकत (पलकें कम झपकना, असामान्य टकटकी या मशीनी गति, होंठ और आवाज़ का तालमेल (बोल और होंठ की गति में असंगति), चेहरे की बनावट (धुंधलापन, अस्वाभाविक चमक या कृत्रिम रंगत)। यदि चेहरा ₹कुछ गलत₹ लगे, तो तुरंत संदेह करें।

2. आवाज़ की सत्यता की जाँच करें — AI-जनित नकली आवाज़ें मानवीय भावनाओं और स्वाभाविकता में कमी दिखाती हैं - रोबोटिक लहजा (आवाज़ एकसमान या भावहीन लग सकती है), भावनात्मक कमी (हँसी, ठहराव या स्वाभाविक उतार-चढ़ाव का अभाव)। यदि कोई परिचित व्यक्ति अजीब, भावहीन अंदाज़ में बोले, तो सतर्क हो जाएँ।

3. स्रोत की विश्वसनीयता परखें — किसी भी सामग्री को स्वीकार करने से पहले उसके स्रोत की पड़ताल करें। क्या यह किसी प्रतिष्ठित न्यूज़ चैनल या आधिकारिक सोशल मीडिया हैंडल से है? क्या अन्य विश्वसनीय स्रोत इसकी पुष्टि करते हैं? संदिग्ध स्रोतों पर आँख मूंदकर भरोसा न करें।

4. रिवर्स इमेज सर्च का उपयोग करें — Google या Bing जैसे प्लेटफॉर्म्स पर 'रिवर्स इमेज सर्च' करें। तस्वीर अपलोड करें और देखें कि क्या वह पहले किसी अलग संदर्भ में दिखाई दी है। यदि हाँ, तो यह संभवतः नकली है।

5. रोशनी और छाया का विश्लेषण करें — डीपफेक में प्रकाश और छाया की असंगतियाँ आम हैं। चेहरे पर रोशनी की दिशा पृष्ठभूमि से मेल नहीं खाती। छायाएँ गलत जगह पर या अप्राकृतिक दिखती हैं। इन छोटी-छोटी विसंगतियों को पकड़कर आप धोखे को पहचान सकते हैं।

6. भावनात्मक आवेग पर लगाम लगाएँ — डीपफेक का उद्देश्य अक्सर डर, गुस्सा या उत्तेजना भड़काना होता है। यदि कोई वीडियो या तस्वीर आपको तुरंत भावुक करे, तो ठहरें। पूछें, "क्या यह सच हो सकता है?" बिना सोचे-समझे शेयर करने से बचें।

समय जैन
साइबर सिक्योरिटी एनालिस्ट
सिडनी (ऑस्ट्रेलिया)

7. तकनीक का जवाब तकनीक से दें — Deepware Scanner, Reality Defender, या Hive Moderation जैसे टूल्स डीपफेक का पता लगाने में मददगार हैं। इनका उपयोग करें और तकनीक की शक्ति से झूठ को बेनकाब करें।

इन सरल कदमों के साथ, आप डीपफेक के इस डिजिटल युग में सच्चाई की रक्षा कर सकते हैं। सजग रहें, संदेह करें, और सत्य की खोज में अडिग रहें!

डीपफेक से लड़ाई: कानून, तकनीक और विवेक का मेल

भारत सरकार ने डीपफेक के खतरे को गंभीरता से लिया है। इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY) ने इस डिजिटल संकट से निपटने के लिए कानूनी ढांचे और तकनीकी उपायों को तेजी दी है। सोशल मीडिया मंचों को फर्जी सामग्री हटाने और चेतावनी लेबल लगाने के लिए कड़े दिशानिर्देश दिए गए हैं। लेकिन कानून और तकनीक का असर तभी होगा, जब समाज जागरूक और सशक्त होगा। स्कूलों और कॉलेजों में डिजिटल साक्षरता को अनिवार्य हिस्सा बनाना होगा। स्थानीय स्तर पर जागरूकता अभियान चलाकर लोगों को सतर्क करना जरूरी है। प्रत्येक नागरिक को यह समझना होगा कि डीपफेक केवल तकनीक नहीं, बल्कि सामाजिक भरोसे पर चोट है।

तकनीक चाहे जितनी चालाक हो, आपका विवेक और बुद्धि उससे कहीं अधिक बलशाली है। डीपफेक के खिलाफ सबसे बड़ा हथियार है—सवाल उठाना, संदेह करना और सत्य की पड़ताल करना। हर सनसनीखेज खबर पर आँख मूंदकर यकीन न करें। सोशल मीडिया पर 'फॉरवर्ड' बटन दबाने से पहले ठहरें और विचार करें। विश्वसनीय लोगों या विशेषज्ञों की सलाह लें। यह याद रखें - हर चमकती चीज सोना नहीं, और हर स्क्रीन पर दिखने वाली चीज सच नहीं।

डिजिटल धोखे से सावधान—सच्चाई अब आपकी जिम्मेदारी

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) ने हमें सुविधाएँ दीं, गति दी, लेकिन साथ ही एक नई चुनौती भी सौंपी—सत्य को परखने की। डीपफेक का यह युग हमें सिखाता है कि आँखों पर नहीं, बल्कि विवेक और तर्क पर भरोसा करना होगा। तस्वीरें अब सच का आलम नहीं, वीडियो झूठ का जाल बुन सकते हैं, और आवाजें किसी और की साजिश हो सकती हैं। लेकिन यदि हम सजग रहें, सवाल करें, और हर दावे की जाँच करें, तो इस डिजिटल भंवर से बच सकते हैं। अगली बार जब कोई वीडियो, तस्वीर या ऑडियो आपके सामने आए, तो रुकें। सोचें। जाँच करें। फिर फैसला लें। क्योंकि AI के इस युग का नया मंत्र है—"सोचो, परखो, तब मानो।" सच्चाई की रक्षा अब हमारे हाथों में है। इस जिम्मेदारी को निभाएँ और सत्य को अडिग रखें।

जनसंघ : जब राजनीति नहीं, राष्ट्रसेवा का युग आरंभ हुआ

भारतीय राजनीति के इतिहास में 21 अक्टूबर 1951 का दिन एक युगांतकारी मोड़ था, जब नेहरू युग की सेकुलर चमक को चुनौती देता हुआ राष्ट्रवाद का एक प्रखर दीपक प्रज्वलित हुआ। दिल्ली के राघुमल आर्य कन्या विद्यालय के सभागार में केवल 200 प्रतिनिधियों की उपस्थिति में जन्मा भारतीय जनसंघ महज एक राजनीतिक दल नहीं, बल्कि हिंदुत्व की वैचारिक क्रांति का प्रतीक था, जो भारत को उसके गौरवशाली अतीत से जोड़कर आधुनिक चुनौतियों का साहसपूर्वक सामना करने की प्रेरणा देता रहा। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी, प्रोफेसर बलराज मधोक और पंडित दीनदयाल उपाध्याय जैसे दूरदृष्टा नेताओं द्वारा स्थापित यह नींव आज विश्व की सबसे बड़ी राजनीतिक शक्ति—भारतीय जनता पार्टी—के रूप में सशक्त रूप से उभरी है। स्वतंत्रता के बाद के उस दौर में, जब विभाजन की त्रासदी के घाव हरे थे, शरणार्थी संकट चरम पर था और कश्मीर की विशेष स्थिति (अनुच्छेद 370) राष्ट्रीय एकता को चुनौती दे रही थी, जनसंघ का उदय एक अनिवार्य क्रांति बनकर सामने आया। यह दल कांग्रेस की पश्चिमी उदारवाद से प्रेरित नीतियों का प्रबल विरोधी था, जिसने 'एक देश, एक संस्कृति, एक संविधान' के संकल्प को अपनी धुरी बनाकर भारत के स्वाभिमान को नई दिशा दी।

1947 का भारत विभाजन, दो-राष्ट्र सिद्धांत की त्रासदी से जूझ रहा था, जिसने लाखों हिंदुओं को विस्थापित किया। लियाकत-नेहरू समझौता (1950) पाकिस्तान में हिंदू अल्पसंख्यकों की रक्षा में विफल रहा, और नेहरू की कश्मीर नीति (परमिट सिस्टम, अनुच्छेद 370) ने राष्ट्रीय एकता पर प्रश्न उठाए। गांधीजी की हत्या के बाद RSS पर प्रतिबंध से राष्ट्रवादी शक्तियां एकजुट हुईं। हिंदू महासभा से असंतुष्ट डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने RSS सरसंघचालक गोलवलकर के साथ मिलकर मई 1951 में एक नए आंदोलन की नींव रखी। 21 अक्टूबर 1951 को दिल्ली में भारतीय जनसंघ की स्थापना हुई, जो 'एकात्म मानववाद' पर आधारित वैचारिक क्रांति थी। जनसंघ ने आठ-सूत्री कार्यक्रम अपनाया: एकीकृत भारत, शरणार्थी पुनर्वास, स्वतंत्र विदेश नीति, उत्पादन वृद्धि, एकात्मक राष्ट्रीय संस्कृति, समान अधिकार, पिछड़े वर्गों का उत्थान, और गो-रक्षा। यह हिंदुत्व को लोकतांत्रिक ढांचे में ढालने का प्रयास था, जो गैर-हिंदुओं को स्वतंत्रता देता था, पर राष्ट्र-विरोधी तत्वों को खारिज करता था।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी, भारतीय जनसंघ के प्रखर शिल्पकार, ने अपनी दूरदर्शी दृष्टि से भारतीय राजनीति को नया दिशा-निर्देश दिया। कलकत्ता विश्वविद्यालय से कानून स्नातक, स्वतंत्रता संग्राम के नायक और हिंदू महासभा के अध्यक्ष रहे मुखर्जी ने नेहरू मंत्रिमंडल में उद्योग मंत्री के रूप में सेवा दी, लेकिन कश्मीर नीति पर मतभेद के कारण साहसपूर्वक इस्तीफा दे दिया। उनका कथन—"एक देश में दो विधान, दो प्रधान और दो निशान नहीं चलेंगे"—राष्ट्रीय एकता का प्रतीक बना। 1953 में कश्मीर यात्रा के दौरान उनकी गिरफ्तारी और रहस्यमयी मृत्यु ने देश को झकझोर दिया। दिसंबर 1952 के कानपुर अधिवेशन में उन्होंने जनसंघ को राष्ट्रीय दल का दर्जा दिलाया। प्रोफेसर बलराज मधोक, समर्पित आरएसएस प्रचारक और जम्मू-कश्मीर प्रजा परिषद के संस्थापक, ने संगठन को मजबूती दी। 1966 में जनसंघ के अध्यक्ष बने मधोक ने 'पोर्ट्रेट ऑफ ए मार्टिर' से मुखर्जी की विरासत को अमर किया। पंडित दीनदयाल उपाध्याय, जनसंघ की वैचारिक आत्मा, ने 1951 में उत्तर प्रदेश इकाई के गठन और 1965 में 'एकात्म मानववाद' के प्रतिपादन से व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की एकता को रेखांकित किया। उनका 'अंत्योदय' सिद्धांत—सबसे निचले व्यक्ति का उत्थान—मूलमंत्र बना। 1967 में अध्यक्ष बने उपाध्याय की 1968 में रहस्यमयी ट्रेन दुर्घटना में मृत्यु ने जनसंघ को आघात पहुंचाया, पर उनकी दार्शनिक विरासत आज भी भारतीय जनता पार्टी की प्रेरणा बनी हुई है।

भारतीय जनसंघ की प्रारंभिक यात्रा चुनौतियों से भरी थी, पर इसकी दृढ़ता अटल रही। 1951-52 के पहले लोकसभा चुनाव में 'दीपक' चिह्न के साथ 94 उम्मीदवारों ने 3.06% मतों के साथ 3 सीटें (पश्चिम बंगाल से डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी, दुर्गा चरण बनर्जी; राजस्थान से उमाशंकर त्रिवेदी) जीतीं। 1957 में 5.93% मतों के साथ 4, 1962 में 6.44% के साथ 14, और 1967 में 9.31% मतों के साथ 35 सीटें जीतकर जनसंघ ने अपनी ताकत दिखाई। इस दौरान कांग्रेस का बहुमत कमजोर हुआ, और जनसंघ ने दिल्ली में 7 में से 6 सीटें जीतकर महानगर निगम पर कब्जा किया। राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, बिहार और हरियाणा में गैर-कांग्रेस सरकारों के गठन में इसकी निर्णायक भूमिका रही। 1966 का गौरक्षा आंदोलन जनसंघ की पहचान बना, जिसने गो-हत्या पर प्रतिबंध की मांग को राष्ट्रीय स्वर दिया। जनसंघ के घोषणा-पत्र में यूनिफॉर्म सिविल कोड, इजरायल से कूटनीतिक संबंध, परमाणु हथियार विकास और कश्मीर का पूर्ण एकीकरण जैसे साहसिक मुद्दे शामिल थे। विदेश नीति में सोवियत संघ के प्रति सतर्कता और चीन-पाकिस्तान के प्रति कठोर रुख अपनाया गया। 1962

के चीन युद्ध और 1965 के पाकिस्तान युद्ध ने संघ परिवार को राष्ट्र की चेतना का प्रतीक बनाया, जब आरएसएस को पुलिस ड्यूटी जैसे दायित्व मिले, जिसने उनकी राष्ट्रभक्ति को और मजबूत किया।

1975-77 का आपातकाल जनसंघ के लिए अग्निपरीक्षा था। इंदिरा गांधी की तानाशाही के खिलाफ जयप्रकाश नारायण के आंदोलन में जनसंघ के नेता, जैसे अटल बिहारी वाजपेयी और लालकृष्ण आडवाणी, जेल में थे या भूमिगत संघर्ष कर रहे थे। 1977 के चुनाव में जनसंघ ने जनता पार्टी के गठन में अहम भूमिका निभाई, कांग्रेस को सत्ता से हटाया, और विदेश व सूचना प्रसारण जैसे मंत्रालय हासिल किए। 1979 में दोहरी सदस्यता विवाद से जनता पार्टी टूटी, और 6 अप्रैल 1980 को दिल्ली के फिरोजशाह कोटला में वाजपेयी व आडवाणी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की स्थापना हुई। भाजपा ने जनसंघ की पांच निष्ठाओं—संविधान, राष्ट्रवाद, लोकतंत्र, हिंदुत्व, और एकात्म मानववाद—को अपनाया। 1984 में 2 सीटों से शुरू होकर, 1989 के राम मंदिर आंदोलन ने गति दी। 1996 में अल्पमत सरकार, 1998-2004 में वाजपेयी की एनडीए सरकार ने पोखरण परीक्षण, कारगिल विजय, गोल्डन क्वाड्रिलेटरल, और आईटी क्रांति जैसे कदम उठाए। 2014 में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा ने 282 सीटों के साथ पूर्ण बहुमत हासिल किया।

2025 तक भाजपा ने जनसंघ के स्वप्नों को साकार किया। 2014 से मोदी सरकार ने प्रति व्यक्ति जीडीपी में उल्लेखनीय वृद्धि की, जिससे आर्थिक समृद्धि को नया आयाम मिला। 'मेक इन इंडिया' ने वैश्विक निवेश आकर्षित किया, शासन, विकास और प्रदर्शन (जीडीपी) को नया अर्थ दिया। महामारी में 200 करोड़ वैक्सीन खुराकें, अनुच्छेद 370 की समाप्ति (2019), ट्रिपल तलाक पर रोक (2019), राम मंदिर उद्घाटन (2024) और पूर्ण निर्माण (2025), चेनाब रेल ब्रिज (2025) जैसे कदमों ने भारत की आधुनिकता और सांस्कृतिक गौरव को रेखांकित किया। बुनियादी ढांचे में राजमार्ग निर्माण 12 से 34 किमी/दिन, मेट्रो नेटवर्क 248 से 1,013 किमी तक विस्तारित हुआ। डिजिटल इंडिया ने यूपीआई को 49% वैश्विक लेनदेन हिस्सेदारी दी (अप्रैल 2025 में 24 लाख करोड़ लेनदेन)। आयुष्मान भारत ने 50 करोड़ लोगों को स्वास्थ्य कवर, उज्ज्वला ने 10 करोड़ गैस कनेक्शन, जन धन ने 50 करोड़ बैंक खाते खोले। 2024 में एनडीए की जीत ने मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाया, भाजपा 20 राज्यों में शासन के साथ विश्व की सबसे बड़ी राजनीतिक शक्ति बनी। पूर्वोत्तर विकास, महिला सशक्तिकरण (मातृ मृत्यु दर में कमी), और नाभिकीय नीति पुनरावलोकन ने भाजपा की राष्ट्रीय-वैश्विक नेतृत्व छवि को मजबूत किया।

जनसंघ से भाजपा तक की यह यात्रा त्याग, संघर्ष और विजय की एक अमर गाथा है। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की कश्मीर यात्रा से लेकर नरेंद्र मोदी द्वारा अनुच्छेद 370 के उन्मूलन तक, पंडित दीनदयाल उपाध्याय के 'अंत्योदय' सिद्धांत से लेकर वर्तमान की जनकल्याणकारी योजनाओं तक—हर कदम राष्ट्र की अखंडता और समृद्धि का प्रतीक है। 2025 में, जब भारत वैश्विक मंच पर अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करा रहा है, जनसंघ की स्थापना हमें सिखाती है कि अटल इच्छाशक्ति और सच्चा राष्ट्रवाद ही देश को नई ऊंचाइयों तक ले जाता है। यह प्रज्वलित लौ कभी मंद न पड़े, यही डॉ. मुखर्जी, प्रोफेसर बलराज मधोक और दीनदयाल उपाध्याय की सच्ची श्रद्धांजलि होगी। जनसंघ का उद्घोष आज भी हृदय में गूंजता है: भारत पहले, भारत अंतिम, भारत सदा सर्वदा।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी

नुआपाड़ा उपचुनाव में कौन होगा बाजीगर , भाजपा, बीजद या कांग्रेस!

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुवनेश्वर: यह तीनों दलों, भाजपा, बीजद और कांग्रेस, के नेतृत्व की परीक्षा है। कांग्रेस के घासीराम माझी, बीजद की स्नेहागिनी छुरिया और भाजपा के जय ढोलकिया उम्मीदवार बने हैं।

सबसे पहले, कांग्रेस पार्टी ने अपनी पार्टी के घासीराम माझी को टिकट देकर मैदान में उतारा है। उनका अपना वोट बैंक है। श्री माझी 24 सीटों पर कांग्रेस का टिकट न मिलने पर निर्दलीय चुनाव लड़े थे और उन्हें 51 हज़ार वोट मिले थे। उनके लिए एक और अच्छी बात यह है कि नुआपाड़ा विधानसभा सीट कालाहांडी संसदीय क्षेत्र में आती है। कालाहांडी से सांसद और केंद्र में मंत्री बने प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष भक्त दास के कुछ वोट नुआपाड़ा में हैं। इसीलिए भक्त दास अकेले चुनाव लड़ रहे हैं। नुआपाड़ा में कांग्रेस अच्छी स्थिति में है। फिलहाल कांग्रेस के नेता रमेश जेना, मोहम्मद मोकिम, सोफिया फिरदोस और युवा कांग्रेस अध्यक्ष ने रमेश जेना जैसे युवा नेतृत्व को चुनाव प्रचार से दूर रखा है। रमेश जेना ऐसे ही नेताओं में से एक हैं जो बीजद के गढ़ गंजाम से एकमात्र कांग्रेस विधायक बने और नवीन पटनायक को चुनौती दी। इसी तरह, सीए नेता मोहम्मद मोकिम ने कटक जैसी सम्मानजनक सीट पर बीजद को हराकर कटक में जीत हासिल की। उनकी बेटी सोफिया फिरदोस वर्तमान में कटक से विधायक हैं। ऐसे संगठनात्मक नेताओं की अनदेखी कांग्रेस के लिए नुकसानदेह हो सकती है। अगर कांग्रेस चुनाव जीतती है, तो श्री दास जीत का सारा श्रेय ले जाएंगे। अगर कांग्रेस हारती है, तो अध्यक्ष पद खतरे में पड़ जाएगा। फिर पीसीसी अध्यक्ष को हटाने के लिए जुट जाएगी। नंदू ढाल बीस हजार कार्यकर्ताओं के साथ कांग्रेस में शामिल होने आए हैं और इसमें जुटे हैं नंदू ढाल इस बात पर शोर मचा रहे हैं कि भक्त दास की जनता दल और समता पार्टी में रहते हुए उन्होंने कांग्रेस के ख़िलाफ़ क्या-क्या कहा था और उन पर कितने मुक़दमे हैं, सबकी चर्चा हो रही है। ज़्यादा से ज़्यादा लोगों तक पहुँचने के लिए कांग्रेस बड़ी सभाएँ करने की बजाय छोटी-छोटी सभाएँ कर रही है।

भाजपा ने जय ढोलकिया को मैदान में उतारा है। सीए दिवंगत बीजद विधायक राजेंद्र ढोलकिया के बेटे हैं। सीए बीजद से भाजपा में शामिल हुए थे। श्री ढोलकिया वर्तमान में राज्य भाजपा अध्यक्ष मनमोहन सामल और मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी के नेतृत्व में चुनाव लड़ रहे हैं। भाजपा पार्टी में सब कुछ ठीक नहीं चल रहा है, किसी को भी कैबिनेट में पदोन्नत नहीं किया गया है या निगम और बोर्ड अध्यक्ष के पद आवंटित किए गए हैं। यह केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान, मनमोहन सामल और मुख्यमंत्री मोहन माझी के बीच टकराव के कारण है। श्री प्रधान सरकार में महत्वपूर्ण नहीं हैं, किसी कारण से, प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने उनके ही क्षेत्र में एक बैठक की, लेकिन श्री प्रधान उस बैठक से अनुपस्थित थे, जो यह दर्शाता है। 2014 के बाद से, प्रधान मोदी ने श्री प्रधान के बिना एक भी बैठक या रोड शो नहीं किया है। इसीलिए उन्होंने पिछली बार भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष बसंत पांडा के बेटे को मैदान में उतारा था, लेकिन उन्हें मैदान में उतारने के बजाय, वे बीजद से जय ढोलकिया को ले आए बसंत - भाजपा के पूर्व अध्यक्ष, विधायक और सांसद, उन्हें राजनीति की खातिर अपने दुश्मन से हाथ मिलाने के लिए मजबूर होना पड़ा। देवदुलाब एक कार्यकर्ता हैं लेकिन राजनीतिक गणना में निराश हैं। सीए जानते हैं कि अगर जय ढोलकिया जीत गए तो उनके बेटे की राजनीति भाजपा में अंधकारमय हो जाएगी। इसलिए, वह अपनी इच्छा के विरुद्ध भाजपा के लिए प्रचार कर रहे हैं, जैसा कि उनके तीन मिनट के भाषण से स्पष्ट है। इसीलिए बीजद का कहना है कि भाजपा, भाजपा की पार्टी चुरा रही है। वर्तमान प्रश्न यह है कि यदि भाजपा जीतती है, तो सारा श्रेय मुख्यमंत्री और राष्ट्रपति को जाएगा और यह ओडिशा के लोगों के सामने साबित हो जाएगा कि हम एक अच्छे संदेश के साथ धर्मेंद्र के समर्थन के बिना भी चुनाव जीत सकते हैं। बेशक, श्री प्रधान को स्टार प्रचारक के रूप में रखा गया है, लेकिन भाजपा अध्यक्ष और मुख्यमंत्री के नेतृत्व में चुनाव लड़ रही है। लेकिन श्री जय को भाजपा कार्यकर्ताओं द्वारा स्वीकार नहीं किया जा रहा है। जय ढोलकिया सभी भाजपा कार्यकर्ताओं को एकजुट करने और 15 महीनों में मोहन सरकार की उपलब्धियों को लोगों तक पहुँचाने की कोशिश कर रहे हैं चूंकि भाजपा सत्ता में आने के बाद पहली बार उपचुनाव लड़ रही है, इसलिए यह पार्टी के लिए सम्मान का प्रश्न बन गया है। चुनावी रणनीति के पहले चरण में, पार्टी ने अयोग्य घोषित बीजद विधायक के बेटे जय ढोलकिया को अपनी ओर से चुनाव लड़ाने में सफलता प्राप्त की है।

स्नेहागिनी छुरिया को मैदान में उतारकर बीजद ने महिला कार्ड खेला है। भाजपा द्वारा दिवंगत बीजद विधायक राजेंद्र ढोलकिया के बेटे जय ढोलकिया को मैदान में उतारने के बाद, बीजद दुविधा में थी कि किसे मैदान में उतारा जाए। अंततः अठाबिरा की बीजद सदस्य और बीजू महिला जनता दल की अध्यक्ष स्नेहगिनी छुरिया, जो बड़े अंतर से हार गई थीं, बरगढ़ जिले से नेता को लाकर नुआपाड़ा से चुनाव लड़ाया। बीजद के कई नेता कांग्रेस में शामिल हो गए। बूथ प्रबंधन में बीजद सबसे आगे है, चुनाव जीतने में माहिर है, लेकिन उस समय सरकारी मशीनरी उसके हाथ में थी। इस बार चुनाव बिना सरकारी मशीनरी के लड़ा जा रहा है। बीजद की एकमात्र उम्मीद नवीन पटनायक हैं। इसलिए, बीजद ने पार्टी सुप्रीमो नवीन पटनायक को प्रचार के मैदान में लाने की रणनीति बनाई है। बीजद विधायक कैप्टन दिव्यशंकर मिश्रा ने कहा कि उन्होंने पश्चिमी ओडिशा के नेता नवीन से मुलाकात की है और उनसे नुआपाड़ा में प्रचार करने का अनुरोध किया है। उन्होंने कहा, नेताओं के अनुरोध के बाद नवीन के अभियान कार्यक्रम को अंतिम रूप दिया गया है। नवीन दो बार प्रचार करने नुआपाड़ा जाएंगे। नवीन के नुआपाड़ा पहुंचने के बाद, कांग्रेस और भाजपा के सभी अनुमान गलत हो जाएंगे। अगर नवीन ने हाथ हिलाया, तो सभी अनुमान उलट जाएंगे। सभी वोट बीजद के पक्ष में जाएंगे। बीजद का कहना है कि भाजपा पार्टी से पार्टी चुरा रही है, लेकिन बीजद भूल जाती है कि जब सीए सत्ता में थी, तो उसने बीजेपुर उपचुनाव में निष्कासित कांग्रेस विधायक सुबल साहू की पत्नी रीता साहू को मैदान में उतारा था। फिर आपने पार्टी चुरा ली। बीजद के पास इस पर बोलने का कोई नैतिक अधिकार नहीं है। अगर बीजद नुआपाड़ा हार जाती है, तो यह बीजद के लिए एक बड़ा नुकसान होगा। यह चुनाव नवीन पटनायक की लोकप्रियता और बीजद का भविष्य तय करेगा।

बाबू कर रहे मुख्यमंत्री के आदेशों की अवहेलना, मुख्यमंत्री के आदेशों का जमीनी स्तर पर नहीं हो रहा पालन

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : मुख्यमंत्री के निर्देशों का पालन नहीं कर रहे अधिकारी। 6 विभाग जनसंहार को महत्व नहीं दे रहे। 6 विभाग लोगों की शिकायतों के समाधान को महत्व नहीं दे रहे हैं। जिसके कारण लगभग 38 हज़ार लोगों की शिकायतों का समाधान नहीं हो पा रहा है। इस संबंध में सरकार द्वारा बार-बार पत्र लिखे जाने के बावजूद, संबंधित विभाग प्रमुखों को 15 तारीख को फिर से फटकार लगाई गई है लोक प्रशासन विभाग की रिपोर्ट सार्वजनिक होने के बाद सच्चाई सामने आई। जल संसाधन, महिला एवं बाल विकास, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, पंचायती राज, इस्पात एवं खान तथा स्कूल एवं लोक शिक्षा विभागों में शिकायत समाधान दर अन्य विभागों की तुलना में काफी कम है।

पंचायती राज विभाग में 20,544 शिकायतें अभी भी लंबित हैं, जबकि महिला एवं बाल कल्याण विभाग में 2,319 शिकायतें लंबित हैं। इसी प्रकार, जल संसाधन विभाग में 1,446, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग में 4,988, स्कूल एवं लोक शिक्षा विभाग में 8,652 और खान एवं इस्पात विभाग में 506 शिकायतें लंबित हैं। पंचायती राज विभाग के अलावा अन्य 5 विभागों में शिकायत समाधान दर 80 प्रतिशत से भी कम है। इस बीच, राज्य के 40 विभागों को 4,99,851 शिकायतें प्राप्त हुई हैं, जबकि सितंबर में सरकार को 17,111 शिकायतें प्राप्त हुई थीं। सितंबर तक, राज्य के 40 विभागों में 66,868 शिकायतें दर्ज की गई हैं। विपक्ष इसे लेकर सरकार पर हमला बोल रहा है।

बीजद ने कहा कि मुख्यमंत्री का नरसंहार एक तमाशा बन गया है। सरकार सिर्फ़ तस्वीरें खिंचवाकर और उन्हें सोशल मीडिया पर पोस्ट करके पुरानी सरकार को गिराने की कोशिश कर रही है। दरअसल, लोगों की समस्याओं का समाधान नहीं हो रहा है। जब तक विकास की मानसिकता नहीं बनेगी, तब तक समस्याओं का समाधान नहीं होगा। व्यवस्था में बदलाव की ज़रूरत है। लोक प्रशासन विभाग ने इस तथ्य को स्वीकार किया है। सरकार को भी इस तथ्य को स्वीकार करना चाहिए, बीजद ने कहा। इस बीच, कांग्रेस ने भी इसी तरह इसकी आलोचना की है। सरकार में नेतृत्व और प्रशासनिक नेतृत्व की कमी है। अधिकारी मुख्यमंत्री की बात नहीं सुनते। वे फ़ाइल को हाथ नहीं लगाते। मंत्रियों के बीच कोई समन्वय नहीं है। कांग्रेस ने भाजपा सरकार पर पिछले 15 महीनों में ओडिशा को बहुत पीछे ले जाने का आरोप लगाया है। हालाँकि, भाजपा ने इस आरोप का खंडन करते हुए कहा कि मुख्यमंत्री मोहन माझी दिन भर लोगों की शिकायतें सुन रहे हैं। बदलाव अचानक नहीं होता। भाजपा ने कहा है कि जनसंहार की उचित सुनवाई के माध्यम से लोगों की समस्याओं का समाधान किया जा रहा है। ढेंकानाल से लेकर हर जिले मे इसी तराह की दिखाई दे रहा है।

"गिरि गोवर्धन पूजा" तृतीय वार्षिक-25,

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भुवनेश्वर: खंडगिरि पर्वत से जुड़े सभी भक्तों और सभी साधु-संतों, संतों और संन्यासियों को विनम्र सूचित किया जाता है कि,

"गिरि गोवर्धन पूजा" कार्यक्रम बुधवार, 22.10.25 रिख को प्रातः 9:00 बजे से दोपहर 12:00 बजे तक श्री जगन्नाथ चेतना महासत्संग द्वारा आयोजित किया जाएगा।

अतः सभी भक्तों से अनुरोध है कि वे महाकार्तिक माह में महाकार्तिक महाराज की पूजा करें और धर्म लाभ कमाएँ।

वे अपने साथ आलती, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, मुरुज आदि लाएँगे और वहाँ कार्तिक मुरुज भी लगाएँगे।

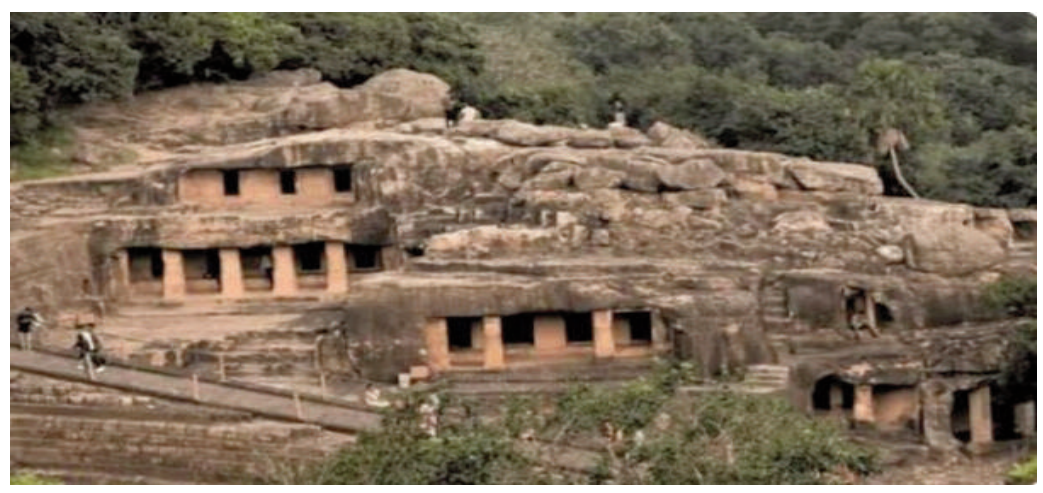

गोवर्धन पूजा से श्रद्धा बढ़े, दिखावा नहीं....

"कृष्ण का पर्व हमें सिखाता है कि असली भक्ति धरती, गाय और करुणा में है, कैमरे की चमक में नहीं।"
गोवर्धन पूजा केवल भगवान कृष्ण का पर्व नहीं, बल्कि प्रकृति, गाय और धरती के प्रति कृतज्ञता का प्रतीक है। यह हमें सिखाता है कि सच्ची भक्ति दिखावे में नहीं, संवेदना में है। आज जब पूजा इंस्टाग्राम की तस्वीर बन चुकी है और गोबर की जगह प्लास्टिक ने ले ली है, तब ज़रूरत है श्रद्धा के वास्तविक अर्थ को समझने की। गोवर्धन पर्व हमें याद दिलाता है कि मिट्टी, जल और जीव-जंतु की सेवा ही असली आराधना है। पूजा तब पूर्ण होती है जब धरती मुस्कुराती है, न कि सिर्फ़ कैमरा।

डॉ. सत्यवान सौरभ

दीपों की कतारें अभी बुझी भी नहीं होतीं कि अगली सुबह गोवर्धन पर्व आ जाता है। यह त्योहार केवल भगवान कृष्ण की पूजा नहीं, बल्कि प्रकृति, गोवंश और सामूहिक श्रम के प्रति कृतज्ञता का उत्सव है। यह पर्व उस सादगी, मिट्टी की सुगंध और मन की पवित्रता का प्रतीक है, जो भारतीय संस्कृति की जड़ों में रची-बसी है। लेकिन जब श्रद्धा का अर्थ केवल दिखावे, फोटो और स्टेटस तक सीमित रह गया हो, तब "गोवर्धन पूजा से श्रद्धा बढ़े" कहना एक कामना भी है और एक चेतावनी भी।

कृष्ण की कथा में गोवर्धन पूजा का मूल भाव बहुत गहरा है। जब इंद्र के अहंकार से तंग आकर गोकुलवासी भीषण वर्षा में डूबने लगे, तब बालक कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को अपनी कनिष्ठा उंगली पर उठा लिया। इस घटना को केवल एक चमत्कार के रूप में देखना उसके अर्थ को छोटा करना है। असल में यह एक सामाजिक प्रतीक है। यह हमें बताती है कि जब सत्ता अहंकार में अंधी हो जाती है, तब जनसाधारण को अपने सामूहिक साहस से संकट से निकलना पड़ता है। कृष्ण ने गोवर्धन पूजा की परंपरा इसलिए शुरू की ताकि लोग प्रकृति, गोमाता और अपनी श्रमशक्ति को देवत्व के रूप में स्वीकारें—क्योंकि वही असली सहायक हैं, न कि केवल आकाश के देवता।

गोवर्धन पूजा दरअसल प्रकृति पूजा है। गाय, गोबर, गोचर भूमि—ये सब उस पारिस्थितिकी का हिस्सा हैं जिसने भारतीय जीवन को आत्मनिर्भर बनाया। जब हम गोबर, मिट्टी और फूलों से गोवर्धन बनाते हैं, तो वह धरती और पर्यावरण के प्रति हमारी श्रद्धा का प्रतीक होता है। वह एक स्मरण है कि यह मिट्टी ही हमारी असली माता है, जो हर बीज को अंकुरित कर हमें अन्न देती है। लेकिन आज के दौर में यह सब प्रतीक धीरे-धीरे खोते जा रहे हैं। गोबर की जगह प्लास्टिक की सजावट ने ले ली है, मिट्टी की गंध पर परफ्यूम का कब्जा हो गया है। गोवर्धन पूजा अब इंस्टाग्राम पोस्ट बन गई है—जिसमें "हैप्पी गोवर्धन पूजा" के स्टिकर तो हैं, पर गाय के लिए चारा नहीं। श्रद्धा अब धरती पर नहीं, स्क्रीन पर चमकती है।

कृष्ण ने कहा था—"कर्मण्येवाधिकारस्ते।" लेकिन हमने कर्म छोड़कर कर्मकांड को पकड़ लिया। पूजा अब उस भावना से दूर जा रही है जिसमें सामूहिकता, सहयोग और संवेदना थी। पहले गाँवों में सब मिलकर गोवर्धन बनाते थे, बच्चे गोबर लाते, महिलाएँ फूल सजातीं, पुरुष दीप रखते। वह सामूहिक श्रम और सादगी का पर्व था, जिसमें न कोई प्रतियोगिता थी, न तुलना। आज हर घर में अलग-अलग पूजा होती है—मानो यह अहंकार का गोवर्धन हो गया हो। श्रद्धा भी अब प्रदर्शन बन गई है, जिसमें पूजा का असल अर्थ खो गया है।

भारत का सबसे बड़ा विरोधाभास यही है कि हम गाय को "माता" कहकर आँसू बहाते हैं, लेकिन सड़कों पर वही गाय भूख और दर्द से मरती है। गोवर्धन पूजा का केंद्र ही गाय है, और हम उसी केंद्र को भुला चुके हैं। यह कैसी श्रद्धा है जो दीप जलाती है पर एक मुट्ठी चारा देने में कंजूसी करती है? पूजा का अर्थ केवल आरती नहीं, जिम्मेदारी भी है। जब तक हम गोवंश, जल, मिट्टी और वृक्षों के प्रति करुणा नहीं दिखाएँगे, तब तक हमारी पूजा अधूरी रहेगी।

त्योहार अब भक्ति नहीं, भोग का उत्सव बनते जा रहे हैं। गोवर्धन पूजा भी अब "सेल्फी सीज़न" का हिस्सा बन गई है। प्रसाद, थाल और पूजा की तस्वीरें सोशल मीडिया पर अपलोड करने की होड़ लग जाती है। लेकिन असली भोग—जो सेवा,

संतोष और सादगी में था—वह कहीं खो गया है। हमारी दादी-नानी के समय यह पर्व मिट्टी और मेहनत की खुशबू से भरा होता था। अब यह कृत्रिम रोशनी और दिखावे का तमाशा बन गया है। श्रद्धा अब कैमरे की फ्लैश पर निर्भर है, आत्मा की रोशनी पर नहीं।

अगर कृष्ण आज होते, तो शायद पूछते—क्या तुम सच में गोवर्धन बना रहे हो, या गोवर्धन के मूल अर्थ को मिटा रहे हो? क्या तुम्हारी पूजा में धरती की गंध है या केवल मॉल की सुगंध? क्या तुम्हारी आरती में गाय की घंटी की आवाज़ है या मोबाइल के नोटिफिकेशन की? ये सवाल हमारे भीतर की श्रद्धा की जाँच करते हैं। क्योंकि भक्ति तभी सार्थक होती है जब वह दूसरों के सुख-दुख में सहभागी बनती है।

ग्रामीण भारत में आज भी यह पर्व आत्मीयता से मनाया जाता है। गाँव की गलियों में बच्चे नंगे पैर गोबर इकट्ठा करते हैं, महिलाएँ पारंपरिक गीत गाती हैं—"गोवर्धन धर्यो गिरधारी।" वहाँ पूजा में सादगी है, पर दिल है। वहीं शहरी भारत में गोवर्धन पूजा "रील" बन चुकी है—पाँच मिनट की पूजा, फिर पिज़्ज़ा पार्टी। यह फर्क बताता है कि विकास ने हमें सुविधा तो दी, पर संवेदना छीन ली। हमारी आधुनिकता ने हमें अपने ही मूल से काट दिया है।

जब जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय संकट मानवता के सामने सबसे बड़ा खतरा बन चुके हैं, तब गोवर्धन पूजा का महत्व और भी बढ़ जाता है। यह पर्व हमें सिखाता है कि ईश्वर से प्रार्थना करने से पहले हमें धरती के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिए। यह वह समय है जब हमें गोवर्धन पूजा की व्याख्या को नये अर्थों में देखना चाहिए—केवल धर्म नहीं, बल्कि जीवनशैली के रूप में। अगर हम इस दिन पेड़ लगाएँ, गोशाला में सेवा करें, तालाब साफ़ करें, पशुओं को भोजन दें—तो वही सच्ची श्रद्धा होगी।

श्रद्धा का अर्थ केवल झुकना नहीं, जुड़ना है—धरती से, जल से, पशु से, मनुष्य से। जब श्रद्धा जिम्मेदारी के साथ जुड़ती है, तभी वह भक्ति बनती है। वरना वह सिर्फ रस्म रह जाती है। कृष्ण का गोवर्धन पर्व हमें यही सिखाता है—कि असली धर्म दूसरों के लिए खड़ा होना है।

कृष्ण ने इंद्र का अहंकार तोड़ा था, लेकिन आज हमारे भीतर भी ऐसे सैकड़ों इंद्र पल रहे हैं—लालच, ईर्ष्या, उपभोग, दिखावा और अधिकार की अंधी चाह। हमें इन इंद्रों को शांत करने के लिए अपने भीतर एक गोवर्धन उठाना होगा। वह गोवर्धन कोई पत्थर का पहाड़ नहीं, बल्कि विवेक, संयम और करुणा का पहाड़ है, जिसे हम सबको मिलकर थामना है।

गोवर्धन पूजा का एक और गहरा पक्ष है—यह पर्व सामूहिकता का उत्सव है। जब गोवर्धन के नीचे सारा गोकुल एकत्र हुआ था, तब किसी ने किसी की जात, पद या संपत्ति नहीं पूछी थी। सब एक ही छत के नीचे थे—बराबर, सुरक्षित, जुड़ाव में। यह दृश्य बताता है कि संकट के समय समाज को एकता में रहना चाहिए। पर आज हम अपने-अपने घरों के भीतर बंद हैं, पूजा भी निजी हो गई है, और समाज से संबंध केवल औपचारिक रह गए हैं। हमें फिर वही सामूहिकता लौटानी होगी, जिसमें साथ रहना भी पूजा है।

यह पर्व हमें यह भी सिखाता है कि शक्ति का अर्थ केवल भौतिक बल नहीं होता। जब बालक कृष्ण ने पर्वत उठाया था, तब वह शारीरिक नहीं, नैतिक शक्ति थी। आज के युग में वह नैतिक शक्ति सबसे बड़ी कमी बन गई है। हमें हर घर में, हर हृदय में एक छोटा-सा गोवर्धन बनाना होगा—जहाँ श्रद्धा, सादगी और करुणा एक साथ बसें।

अगर गोवर्धन पूजा का सच्चा पालन करना है, तो तीन संकल्प लेने होंगे। पहला, प्रकृति के प्रति कृतज्ञता—हर पूजा के बाद एक पेड़ लगाना या किसी पशु को भोजन देना। दूसरा, सादगी का पुनर्जागरण—दिखावे की जगह सच्चे भाव अपनाना। और तीसरा, सामूहिकता का पुनर्स्थापन—पूजा को फिर से मिल-जुलकर मनाने की परंपरा लौटाना, ताकि समाज में संवाद और संवेदना जिंदा रहे।

आज का समय ऐसा है जब श्रद्धा की परिभाषा बदल रही है। श्रद्धा अब विज्ञापनों और प्रचार में दिखने लगी है, पर जीवन से गायब हो रही है। हम मंदिरों में झुकते हैं, पर किसी घायल गाय या भूखे इंसान के आगे नहीं रुकते। हम दीये जलाते हैं, पर अपने मन के अंधकार से डरते हैं। यही वह विच्छेदन है जो हमें भीतर से खोखला बना रहा है। गोवर्धन पूजा उस खोखलेपन को भरने का अवसर है—अगर हम चाहें तो।

यह पर्व केवल धार्मिक कृत्य नहीं, बल्कि नैतिक अनुबंध है—मनुष्य और प्रकृति के बीच। यह याद दिलाता है कि देवता की पूजा से पहले धरती की सेवा जरूरी है। गोवर्धन पर्वत अब कोई भौतिक शिला नहीं, बल्कि हमारे भीतर का आत्मबल है, जो संकट के समय खड़ा रहता है। इंद्र अब कोई स्वर्गीय देव नहीं, बल्कि हमारी इच्छाओं का प्रतीक है, जो हर सुख पर वर्षा की तरह गिरना चाहता है। और कृष्ण वह विवेक है जो उसे संयम सिखाता है।

जब हम कहते हैं "गोवर्धन पूजा से श्रद्धा बढ़े", तो इसका अर्थ केवल पूजा-पाठ की बढ़ोतरी नहीं, बल्कि आस्था की गहराई से है। श्रद्धा वह शक्ति है जो हमें कर्तव्य के प्रति सचेत करती है। अगर श्रद्धा बढ़ी, तो समाज में संवेदना बढ़ेगी; अगर श्रद्धा गहरी हुई, तो राजनीति में नैतिकता लौटेगी; अगर श्रद्धा सच्ची हुई, तो पर्यावरण बचेगा।

हमारे समाज को आज एक ऐसे गोवर्धन की ज़रूरत है जो दिखावे के नहीं, दायित्व के पत्थरों से बना हो। एक ऐसे पर्व की, जो हमें सजावट नहीं, सच्चाई सिखाए। एक ऐसी श्रद्धा की, जो सोशल मीडिया पर नहीं, समाज के भीतर बसे। गोवर्धन पूजा का सार यही है—जहाँ प्रकृति, पशु और मनुष्य एक सूत्र में बंधे हों।

कृष्ण का संदेश बहुत सीधा है—"जब संकट आये, तो पर्वत उठाओ, पर मिलकर।" यही वह पंक्ति है जो आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी तब थी। अगर हम गोवर्धन पूजा के दिन अपने भीतर यह संकल्प लें कि हम दिखावे से अधिक जिम्मेदारी निभाएँगे, तो यही पूजा सबसे पवित्र होगी।

गोवर्धन पूजा हमें याद दिलाती है कि मिट्टी में ही जीवन की सबसे सच्ची सुगंध है, और उसी मिट्टी से हमारी श्रद्धा भी अंकुरित होती है। वह मिट्टी जो गाय के खुरों से पवित्र होती है, किसान के श्रम से सींची जाती है, और आकाश की धूप से सुनहरी बनती है। जब तक हम इस मिट्टी का आदर नहीं करेंगे, तब तक कोई भी पूजा पूर्ण नहीं होगी।

इसलिए इस बार जब दीप जलाएँ, तो साथ एक वचन भी लें—कि गोवर्धन पूजा से केवल घर नहीं, मन भी उजले होंगे। श्रद्धा केवल आरती की लौ में नहीं, व्यवहार की रोशनी में भी दिखेगी। तभी हम सच्चे अर्थों में कह सकेंगे—

"गोवर्धन पूजा से श्रद्धा बढ़े, दिखावा नहीं।"

क्योंकि श्रद्धा बढ़ी तो ईश्वर अपने आप हमारे भीतर उतर आएगा, और शायद तब हमें किसी गोवर्धन की ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी—क्योंकि हर मन स्वयं पर्वत बन जाएगा।

मध्य प्रदेश में अब मुख्य सचिव तक पहुंचेंगी सीएम हेल्पलाइन की पेंडिंग शिकायतें

परिवहन विशेष न्यूज

भोपाल। मुख्यमंत्री (सीएम) हेल्पलाइन की लंबित शिकायतों का शीघ्र समाधान हो, इसके लिए अब संबंधित विभाग के अधिकारी के अलावा लंबित शिकायतें मुख्य सचिव तक पहुंचेंगी। मध्य प्रदेश सरकार एल-4 के बाद अब एल-5 स्तर को भी जोड़ने जा रही है। यहां मुख्य सचिव और अपर मुख्य सचिव की निगरानी में लंबित शिकायतों का समाधान होगा।

एल-1 यानी पहले स्तर के अधिकारी को जवाबदेह बनाने के लिए कार्रवाई विवरण भरने के कालम में संबंधित अधिकारी के हस्ताक्षर अनिवार्य होंगे। इसके अलावा अन्य स्तर पर भी अधिकारियों द्वारा हस्ताक्षर करने का नियम लागू किया जाएगा। सीएम हेल्पलाइन-181 में दर्ज समस्याओं के समाधान में लगातार देरी के बीच राज्य सरकार इसमें यह महत्वपूर्ण बदलाव करने जा रही है।

फोर्स क्लोज करने से पहले शिकायतकर्ता को बताना होगा कारण-:

शिकायतों के निराकरण के लिए एल-1, एल-2, एल-3 व एल-4 हैं। एल-1 से एल-3 तक निराकरण नहीं होता है तो वह एल-4 पर जाती हैं। यहां फिर भी लंबित रहती हैं या उसे फोर्स क्लोज कर दिया जाता है। अब ऐसा करने से पहले एल-5 लेबल पर मुख्य सचिव या अपर मुख्य सचिव भी शिकायतों का समाधान करेंगे। इसके अलावा शिकायतकर्ता को यह भी बताना होगा कि उसकी शिकायत को फोर्स क्लोज क्यों किया जा रहा है।

गुजरात मॉडल पर होगा काम-:

यह पूरी व्यवस्था गुजरात मॉडल पर होगी। इसके लिए मप्र सरकार के अधिकारियों का एक दल गुजरात भेजा गया था। यहां दल ने गुजरात की सीएम हेल्पलाइन की कार्यप्रणाली और निराकरण करने के तरीके व मानीटरिंग सिस्टम को समझा। गुजरात से आए दल ने मध्य प्रदेश की सीएम हेल्पलाइन की विशेषताओं और खामियों का अध्ययन कर रिपोर्ट पेश की थी। इसमें बताया गया कि एल-1 स्तर पर उचित जिम्मेदारी नहीं होने से शिकायतों के समाधान में देरी होती है। अधिकांश कार्रवाई का विवरण कंप्यूटर आपरेटरों के भरोसे चलता है, जिसमें शिकायत का केवल प्रारंभिक ब्यौरा ही दिया जाता है। इस रिपोर्ट के आधार पर ही नई व्यवस्था की जा रही है।

यह कार्रवाई अभी प्रस्तावित है-:

गुजरात मॉडल की तर्ज पर मध्य प्रदेश में सीएम हेल्पलाइन की लंबित शिकायतें के निराकरण के लिए एल-5 स्तर को जोड़ा जा रहा है, इसमें मुख्य सचिव तक शिकायतें भेजी जाएगी। यह कार्रवाई अभी प्रस्तावित है, शासन से अनुमति मिलने पर लागू करेंगे। - संदीप आष्ठाना, अवर सचिव, मुख्यमंत्री सचिवालय

पुलिस की गोली से शहीद छात्र नेता अजीत व धनंजय महतो को दी गयी श्रृद्धांजलि

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

सरायकेला, सरायकेला खरसावां जिला के अंतर्गत चांडिल अनुमंडल, तत्कालीन बिहार राज्य में में 1982 को छात्र युवा मोर्चा के बैनर तले तीन दिवसीय धरना प्रदर्शन के दौरान पुलिस की गोली से शहीद हुए छात्र नेता अजीत, धनंजय महतो को आज चांडिल में घटना की वार्षिकी पर भावभीनी श्रद्धांजलि दी गयी ।

आज शहीद फौजी धनंजय महतो के 43 वीं शहादत दिवस के उपलक्ष में सिरूम सहित चौक के बेदी पर शहीद स्मारक समिति कुकड़ू सिरुम के अध्यक्ष सह झारखंड आंदोलनकारी सुनील कुमार महतो एवं समिति के संरक्षक मधुश्री महतो के अगुवाई में सैकड़ो समर्थकों के साथ शहीद धन्नजय महतो ने श्रद्धांजलि दी । जहां बारी महतो एवं पुत्र उपेंद्र नाथ महतो उपस्थित थे ।इसके साथ ईचागढ़ विधानसभा क्षेत्र के शहीद स्थल तिरुलडीह एवं शहीद बेदी सिरुम से शहीद स्थल तिरुलडीह में मोटरसाइकिल की जुलूस भी निकाली गयी । ।

इस अवसर पर झारखंड आंदोलनकारी सुनील

कुमार महतो ने कहा कि तत्कालीन क्षेत्र के विभिन्न समस्याओं के लिए तीन दिवसीय चांडिल नीमडीह एवं ईचागढ़ प्रखंड में तीन दिवसीय धरना प्रदर्शन कार्यक्रम के अंतिम दिन प्रखंड कार्यालय तिरुलडीह पुलिस की निर्मम गोली से निर्दोष छात्रों की हत्या कर दी गयी थी। तब से वे इस समिति द्वारा श्रद्धांजलि कार्यक्रम करते आ रहे हैं । आज की कार्यक्रम में मुख्य रूप से पंचानन महतो गंगाधर महतो कृष्ण पद महतो आशीष कुमार महतो आशीष कुमार पुलकेश अमित कुमार संजय महतो सौरभ कुमार महतो जितेंद्र नाथ महतो महतो आदि मुख्य रूप से शामिल थे।

झारखंड के मेडिकल, बीडीएस, होमियोपैथी कालेजों में अब भी 319 सीटें रिक्त

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, राज्य के मेडिकल, बीडीएस तथा होमियोपैथी कॉलेजों में दो राउंड की काउंसलिंग के बाद 319 सीटें रिक्त रह गई हैं। इनमें जमशेदपुर स्थित एमजीएम मेडिकल कॉलेज में बढ़ाई गई सीटें भी सम्मिलित हैं। अब इन सीटों को भरने के लिए तीसरी काउंसलिंग होगी, जिसका झारखंड संयुक्त प्रवेश प्रतियोगिता परीक्षा पर्षद ने संशोधित कार्यक्रम जारी कर दिया है इसके तहत काउंसलिंग में भाग ले रहे अभ्यर्थी 24 अक्टूबर तक संस्थानों का विकल्प ऑनलाइन भर सकेंगे। 25 अक्टूबर तक इसमें संशोधन किया जा सकेगा। पर्षद द्वारा 27 अक्टूबर से एक नवंबर तक सीटों का आवंटन किया जाएगा तथा 28 अक्टूबर से एक नवंबर तक संबंधित संस्थानों में नामांकन होगा। जिन रिक्त सीटों को भरने के लिए काउंसलिंग होगी, उनमें रांची के रिम्स की भी छह सीटें सम्मिलित हैं। एमजीएम मेडिकल कलेज, जमशेदपुर में पांच सीटें पूर्व दो काउंसलिंग के बाद रिक्त रह गई है, जबकि 50 सीटें भरी हैं। इन 50 सीटों में 42 सीटों पर राज्य कोटे तथा शेष अखिल भारतीय तथा एनआरआई कोटे से नामांकन होगा। राज्य कोटे की रिक्त सीटों में धनबाद स्थित शहीद निर्मल महतो मेडिकल कॉलेज में दो, हजारीबाग स्थित शेख भिखारी मेडिकल कॉलेज में पांच, दुमका स्थित फूलो झानो मेडिकल में चार, पलामू स्थित मेदिनीराय मेडिकल कॉलेज में तीन सीटें रिक्त रह गई हैं।

पटेल की 150वीं पुण्य तिथी पर जन भागीदारी से राष्ट्र निर्माण संकल्प चरितार्थ पदयात्रा

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

जमशेदपुर, पूर्वी सिंहभूम के सांसद विद्युत वरण महतो ने रविवार को बिस्टुपुर स्थित सांसद कार्यालय में प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए कहा कि युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय, के माध्यम से विकसित भारत पदयात्राएं आयोजित कर रहा है, जिसका उद्देश्य युवाओं में राष्ट्रीय गौरव की भावना जगाना, समाज के प्रति जिम्मेदारी बढ़ाना और देश की एकता को और मजबूत बनाना है. यह पहल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के "जन भागीदारी से राष्ट्र निर्माण" के विजन से प्रेरित है. प्रेस

वार्ता के दौरान भाजपा जमशेदपुर महानगर अध्यक्ष सुधांशु ओझा, जिला उपाध्यक्ष सह अभियान के जिला संयोजक संजीव सिन्हा, सह संयोजक अमरजीत सिंह राजा एवं कृष्णकांत राय मौजूद रहे। उन्होंने बताया कि लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की 150वीं जयंती को लेकर 31 अक्टूबर से 25 नवंबर तक कार्यक्रम का आयोजन होगा. इस अवसर पर हर जमशेदपुर संसदीय क्षेत्र में पदयात्रा का आयोजन किया जायेगा. सांसद विद्युत वरण महतो ने कहा कि यूनिटी मार्च के तहत आयोजित पदयात्रा में सभी समाज के लोगों को शामिल किया जायेगा. सभी यात्राओं का नेतृत्व भाजपा सांसद करेंगे, जिन जिलों में भाजपा के सांसद नहीं होंगे, वहां राज्यसभा के सांसदों को जिम्मेदारी सौंपी जायेगी.

झारखंड के गोड्डा में कमजोर आदिवासी बच्चों के ऊपर गिरा पानी टंकी, दो की दर्दनाक मौत

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

झारखंड के गोड्डा जिले से कमजोर आदिवासी समूह (पीभीटीजी) के दो बच्चों की मौत का मामला सामने आया है। दोनों बच्चे कंक्रीट की पानी की टंकी के नीचे नहा रहे थे। तभी देखते ही देखते टंकी नीचे गिरी और दो बच्चों की मौत हो गई। एक अधिकारी ने जानकारी दी कि इस हादसे में तीन अन्य लोग भी घायल हो गए हैं। यह घटना सुंदर पहाड़ी पुलिस स्टेशन इलाके के दाहुबेड़ा गांव में हुई।घायल बच्चे के रिश्तेदार बैजनाथ पहाड़िया ने बताया कि गांव की पानी की टंकी ओवरफ्लो हो रही थी और पांचों बच्चे पाइप से बहते पानी में नहा रहे थे। पहाड़िया ने बताया, "अचानक कंक्रीट की टंकी टूटकर बच्चों पर गिर गई। तीन बच्चे मलबे में दब गए। मलबा हटा दिया गया लेकिन उनमें से दो की मौत हो गई।"अधिकारी ने बताया कि पांच से नौ साल के सभी पांच बच्चों को गोड्डा के सदर अस्पताल

ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उनमें से दो को मृत घोषित कर दिया। गोड्डा की डिप्टी कमिश्नर अंजलि यादव ने कहा, "एक बच्चे की हालत गंभीर बताई जा रही है और बच्चे को बिहार के भागलपुर के एक अस्पताल में रेफर कर दिया गया है।

उन्होंने कहा कि घटना की जांच की जाएगी। पुलिस के मुताबिक, प्रशासन घायलों को मेडिकल सुविधाएं दे रहा है। उन्होंने बताया कि सभी पांच बच्चे पहाड़िया जनजाति के हैं, जो एक बहुत ही कमजोर आदिवासी ग्रुप है। मामले की जांच चल रही है। पुलिस ने कहा, इस हादसे के लिए जिम्मेदार लोगों पर एक्शन लिया जाएगा।कमजोर आदिवासी समूह (पीभीटीजी) भारत सरकार द्वारा ऐसे आदिवासी समुदायों के लिए इस्तेमाल किया गया वर्गीकरण है, जो अत्यंत पिछड़े और विकास की मुख्यधारा से सबसे अधिक कटे हुए हैं। पीभीटीजी का पूरा नाम Particularly Vulnerable Tribal Groups है। भारत में कुल 75 पीभीटीजी समुदाय हैं, जो 18 राज्यों और एक केंद्रशासित प्रदेश में रहते हैं। इन समूहों की पहचान कम जनसंख्या, बेहद धीमी आबादी वृद्धि, पारंपरिक जीवनशैली, कम साक्षरता और कुपोषण जैसी समस्याओं के आधार पर की गई है।

झारखंड मुक्ति मोर्चा नहीं लड़ेंगी बिहार में चुनाव: सुदिव्य कुमार, मंत्री - झारखंड

गठबंधन का धर्म पालन नहीं किया, कांग्रेस – आरजेडी ने हमें हमें धोखा दिया । झारखंड में होगी गठबंधन धर्म पर समीक्षा

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, आजादी के बाद जय पाल सिंह के बाद एकीकृत बिहार के समय पुनः गठित झारखंड पार्टी उस विचार धारा को लेकर बनी झारखंड मुक्ति मोर्चा जिसने सन 2000 में बिहार से पृथक कर झारखंड बनाया आज उस

झारखंड मुक्ति मोर्चा (जे एम एम) बिहार विधानसभा चुनाव से बाहर हो गई है. झारखंड के मंत्री सुदिव्य कुमार सोनू ने इसकी जानकारी दी है. उन्होंने महागठबंधन के प्रमुख दल कांग्रेस और आरजेडी पर धोखा देने का आरोप लगाया है. मंत्री ने कहा कि झामुमो इसका बदला जरूर लेगी. उन्होंने कहा कि पार्टी अब न तो बिहार विधानसभा चुनाव लड़ेगी और न ही महागठबंधन के किसी भी प्रत्याशी के प्रचार में भाग लेगी. .झारखंड की हेमंत सोरेन सरकार में मंत्री सुदिव्य कुमार सोनू ने सोमवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान कहा कि बिहार में कांग्रेस और राजद ने गठबंधन धर्म का पालन नहीं किया. इन दोनों दलों ने उनके साथ राजनीतिक चालबाजी कर चुनावी मैदान में उतरने से रोका है. यह जेएमएम का नहीं, बल्कि झारखंड की जनता और आदिवासी जनता का अपमान है. उन्होंने कांग्रेस और राजद पर कांग्रेस पर राजनीतिक धोखा और अपमान करने का आरोप लगाया है.

मंत्री सुदिव्य कुमार सोनू ने झारखंड में सीएम हेमंत सोरेन ने आरेजेडी को सम्मान दिया था. उनकी पार्टी के विधायक को अपनी सरकार में मंत्री बनाया है. आरजेडी को हर सम्मान से नवाजा गया, लेकिन उन्हें इसका सिला नहीं मिला. राजद ने बिहार में उन्हें न तो सम्मान दिया और न ही उचित सीटें दी गईं. उन्होंने आरोप लगाया कि राष्ट्रीय जनता दल (आर जे डी) ने जानबूझकर जेएमएम को चुनाव से दूर रखने के लिए चाल चली है.

मंत्री ने कहा कि 2019 में राष्ट्रीय जनता दल का झारखंड में एक ही विधायक था, फिर भी हमने उसे सम्मान दिया. आज चार विधायक होने के बाद भी उन्हें सरकार में जगह दी गई. इसके बाद भी उनके साथ राजद ने इस तरह बर्ताव किया. राजद ने बड़े ही शातिर तरीके से झारखंड मुक्ति मोर्चा को बिहार विधानसभा चुनाव से बाहर होने पर मजबूर किया है. आने वाले दिनों में राजद को इसकी राजनीतिक कीमत चुकानी होगी.

जेएमएम के बिहार विधानसभा चुनाव से बाहर होने के बाद महागठबंधन में दरार एक बड़ी दरार पड़ गई है. इस पर मंत्री सुदिव्य कुमार सोनू ने स्पष्ट कहा कि अब पार्टी बिहार में महागठबंधन से अलग होकर अपनी राजनीतिक रणनीति बनाएगी. उन्होंने कहा कि झारखंड में भी गठबंधन पर दोबारा समीक्षा की जाएगी. यह दोहरी नीति अब नहीं

चलेगी. एक तरफ झारखंड में हमारी ताकत से सरकार चले और दूसरी तरफ बिहार में हमें धोखा दिया जाए. अब यह स्वीकार नहीं किया जाएगा. बिहार में धोखा देने वालों को भविष्य में इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा.

बिहार विधानसभा चुनाव में झामुमो के इस फैसले ने राजनीतिक गलियारों में हलचल मचा दी है, क्योंकि पार्टी ने मात्र दो दिन पहले अपने केंद्रीय महासचिव और प्रवक्ता सुप्रियो भट्टाचार्य के माध्यम से 6 सीटों पर अकेले चुनाव लड़ने का ऐलान किया था. फिर आज निर्णय बदला।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023